सांस्कृतिक छवि के अँजुरी भर गीत

लोरी प्रभाती

शम्भूदयाल सक्सेना

मुक्तवाणी प्रकाशन
बीकानेर

प्रकाशक
मुक्तवाणी प्रकाशन
बीकानेर

प्रथम संस्करण, जनवरी १९७५
मूल्य २१ रुपये

मुद्रक
शिक्षा भारती प्रेस,
बीकानेर

सास्कृतिक छवि के अँजुरी भर गीत

लोरी प्रभाती

सूचनिका

लोरी खड

प्रभाती खड

पालना खंड

गृहगुञ्जन खंड

प्रस्तावना

इस मान्यता में न कोई अतिशयोक्ति है न विकृति कि लोरी शिशु के साथ ही जन्मी थी। वह सनातन भाषा की स्वर लहरी है। हर देश हर जाति का शिशु मातृत्व के अमृत को मा बहनों की लोरी के माध्यम से पीता आया है। यदि मा का दूध उसके शरीर को स्वास्थ्य सौष्ठव प्रदान करता है तो उसी का भावविभोर संगीत दुनिया के वातावरण की श्रमशीलता को हरता, उसे सुखमय निद्रा की गोद में सुलाता है। नये प्रभात, नई शक्ति, नई स्फूर्ति नई प्रेरणा के लिए उसे तयार करता है। दुनियां की कोई भी जाति, वह सभ्यता के किसी भी सोपान पर हो, मातृत्व की इस ममतामयी तन्मय स्वर साधना से पूर्णत वंचित नहीं मिलेगी यदि मिले तो उसे अभागी कहना ही अधिक उपयुक्त होगा।

यह अत्यन्त स्वाभाविक है कि हर देश व हर जाति की माता कुछ इस प्रकार के अनुभव से गुजरे, कुछ ऐसा ही महसूस करे तथा इसी प्रकार भावाकुल आचरण करे जब उसका छोटा सा छौना उसके आगन मे उठ चलने के प्रारम्भिक प्रयत्न में लटपटा कर गिर गिर पड़ता हो—

ठुमुकि चलत रामचन्द्र
बाजत पैजनिया,
किलकिलात उठत धाय
गिरत भूमि लटपटाय,
झपटि मातु गोद लेति
दसरथ की रनिया

इस प्रकार के भावचित्रों पर किसी का इजारा नही है। ये तो साव

मौमिक सपदा हैं। यह निश्चय ही हमारे लिए गव की बात है कि वे हमें अपने कवियो की घरोहर के रूप में प्राप्त हुए हो।

इसी तरह प्रात काल नींद की सुखद गोद मे सोये शिशु के लिए मा की ममतामयी प्रभाती शब्दो म भिन्न भले ही हो किसी भी जाति मे दुलभ शायद नही होगी। बच्चे के लीला लालित्य को आँखों में सँजो रखने की अभिलाषा से भरी हुई हर माता इसी भाति क्या मनुहार करना नहीं चाहेगी—

> प्रात समय में जसुमति मया
> अपने लाल जगाये री
> उठो लाल जी भोर भयो है
> सतन दसन आये री

यह और बात है कि वह 'सतन दर्सन आये री' की जगह अपनी सस्कृति के अनुरूप किसी अन्य उपादान के प्रति सकेत करे जसे वह कह दे 'कुकुट बोल सुनाये री अथवा इसी तरह के किसी और भावरूप को स्वर दे। अथवा आधुनिक कवि की सूझबूझ को स्वर सगीत में बांधे और कौए, बतखें मेंढको के बहाने से बच्चे की नींद को प्रात काल प्रभाती गाकर जगाने का उपक्रम करे और पत जी के शब्दों में यो गुनगुनाये—

> कहा मढा लाये सोने से अपनी चोंचें
> प्यारे कौए यारे कौए
> कहां मढा लाये सोने से अपनी चोंचें
> पौ फट गई, सुनहला युग क्षण,—आओ सोचें ?
>
> कहा जडा लाई हीरो से अपनी पाखें
> *गोरी बतखें भोरी बतखें*
> कहां जडा लाई हीरों से अपनी पाखें
> नई दृष्टि यह, पाप पुण्य फल ?—खोलो आखें !
>
> कहा गन्ना लाये कठों में वीणा के स्वर
> पीत हरे मटमले मेंढक
> कहा गढा लाये कण्ठो में वीणा के स्वर—
> प्रेम तत्व यह सृजनातुर अगजग का अतर

लोरी और हिंदी कवि

विश्व साहित्य में ऐसे कवि और काव्य दुर्लभ नहीं जिन्होंने साहित्य के आकाश को छा लिया है, काल के व्याल से डसे जाने का जिन्हें भय नहीं है जीवन के व्यापक भाव प्रभाव को अपनी प्रकाड गम्भीर छाया में जिन्होंने शरण दी है, परन्तु उपवन के एकान्त कोने मे सहज भाव से थोडी सी जगह घेर कर काव्य के जो छोटे छोटे पौधे कभी कभी उग आते हैं वे भी अपना निराला स्थान रखते हैं। उनके प्रति उपेक्षा दिखाने से काम नहीं चलता। सिक्ता के ढेर में स्वर्ण कणो की भांति उनकी शोभा की दुनियाँ क्षुद्र परन्तु रमणीय होती है। काव्य की सज्ञा से उन्हें अभिहित करने मे कोई दोष नही होता। इस सास्कृतिक रचना के सम्बन्ध में यही कुछ कहा जा सकता है। इसमें भारतीय घर के सीमित वृत्त को लिया है और वहीं घूम फिर कर सहज सरल भाव से विविध दृश्यों को काव्य के परिधान में प्रस्तुत किया है। मा, मुन्ना मुन्नी और प्रकृति का पावन सयोग इस रचना को प्राणवान बनाने में तन्मय हुए हैं ऐसी कुछ लोगों की राय है। शैशव का मा के अचल की छाया म नाना रूपों मे अभिव्यंजित किया गया है। इतने व्यापक रूप में वात्सल्य भाव को लेकर कोई कवि रमे हो ऐसे उदाहरण कम ही मिलेंगे।

प्रत्येक साहित्य में ऐसे कवि मिल जायेंगे जिन्होने लोरी प्रभाती के मिस प्रसगवशात् वात्सल्य भावना से छलकते कुछ गीत गाये हों और उनके द्वारा अपने काव्य के विस्तृत चित्रपट पर कुछ हल्की ममतामयी रगीनियाँ छिड़क दी हों पर तु किसी ने भी उसे ऐसा व्यापक रूप शायद ही दिया हो। सूर और अन्यान्य कवियों ने इसे यत्र तत्र स्पर्श भर किया है और बचपन के सहज माधुर्य के प्रति अपना अर्घ्य समर्पित करने की परम्परा निभाई है परन्तु इस एक ही विषय को अपने काव्य का आधार बना लेने की प्रवृत्ति की आशा उनसे कैसे की जा सकती है? उनके काव्य क्षितिजो के बीच जीवन का व्यापक प्रवाह बहता है वे एक ही जग अटक जाते तो पथ भ्रष्ट होकर कही के न रहते। इसी हेतु लोरी और प्रभाती' के अछूते क्षेत्र म इसके कवि को एक प्रकार से निर्द्वन्द विचरण का अवकाश मिल सका है। इससे उसने पर्याप्त लाभ उठाया है। शैशव की मधुरता मा के वात्सल्य और घरेलू वातावरण के अमृत कुण्ड में जी भर कर डुबकिया लगाने का सौभाग्य पाने के लिए वह उन सबका ऋणी है। विषय सीमित है परन्तु वह इतनी तरह से इतनी तन्मयता से विविध

भौमिक सपदा हैं। यह निश्चय ही हमारे लिए गर्व की बात है कि वे हमें अपने कवियो की धरोहर के रूप में प्राप्त हुए हों।

इसी तरह प्रात काल नीद की सुखद गोद मे सोये शिशु के लिए मा की ममतामयी प्रभाती शब्दो मे भिन्न भले ही हो किसी भी जाति में दुर्लभ शायद नही होगी। बच्चे के लीला लालित्य को आँखों में सँजो रखने की अभिलाषा से भरी हुई हर माता इसी भाति क्या मनुहार करना नहीं चाहेगी—

प्रात समय में जसुमति मया
अपने लाल जगाये री
उठो लाल जी भोर भयो है
सतन दसन आये री

यह और बात है कि वह 'सतन दसन आये री' की जगह अपनी सस्कृति के अनुरूप किसी अ य उपादान के प्रति सकेत करे जैसे वह कह दे 'कुकुकुट बोल सुनाये री' अथवा इसी तरह के किसी और भावरूप को स्वर दे। अथवा आधुनिक कवि की सूझबूझ को स्वर सगीत में बांधे और कौए, बतखें मेंढकों के बहाने से बच्चे की नीद को प्रात काल प्रभाती गाकर जगाने का उपक्रम करे और पत जी के शब्दो में यो गुनगुनाये—

कहा मढा लाये सोने से अपनी चोचें
प्यारे कौए यारे कौए
कहा मढा लाये सोने से अपनी चोचें
पौ फट गई, सुनहला युग क्षण —आओ सोचें !

कहा जडा लाई हीरो से अपनी पाखें
गोरी बतखें भोरी बतखें
कहा जडा लाई हीरों से अपनी पाखें
नई दृष्टि यह पाप पुण्य फल ?—खोलो आखें !

कहा गढा लाये कठों मे वीणा के स्वर
पीत हरे मटमले मेढक
कहा गढा लाये कण्ठा मे वीणा के स्वर—
प्रेम तत्व यह सृजनातुर अगजग का अतर

विश्व साहित्य में ऐसे कवि और काव्य दुर्लभ नहीं जिन्होंने साहित्य के आकाश को छा लिया है, काल के ब्याल से डसे जाने का जिन्हें भय नहीं है जीवन के व्यापक भाव अभाव को अपनी प्रकांड गम्भीर छाया में जिन्होंने शरण दी है, परन्तु उपवन के एकान्त कोने में सहज भाव से थोड़ी सी जगह घेर कर काव्य के जो छोटे छोटे पौधे कभी कभी उग आते हैं वे भी अपना निराला स्थान रखते हैं। उनके प्रति उपेक्षा दिखाने से काम नहीं चलता। सिकता के ढेर में स्वर्ण कणों की भाँति उनकी शोभा की दुनियाँ क्षुद्र परन्तु रमणीय होती है। काव्य की संज्ञा से उन्हें अभिहित करने में कोई दोष नहीं होता। इस सांस्कृतिक रचना के सम्बन्ध में यही कुछ कहा जा सकता है। इसमें भारतीय घर के सीमित वृत्त को लिया है और वहीं घूम फिर कर सहज सरल भाव से विविध दृश्यों को काव्य के परिधान में प्रस्तुत किया है। मा, मुन्ना मुन्नी और प्रकृति का पावन संयोग इस रचना को प्राणवान बनाने में सक्षम हुए हैं ऐसी कुछ लोगों की राय है। शैशव का मा के अंचल की छाया में नाना रूपों में अभिव्यंजित किया गया है। इतने व्यापक रूप में वात्सल्य भाव को लेकर कोई कवि रमे हों ऐसे उदाहरण कम ही मिलेंगे।

प्रत्येक साहित्य में ऐसे कवि मिल जायेंगे जिन्होंने लोरी प्रभाती के मिस प्रसंगवशात् वात्सल्य भावना से छलकते कुछ गीत गाये हों और उनके द्वारा अपने काव्य के विस्तृत चित्रपट पर कुछ हल्की ममतामयी रंगीनियां छिड़क दी हों परन्तु किसी ने भी उसे ऐसा व्यापक रूप शायद ही दिया हो। सूर और अन्यान्य कवियों ने इसे यत्र तत्र स्पर्श भर किया है और बचपन के सहज माधुर्य के प्रति अपना अर्घ्य समर्पित करने की परम्परा निभाई है परन्तु इस एक ही विषय का अपने काव्य का आधार बना लेने की प्रवृत्ति की आशा उनसे कैसे की जा सकती है? उनके काव्य क्षितिजों के बीच जीवन का व्यापक प्रवाह बहता है, वे एक ही जगह अटक जाते तो पथ भ्रष्ट होकर कहीं के न रहते। इसी हेतु लोरी और प्रभाती' के अछूते क्षेत्र में इसके कवि को एक प्रकार से निर्द्वन्द विचरण का अवकाश मिल सका है। इससे उसने पर्याप्त लाभ उठाया है। शैशव की मधुरता मा के वात्सल्य और घरेलू वातावरण के अमृत कुण्ड में जी भर कर डुबकियां लगाने का सौभाग्य पाने के लिए वह उन सबका ऋणी है। विषय सीमित है परन्तु वह इतनी तरह से, इतनी तन्मयता से विविध

भंगिमाओं के साथ व्यंजित हुआ है कि उसकी विशदता कहीं कहीं असीम और गहराई अगाध हो सकी है। पुनरुक्तता है, पर यह प्रसारने वाली, उबाने वाली नहीं। काव्य और संगीत की दृष्टि से कुछ ही रचनाएं अपने स्तर से नीचे जाती हैं और मात्र तुकबंदियों के दायरे में समाविष्ट होने योग्य हैं। इसने यह भी प्रकट कर दिया है कि सीमित लगनेवाला यह क्षेत्र भी बहुत व्यापक है।

बालजीवन के चितेरे सूरदास

सूरदास ही एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने बालजीवन के चित्रण में व्यापक तन्मयता का प्रदर्शन किया है। मातृ हृदय के दुलार की माखन मिसरी मिलने से उनका काव्य निश्चय ही बहुत अधिक मीठा हो गया है। सूर साहित्य से इस प्रकरण को वर्जित कर देने पर जो कुछ बचेगा वह सूर की कीर्ति के बहुत बड़े अंश को क्षति पहुँचायेगा इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते। सूर काव्य की मार्मिकता भव्य और अन्तर्स्पर्शिनी है, वह विशुद्ध काव्य का नमूना है वह यथार्थ की पृष्ठभूमि में कल्पना द्वारा उतारा हुआ जीवन के भाव चित्रों का एलबम है। उसमें कवि की आत्मीयता और आत्मविस्मृति दोनों मिल कर एक हो सकी हैं। काव्य में ऐसा दुर्लभ संयोग क्वचित् ही देखने को मिलता है। इसीलिए सूरकाव्योपवन में पाठक खो जाता है और उस खो जाने को अपना सौभाग्य मानता है। देखिए —

जसुमति मन अभिलाख करै।
कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वक धरै।
कब नंदहि कहि बाबा बोलै, कब जननी कहि मोहि ररै।
कब मेरो अंचरा गहि मोहन जोइ सोइ कहि मोसों झगरै।

मां की यह अभिलाषा कितनी सहज, कितनी उदात्त और कितनी हार्दिकता सम्पन्न है। वह अभिलाषा जब पूर्ण होती है तब कवि गुनगुना उठता है—

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद के आंगन बिंब पकरिबे धावत।
कबहुं निरखि हरि आपु छांह को कर सों पकरन चाहत।
बाल दसा सुख निरखि जसोदा पुनि पुनि नंद बुलावत।

अथवा

काहू चलत पग द्वै द्वै धरनी।
जो मनम अभिलाष करत ही, सो देखति नँद घरनी।
रुनुक भुनुक पगनूपुर बाज धुनि अति ही मनहरनी।
बठि जात पुनि उठत तुरत ही सो छबि जाय न बरनी।

भावचित्रो की एक रील तयार हो जाती है। वह घूमती है और कवि गाता चलता है। बाल लीला की लावण्यमयी भावी शरद की चादनी की भाति यत्र तत्र सवत्र बिखरी हुई दिखाई देती है। घर आगन बाहर भीतर कुछ भी तो उसके वरदान से विरहित नहीं है। ऐसा कौन पाहन हृदय होगा जो सूर की कविता के इस स्वाभाविक सौंदय से आह्लादित नहीं हो उठता।

शिशु कौतुक और मातृ हृदय के कितने ही अनुपम चित्र अध कवि ने हिन्दी साहित्य को प्रदान किए हैं, उनसे उनक काव्य लोक म वात्सल्य मूर्तिमान और सजीव हो उठा है। विदग्ध कवि उन सूक्ष्म शिराओ को बडी मार्मिकता से स्पन्दित करना जानता है जिससे प्रसूत सगीत भावो की मन्दाकिनी में अगणित लहरें उठाने मे समथ होता है। ऐसे चित्रों की सूर के बाल लीला प्रकरण में कमी नहीं है, यथा—

मया मैं तो चन्द खिलौना लहौं।
जहौं लोटि धरनि पर अब ही, तेरी गोद न ऐहौं।
सुरभी को पय पान न करिहौं, बेनी सिर न गुहैहौं।
ह्व हौं पूत नद बाबा को, तेरो सुत न कहैहौं।

और देखिए—

मया कबहिं बढगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पियत भइ, यह अजहू है छोटी।
तू जो कहति बल की बनी ज्यों ह्व है लाबी मोटी।
काचो दूध पियावति पचि पचि, देति न माखन रोटी।

मूर्तिमान बचपन का यह चित्र कसा स्पष्ट और सजीव है इसका अनुभव भाग्यशाली उन घरो म प्राय नित्य प्राप्त होता है जहा दो छोटे बालक

भंगिमाओं के साथ व्यंजित हुआ है कि उसकी विकलता कहीं कहीं असीम और गहराई अगाध हो गयी है। पुनरुक्तता है पर वह अखरने वाली, ऊबाने वाली नहीं। काव्य और संगीत की दृष्टि से कुछ ही रचनाएं अपने स्तर से नीचे जाती हैं और मात्र सुक्तियों के दायरे में समाविष्ट होने योग्य हैं। इसने यह भी प्रकट कर दिया है कि श्रीमिलन सम्बन्धी यह क्षेत्र भी बहुत व्यापक है।

बालजीवन के चितेरे सूरदास

सूरदास ही एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने बालजीवन के चित्रण में व्यापक तन्मयता का प्रदर्शन किया है। मातृ हृदय के दुलार की भावना मिसरी मिलने से उनका काव्य निश्चय ही बहुत अधिक मीठा हो गया है। सूर साहित्य से इस प्रकरण को वर्जित कर देने पर जो कुछ बचेगा वह सूर की कीर्ति को बहुत बड़े अंश को क्षति पहुँचायगा इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते। सूर काव्य की मार्मिकता भव्य और अन्तर्व्यापिनी है, वह विशुद्ध काव्य का नमूना है यह यथार्थ की पृष्ठभूमि में कल्पना द्वारा उतारा हुआ जीवन के भाव चित्रों का एलबम है। उसमें कवि की आत्मीयता और आत्मविस्मृति दोनों मिल कर एक हो गयी हैं। काव्य में ऐसा दुर्लभ संयोग क्वचित ही देखने को मिलता है। इसीलिए सूरकाव्योदधि में पाठक खो जाता है और उस खो जाने को अपना सौभाग्य मानता है। देखिए —

> जसुमति मन अभिलाख करै।
> कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै।
> कब नंदहि कहि बाबा बोलै, कब जननी कहि मोहि ररै।
> कब मेरो अंचरा गहि मोहन जोइ सोइ कहि मोसों झगरै।

मा की यह अभिलाषा कितनी सहज, कितनी उदात्त और कितनी हार्दिकता सम्पन्न है। वह अभिलाषा जब पूर्ण होती है तब कवि गुनगुना उठता है—

> किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
> मनिमय कनक नंद के आंगन बिंब पकरिबे धावत।
> कबहु निरखि हरि आपु छांह को कर सो पकरन चाहत।
> बाल दसा सुख निरखि जसोदा पुनि पुनि नंद बुलावत।

अथवा

काहृ चलत पग द्वै द्वै धरनी।
जो मनम अभिलाष करत ही सो देखति नँद घरनी।
रुनुक भुनुक पगनूपुर बाज धुनि अति ही मनहरनी।
बठि जात पुनि उठत तुरत ही सो छबि जाय न बरनी।

भावचित्रो की एक रील तयार हो जाती है। वह घूमती है और कवि गाता चलता है। बाल लीला की लावण्यमयी भाकी शरद की चादनी की भाति यत्र तत्र सवत्र बिखरी हुई दिखाई देती है। घर आगन बाहर भीतर कुछ भी तो उसके वरदान से विरहित नहीं है। ऐसा कौन पाहन हृदय होगा जो सूर की कविता के इस स्वाभाविक सौंदय से आह्लादित नहीं हो उठता।

शिशु कौतुक और मातृ हृदय के कितने ही अनुपम चित्र अध कवि ने हिन्दी साहित्य को प्रदान किए हैं, उनसे उनक काव्य लोक म वात्सल्य मूर्तिमान और सजीव हो उठा है। विदग्ध कवि उन सूक्ष्म शिराओ को बड़ी मार्मिकता से स्पन्दित करना जानता है जिससे प्रसूत सगीत भावो की मन्दाकिनी मे अगणित लहरें उठाने मे समथ होता है। ऐसे चित्रों की सूर के बाल लीला प्रकरण में कमी नही है, यथा—

मया मैं तो चन्द खिलौना लहौं।
जहौं लोटि धरनि पर अब ही, तेरी गोद न ऐहौं।
सुरभी को पय पान न करिहौं, बनी सिर न गुहैहौं।
ह्वै हौं पूत नद बाबा को, तेरो सुत न कहैहौं।

और देखिए—

मया कबहि बढगी चोटी।
कितो बार मोहि दूध पियत भइ, यह अजहू है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लाबी मोटी।
काचो दूध पियावति पचि पचि, देति न माखन रोटी।

मूर्तिमान बचपन का यह चित्र कसा स्पष्ट और सजीव है, इसका अनुभव भाग्यशाली उन घरा में प्राय नित्य प्राप्त होता है जहा दो छोटे बालक

अपनी माताओं के अंचल की छाया में सुखाछिपी मनते और शरारत भरे कौतुक करते हैं —

> कनक कटोरा प्रात ही दधि पिरत मिटाई।
> खेलत खात गिरावही झगरत दोउ भाई।
> अरस परस चुटिया गहैं बरजति है माई।
> महा ढीठ मानें नहीं कछु लहुर बड़ाई।

छोटाई बड़ाई में बहुत थोड़ा अन्तर होने की दशा में बच्चों में क्षण क्षण पर झगड़े की जो स्वाभाविक मनोवृत्ति होती है और शरारत तो उनका विशेषाधिकार है ही वह मां बाप की रीझखीज का कारण बनती है। वे उस सौभाग्य को दुनियां की किसी नियामत से बदलना नहीं चाहते। कवि जब इस कोटि की रचना का सुयोग प्राप्त करता है और इसे सफलतापूर्वक चित्रित कर पाता है तो उसका काव्य धन्य हो जाता है वह देशकाल की परिधि से बाहर शाश्वत समाज के हृदय को स्पन्दित करता है।

तुलसीदास और शैशव

सूर के बाद जिस कवि ने शिशु जीवन की झांकी प्रस्तुत की है वह हैं तुलसीदास। गीतावली' के बालकाड में अनेक दुर्लभ गीत हैं जो कभी भारतीय घरों मे निरन्तर मा बहनों द्वारा गाये जाते रहे हैं। सूर की बाल लीला' की भांति ही इन गीतों ने जीवन मे अपूर्व माधुर्य का सृजन किया है। सभ्यता की नई लहर ने बहुत कुछ बदल दिया है हम बहुत सी अमूल्य धरोहरों से वंचित होते जा रहे हैं परन्तु सांस्कृतिक सरिता की दिशा निरन्तर नये मोड लेती रहती है। आज जिसे भुला दिया जाता है वही कल फिर हमारी रुचि के अनुकूल हो उठता है। शिशु लीलाओं के प्रति मोह ममता पारिवारिक जीवन की सम्पत्ति है यदि समाजवादी दुनियां मे कभी परिवार की सस्था का ही लोप हो जाये और भारतीय समाज को कम्युनों में जीवन यापन करना पडे तो शायद पारिवारिक वात्सल्य का क्षेत्र बदल जाये या सकुचित हो जाये परन्तु फिलहाल इसकी सम्भावना नही है। अभी बचपन का फूल परिवार के थाले में ही खिलता है और अपनी सहज सुरभि से उसे सुवासित बनाये रहता है। उसके प्रति स्वाभाविक ललक परिवार के सदस्यों में निसर्ग की अमूल्य देन के रूप में प्राप्त है और वह किसी न किसी मात्रा मे झोपडी से लेकर महलों तक

में अपना रस बरसाती रहती है। अत तुलसीदास की काव्य सुधा की कुछ पंक्तियां पाठकों के आनन्दवर्धन की सामग्री ही प्रस्तुत करेंगी एवं अनुराग को जगायेंगी—

सोइये लाल लाडिले रघुराई
मगन मोद लिए गोद सुमित्रा बार बार बलि जाई
हो अभात अलसात तात, तेरी बान जानि मै पाई

— — —

सुख नींद कहति, आलि आइहौं
राम लखन रिपुदवन भरत सिसु करि सब सुमुख सोआइहौं

— — —

कनक रतन मय पालनो रच्यो
जननि उबटि अन्हवाइके मनि भूषन सजि लिये गोद
पौढाये पटु पालने सिसुहि निरखि मन मोद।

— — —

झूलत राम पालने सोहैं
भूरि भाग जननी जन जोहैं
किलकत निरखि बिलोल खिलौना
मनहु विनोद लरत छबि छौना

— — —

आंगन फिरत घुटुरुवनि धाये
नील जलद तनु स्याम राम सिसु
जननि निरखि मुख निकट बोलाये

— — —

छंगन मंगन अंगना खेलत चारयो भाई
ठुमुक ठुमुक पग धरनि नटनि लरखरनि सोहाई
भजनि मिलनि रूठनि तूठनि किलकनि
अवलोकनि बोलनि बरनि न जाई

— — —

छोटी छोटी गोडियां अंगुरियां छबीली छोटी
नखजोति मोती मानो कमल दलनि पर

ललित आँगन गत ठुमुक ठुमुक चल
झुनुनु झुनुनु पाय रजनि मृदु मुरार

— — —

भोर भयो जागहु रघुनंदन
ससिकर हीन छीनदुति तारे
तमचुर मुखर सुनहु मेरे प्यारे

शिशु के प्रति मातृस्नेह के अनेक चित्र तुलसीदास ने अपने ग्रथो में उकेरे है। इस सदर्भ मे उनका कृतित्व उसी तरह गौरवशाली है जिस तरह अन्य क्षेत्रो मे वे आदरणीय हैं। गति स्फूर्ति, भावभगी स्वर नाद का जसा मधुर सामजस्य तुलसी के गीतो मे है उसकी छटा ही निराली है। नाद उन गीतों म सहज साकार हो उठता है। बोली म बचपन का तोतलापन वर्ण्य परिस्थितियो को अपूर्व रूप सौन्दर्य प्रदान करता है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और बचपन

हिन्दी के राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने यशोधरा म इसी विषय पर अपनी काव्याराधना के कुछ क्षण निछावर किय हैं। उन अमूल्य गीतो मे उन्होने मातृममता का सारा रस उडेल दिया है। वे गीत काव्य साहित्य की शाश्वत सपदा बन गय हैं। माँ के प्राणो का दुर्लभ आवेग उन गीतो की स्वर लहरियो म स्पदित होता है। यशोधरा के कलेवर मे य सुन्दर गीत उसके हृदय के स्थान पर आसीन हैं। राहुल जननी का जो रूप इन गीतो मे निखरा है वह वात्सल्य वियोग और करुण रसो म डूबा हुआ है, एक बार उसका दर्शन कर लेने वाला पाठक क्या कभी उस रूप को भुला सकता है ? देखिये प्रभाती गा गा कर यशोधरा अपने बेटे को उठा रही है —

जाग दुखिनी के सुख जाग !
जागा नूतन गध पवन में
उठ तू अपने राजभवन मे
जाग उठ खग वन उपवन म ।
और खगो मे कलरव राग ।
जाग दुखिनी के सुख जाग !

रात, रात बीती वह काली,
उजियाली ले आई लाली,
लदी मोतिया से हरियाली
ले लीला शाली निज भाग।
जाग, दुखिनी के सुख जाग !

राहुल जागकर अपने स्वप्न की बात मा को बताता है—

अम्ब स्वप्न देखा है रात
लिए मेष शावक गोदी म खिला रहे है तात।
ले लो मुझको भी गोदा मे' सुन मेरी यह बात।
हँस बोले 'असमथ हुई क्या तेरी जननी, जात !

इस पर यशोधरा विचलित हो उठती है। उसके मुह से अनायास निकलता है एक मधुर करुण गीत जो मानो उस स्वप्न के प्रश्न प्रसग का कोमलतम कि तु दृढ़ उत्तर हो।

बस मै ऐसी ही निभ जाऊ।
राहुल, निज रानीपन देकर
तेरी चिर परिचर्य्या पाऊ।
तेरी जननी कहलाऊ तो
इस परवश मन को बहलाऊ।
उवटन कर नहलाऊ तुझको
खिला पिला कर पट पहनाऊ।
रीझ खीज कर रूठ मनाकर
पीडा को क्रीडा कर लाऊ।

मा यशोधरा के कण्ठ से झरती हुई यह लोरी की पत्तिया साहित्य में अमर हो गई हैं। इन्ह कोई कसे विस्मृत करता सकता है—

सो मेरे अचल धन सो !
पुष्कर सोया है निज सर मे
भ्रमर सो रहा है पुष्कर में
गु जन सोया कभी भ्रमर में

सो, मेरे गृह गुंजन सो
सो, मेरे अचल धन सो।

राहुल जननी के मृदु मधुर भाव इन पंक्तियों में गूंज रहे हैं और गूंजते ही रह जाते हैं—

यह छोटा सा छौना।
कितना उज्वल, कैसा कोमल,
क्या ही मधुर सलोना
क्यों न हसूं रोऊं गाऊं मैं
लगा मुझे यह टौना,
आयपुत्र आओ सचमुच मैं
दूंगी चन्द खिलोना

यशोधरा के मिस शाश्वत मां का हृदय इस गीत में उमड़ पड़ा है। हिंदी गीत परम्परा की यह एक अपूर्व एवं अनूठी कड़ी है—

किलक अरे मैं नेक निहारू,
इन दांतों पर मोती वारू।
पानी भर आया फूलों के मुंह में आज सबेरे
हां, गोपा का दूध जमा है राहुल मुख में तेरे,
लटपट चरण चाल अटपट सो मन भाई है मेरे
तू मेरी उंगली धर
अथवा मैं तेरा कर धारू,
इन दांतो पर मोती वारू।

श्री सुमित्रानन्दन पंत और लोरी

पंत जी ने भी मां की मोदमयी ममता का अनुभव किया है और उसे बड़े स्वाभाविक रूप में एक लोरी में व्यक्त किया है। वे मृदु सुकुमार भावव्यंजना के कवि के रूप में आदरणीय हैं उनके यश के अनुरूप ही उनकी लोरी में सतरंगी कल्पना एवं सुकोमल भावाभिव्यक्ति का मधुर समन्वय हुआ है--

लोरी गाओ, लोरी गाओ
फूल दोल में उसे झुलाओ

निंदिया की प्रिय परियो, आग्रा,
मुन्ना का मुख चूम सुलाओ !
स्वप्नो कि छाया पखों को
न ह के ऊपर सिमटाओ !

चन्द्रलोक की परियो आओ
स्मिति के सुधा अधर रग जाआ,
मलय सुरभि की चचल परियो
सासो से आचल भर लाओ !
जुगनू चमका वन की परियो
झिलमिल कर पलकें अपकाओ,
रिमझिम कर मेघों की परियो
लालन का गा हृदय रिझाओ !

मुग्ध नव जननि, बलि बलि जाओ
लाड लुटाओ प्यार लुटाओ
लोरी गाओ।

लोरी के एक और कवि श्री गिरिजा कुमार माथुर की मनोहर एव मुग्धकारी रचना भी आप गुनगुनाना पसद करेंगे। कितनी मा बहनो ने इस मधुलोरी को कितनी बार गाया और पालन मे पडे हुए अपने मुन्नो को झुलाया होगा। कहना न होगा कि हिंदी साहित्य लोरियो और प्रभातियो की गूज से उसी तरह समृद्ध है जिस प्रकार दुनिया का कोई भी अन्य साहित्य। देखिये—

रेशम रग भरी सुख निंदिया आई
चादनी की पलकें हैं भारी
कोमल वायु शिथिल उजियारी
दीप में नींद समाई।
बीच म सो गई बात की डोरी
नींद बुलान में सो गई लोरी

प्यार ने आंख झुकाई।
गालों पर सो गये ठंडे से चुम्बन
कोरों में सो रहा आंसू का अंजन
मुख पर सोई ललाई।

—श्री गिरिजाकुमार माथुर

एक अन्य कवि की प्रभाती का आस्वादन करने में पाठकों को प्रसन्नता होगी। रचना का माधुर्य निश्चय ही मनोहारी है। जननियों के हृदय में तरंगित होने वाले स्नेह दुलार को बड़ी सहृदयता से मुखर किया गया है। देखिये—

भोर हुई लो चली जुन्हाई
नभ पथ में ला सोने का रथ
सूरज ने विदा कराई
धानी अंचल में मुठ्ठी भर
शबनम की मिल गई बधाई
पाकर भी सोने के गहने
लगी चांदनी पीड़ा सहने
किरण तार की धूप चुनरिया
में गोरी काया कुम्हलाई।

—श्री राजनारायन बिसारिया

लोरी, प्रभाती की भांति ही दोल हिंडोले, झूले या पालने के गीत भी प्रचुर परिमाण में शैशव की आराधना में गाये जाते हैं। हमारे कवियों ने उनमें भी रस लिया है और लोक परम्परा को जीवित रक्खा है देखिये श्री जानकीवल्लभ शास्त्री की कुछ हृदय को गुदगुदानेवाली पंक्तियां—

पीपल की डाली झुक आ री
मैं टुक झूला झूलूंगी
देवराज गजराज गगन से
बजर उतर सोच रहा

वृन्द वर्नों का पत्र फहफहा
हौले हौल फीच रहा,
टको बुंदकिया वीरबहूटी
मलमल सी यह कोमल घास
ग्रा र भया तू कदव बन
फल पात स भर ग्राकाश
मैं सुरभित कोंपलें बिछाकर
तान तलया छू लूगी
मरा भया है कदव, मै
बहन केतकी फूलूगी।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ने अपने ग्र थ वेला फूले आधी रात' में लोरी साहित्य पर समुचित प्रकाश डाला है और उसकी महत्ता को प्रतिपादित किया है। उन्होंने भारत की अनेक भाषाओं मे स लोरियों के नमूने प्रस्तुत किये हैं और यह बताया है कि लोरी एक सार्वदेशिक साव कालिक साहित्यिक विधा है। यहा उनके वक्तव्य का कुछ अश प्रस्तुत करना अप्रसागिक न होगा।

ससार के ग्राम साहित्य में लोरिया अपना विशेष स्थान रखती है। सभ्य तथा असभ्य—सभी जातियों की माताए लोरियां गा गा कर आनन्द प्राप्त करती हैं। व यह नहीं देखती कि उनकी आवाज सुरीली है या नही उन्हें त अपने शिशुओं को रिझाने से ही मतलब रहता है। झूला हिलाती हुई, या शिशु की पीठ पर थपकिया देती हुई जब वे लोरिया गाती हैं तो उनकी रूखी तथा खुरदरी वाणी में भी अलौकिक मिठास आ जाती है।

स्पष्ट तथा सरल भाषा में सूत्ररूप से गाई हुई लोरिया किसी भी देश तथा जाति के साहित्य की आभा एव महिमा को चार चाद लगा सकती हैं। देश तथा काल के क्रम से इनकी भाषा बदलती रहती है भाव वही रहते हैं। कौशल्या ने राम के लिए जो लोरिया गाई थीं व अब भी अयोध्या की माताओं को भूली नहीं हैं। हा भाषा सस्कृत के स्थान पर हिन्दी हो गई है पर भाव वही पुराने है।

लोरियों का स्रोत कब आरम्भ हुआ यह बताना बहुत मुश्किल है। किस स्थान पर पहले पहल इनकी सृष्टि हुई, इस प्रश्न पर विचार करते

हुए बगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार डाक्टर अवनीन्द्रनाथ ठाकुर अपने एक लेख मे लिखते हैं —'कोन कालेर आलोते प्रथम फुटलो एई सब छड़ानो रकम छबि एई सब छोटो छोटो भावेर कलिकार मध्ये प्रथम एर सुर उठलो, एवम् कोन घूम त छेलेर काने आर प्राणे गिय बाजलो ता जानबार कोनो उपाय नई।" अर्थात्—"किस समय के प्रकाश में पहले पहल य सब बिखरी तसवीरों की सी लोरिया यह सब छोटे छोटे भावो की कलिया खिल उठी थी किसके कठ से पहले पहल इनके स्वर निकले थे और किस निद्रित शिशु के कान और प्राण में गूजे थे यह जानने का कोई उपाय नही है।'

लोरियो का इतिहास कितना ही पुराना तथा अज्ञात क्यो न हो इस बात से तो इन्कार नही किया जा सकता कि वे काव्य रस की कसौटी पर पूरी उतरती है। उनकी महिमा महान् है जो किसी भी देश के शिशु साहित्य मे नया जीवन प्रदान कर सकती हैं उनकी प्रतिभा अपरिमित है, जो हृदय के झरने से दिन रात झरती रहती है।

श्रीमती हेमा प्रदीपकुमार ने भारतीय लोरी साहित्य पर तुलनात्मक शोध प्रब ध प्रस्तुत कर इस विधा के महत्व को विशेष रूप से प्रतिपादित किया है। उसम बहुमूल्य सामग्री का सचयन हुआ होगा क्योकि एक महिला द्वारा जो इस विधा के मर्म को आकने और उस पर लिखने की सहज अधिकारिणी है किया गया यह प्रयास सर्वथा उनके अपने क्षेत्र की उपलब्धि है।

अपने लोरी साहित्य का परिचय स्वय देने की अपेक्षा यह उचित प्रतीत होता है कि श्री विश्वनाथ द्वारा प्रस्तुत किये गये मूल्याकन जो युग प्रभात कालिकट केरल १९६४ मे प्रकाशित हुआ था का एक अश यहा दे दू ताकि पुस्तक पढने से पूर्व पाठकों को तद्विषयक कुछ धारणा हो जाए और वे उसका समुचित रूप से रसास्वादन कर सकें। यद्यपि उस समय तक प्रकाशित गीतों में इधर बहुत कुछ नया जोडा गया है जो इस सग्रह मे प्रथम बार सकलित हुआ है।

सक्सेना जी का लोरी साहित्य (विश्वनाथ)

सक्सेना जी ने साहित्य की एक ऐसी विधा पर कलम चलायी है जिस पर प्रत्येक व्यक्ति का लिखना कठिन ही नहा वरन् असम्भव है।

श्री सकसेना ने, "मैं लोरी क्यों लिखता हू' का उत्तर दिया है। 'वह घर आगन धन्य है जिसे रुदन और किलकारी से बालक बालिकाए गु जाते रहते हैं। धूलभरे इन हीरो का असली मोल आकनेवाली हैं माताए जो अपने प्राणो का सगीत दूध की धार में इन्हे पिलाती हैं। वह सगीत सुधा पीने से ही शशव इतना सुहावना है। उस मे चन्द्रमा की छबि फूल का सौरभ केशर की सुषमा, विद्युत की छटा इसी अमृत रस से आती है। यह लोरियां उसी सगीत सुधा को अधिक मधुर बनाने के लिए रची गयी हैं।" स्पष्ट है कि लेखक लोरी को जीवन म बहुत बडा स्थान देता है। और मेरी यह मान्यता कि मा की ममता का अभाव ही सकसना जी के लोरी साहित्य का मूल सोत है और भी दृढ हो जाती है, जब सक्सना जी आगे लिखते हैं यदि इन से (लोरियो से) माताओ के सहज मधुर कठ म मिसरी की दो डलिया और घोली जा सकी तो मेरा परिश्रम धन्य हुआ और इसके साथ मेरी जो विशेष ममता है वह भी साधक हुई।

साधारणत बच्चे को सुलाते समय जादू भरी थपकियो के साथ मां स्पष्ट और अस्पष्ट भाव गुनगुनाती है उसे ही लोरी की सज्ञा दी गयी है। पर तु वस्तुत मां और बच्चे के मधु भीग सम्बन्धो से सम्बन्धित हर बात लोरी साहित्य के अन्तगत आती है। इस आधार पर सकसेना जी के सम्पूर्ण लोरी-साहित्य को साधारण रूप से हम तीन भागो में बाट सकते हैं। प्रथम तो साधारण अर्थों में जिसे लोरी कहा जाता है वह—अर्थात् नीद को निमन्त्रण, दूसरा नीद का विदाई और तीसरा बाल सुलभ प्रवृत्तियो का मार्मिक चित्रण।

नानी कहे कहानी

साझ होती नही कि मां बेटे को गोद में ले कर थपकिया देने लग जाती है तरह तरह की बातें बनाती है—दिन भर बच्चा जिस वातावरण में खेला है, उस की दुहाई दे कर वह कहती है—

सो मैया के छौना सोजा
घर के खेल खिलौना सोजा
खेतों मे हरियाली सोई
मौन साझ की लाली सोई
अम्बर बीच घनाली सोई

रो मत मेरे छौना सोजा
घर के खेल खिलौना सोजा

पर बालक की आंखों में नींद कहां ? और प्रकृति की दुहाई देने के बाद मां पालने से बच्चे को रिझाना चाहती है—

रतन जड़ाया पालना, सो जा प्यारे लालना ।

फिर दूध धुली सेज का लालच देती है

सेज बिछी है फूलो की,
तू आ जा लाल सलोने ।
कही उतर कर नभ से उस पर
चंदा लगे न सोने ।

नन्हे से मुन्ने को सुलाने के लिये मां हर सम्भव प्रयत्न करती है । चरखे और चक्की के स्वरो से उसे सोने की प्रेरणा देने का प्रयास करती है—

चरखा गाये सोजा लाला
चक्की गाये सोजा लाला ।
दही मथानी समस्वर होकर,
तुझे सुलाए सोजा लाला ।

पर आखिर बच्चा ही तो है । इतनी जल्दी कहना क्या मान जाए ? साझ आगे बढ जाती है, और रात धीरे धीरे पर पसारने लगती है—

सो जा सुता सुनयना मेरी
रात बहुत चढ आई
मलिन हो चली चारु चांदनी
फूलो के मन भाई
पलने मे लो पर पसारो
नानी कहे कहानी
झाकों के संग ऊ-ऊ करती
सो जा बिटिया रानी

मां के इतने लाड प्यार और मनुहार बच्चे पर कोई प्रभाव नही डालते और बेटा खिझिया कर कहता है—

खारी नीद न मुझे सुहाये
चिकुटी काटे खटिया
थप थप करने को जी हुलसे
गीली गीली पटिया
रहने दे तू दूध बताशा
लट्टुआ मेरा ला दे
मैया मुझे छोड दे
जीजी को तू थपक सुला दे

अथवा

मुझको सेज न भाती तेरी
धरती मुझे सुहाती
फिर तू क्यो कर रार खीचती
मैया पकड सुलाती

तो बेचारी मा हार कर नीद को आवाज लगाती है, और यहीं आ कर सकसेना जी की ममता और कवित्व श्रेष्ठता के ऊचे शिखर पर बठे दिखाई देते हैं—

ओ री निंदिया आ री निंदिया
सपने भर भर ला री निंदिया
ओ मधु निंदिया, ओ मधु निंदिया
सध्या के हाथो की मेंहदी
अपने हाथो में सरसा तू
उषा के होठो की लाली को
अपने होठो पर धर ला तू

सपनों की सौगात और सन्ध्या के हाथों की मेहदी ही पर्याप्त नहीं है। मा नीद के परो पडती है कि वह आकर उसके लाल को सुला जाए। ओ री निंदिया, आ री" की यह लोरी सभवता सग्रह की सर्वोत्तम लोरी

है। यद्यपि भाषा की सरलता और शब्दों की सुकुमारता इस सम्पूर्ण लोरी माला की अपनी विशेषता है तथापि इस लोरी में तो यह विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है। कितना सजीव एव मार्मिक चित्रण है भावनाओं का—

पलको के पलने म निंदिया
झुला लाल को मेरे
झुला रात भर गा गा लोरी
पया परसू तेरे
नभ सर में जब तक तिरते हो
तारे कुसुम सजीले
रख तू तब तक कठ सुरीले
ओठ गीत से गीले
भोर भये राजा भया के
गालो पर मल लाली
सौंप उषा को जाना निज घर
सपनो की रखवाली

आखिर माँ जीत जाती है। हारे शिशु के मुह से बरबस ही निकल पड़ता है—

मीठी मीठी थपकी माँ की
मधु की भरी कटोरी
माँ तेरे हाथो मे मधु है
मेंहदी व्यथ रचाती
तेरे हाथों की थपकी से
मीठी निंदिया आती

उसे माँ की लोरी और मीठी निंदिया दोनों ही जादू भरी लगती हैं और यह स्वाभाविक ही है। सचमुच यह आश्चयजनक ही तो है कि माँ थपकियां दे कुछ गुनगुनाए और नींद आ जाए! नन्हें शिशु की इस जिज्ञासा का चित्रण बहुत ही सुन्दर ढग से किया है सक्सेना जी ने—

नींद परी घर कहा तुम्हारा
देश कौनसा रानी ?

कौन मोतियों के सागर में
फिरती हो मनमानी ?
किस जादू में बधी हुई हो
तुम मा की लोरी स ?
आ जाती हो बिना बुलाये
बिना खींचे डोरी से ?
मा की थपकी में रहती हो
कहा छिपी तुम बोलो ?

लोरी लिखी नहीं जाती

न ह शिशु की निरीहता एव भोलेपन का ऐसा ही हृदयग्राही वर्णन राष्ट्रकवि मथिलीशरण गुप्त के यशोधरा काव्य में मिलता है जब राहुल अपनी माँ से इसी प्रकार की अटपटी और प्यारी जिज्ञासाए शात करवाना चाहता है। गहन से गहन भाव को सहज से सहज भाषा में रखना द्विवेदी-युगीन साहित्य की एक प्रमुख विशेषता है और सक्सेना जी के लोरी साहित्य में इस विशेषता का समावेश न केवल द्विवेदी युगीन प्रभाव है अपितु विषय की प्राथमिक माग भी है। जैसा कि मैने पहले कहा कि लोरी लिखी नहीं जाती, यह तो मा के अ तर की सहज हूक है जो स्वयमेव ही निर्झर की तरह फूट निकलती है और शान्त सरिता की तरह बहने लगती है। साथ ही कविता की सफलता और अनुभूति की सच्चाई की कसौटी भी यही कि कही भी ऐसा प्रतीत न हो कि कवि जागरूक है। दूसरे श दो म अनुभूति की सच्चाई एक समाधि की अपेक्षा करती है। सकसेना जी के लोरी साहित्य म विषय के अनुरूप ही प्रसाद गुण ऐसा लगता है स्वयमेव ही आ गया है। कही कही तो जीवन का बहुत बडा दर्शन हमे अनायास ही देखने को मिल जाता है। यहा मै पालना के एक गीत माँ का चुबन" को अवतरित करने के लोभ का सवरण नहीं कर पा रहा हू। सचमुच इस गीत मे न केवल चुबन का बल्कि माँ बेटे के पावन सम्ब धों का सफल मनोवैज्ञानिक वर्णन किया गया है।

चुबन एक हसी जब छूटे
चुबन एक नीद जब टूटे
चुबन एक स्नान से पहले
चुबन एक न जी जब बहले

चुबन एक नमन जब गीले
चुबन एक दूध जब पीले
चुबन एक रोष मे, रस म
चुबन एक न मन हो बस में
चुबन एक वचन दो बोले
चुबन एक रूठ कर डोले
चुबन माखन मिसरी खाते
चुबन एक प्यार के नाते
चुबन एक गोद मे सोए
चुबन एक सिसक कर रोए
चुबन एक द्वार के भीतर
चुबन एक द्वार के बाहर
चुबन एक घूमते घर मे
चुबन एक लिए धर कर मे
चुबन घर से शाला जाते
चुबन एक लौट कर आते
चुबन एक झूलते झूला
चुबन एक फूल जब फूला
चुबन के अवसर बहुतेरे
खाते पीते साझ सवेरे
पल पल क्षण क्षण चुबन वाली
करती चुबन से रखवाली
जादू उस मा के चुबन मे
पागल सा कर देता छन में ।

गीत की पक्तिया—*चबन एक न जी जब बहले चुबन एक न मन जब बस में*—सहज ही हृदय आलोडित कर देती हैं ।

'*फूलो के गीत*' लोरी माला का अनूठा पुष्प है । इसमें सग्रहीत अडतीस गीत शिशु से सुकुमार फूलो (फूल से सुकुमार शिशु नही) की अपनी कथा है । मुझे ध्यान नही है कि कहीं अन्यत्र भी मैने इस विषय पर इतने प्यारे गीत पढे हों । प्रकृति का आह्वान करते समय कवि की अभिव्यक्ति कितनी सहज है—

आओ कदब, आओ तमाल

तुम मौलसिरी से प्यार करो

कितकी खिलो, रजनीगधा के

साथ साथ दुख भार हरो

और फिर जब कवि गाता है—

वे कमल कहा वे मुकुल कहा

वे गेंदा, किंशुक, सिरस कहा ?

वे बौर कहा, मजरी कहा

वह खिल उठने की हिरस कहा ?

तो युग चेतना की अलसायी हुई सासो मे गति लाने की कवि की सहज हूक स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगती है।

फूलो के गीत में सक्सेना जी की कविता कला निखर सी उठी है। इसमें उन्होने कई नवीन प्रयोग किए हैं। यथा वल्लरी के गीत' की यह पक्ति—

वह कोमल है लचकीली है

लज्जा की भाति लजीली है।

एक अन्तीय उपमा है इसी सदभ में 'मधुमाखी का गीत" की यह पक्तिया भी दृष्टव्य है—

मधुमाखी हू मैं मधुबाला।

है कुसुम कटोरी मधुशाला।

फूल को मधुशाला बताना जहां एक नवीन प्रयोग है, वहा गेंदे को कमल की क या की उपमा देना कितना मधुर लगता है—

चांद देख कर हारमाला वह

कन्याओं सा भोला।

जसा कि मैंने पहले लिखा है कि प्रभाती लोरी का ही एक अग है। अत सक्सेना जी के लोरी साहित्य का अध्ययन करते समय प्रभातियों से आंख चुरा जाना कदापि समीचीन नही होगा। सक्सेना जी के काव्य की विशेषता है कि उन्होंने विषय के अनुसार लय का चुनाव किया है और लय

के अनुरूप ही शब्दो का चयन किया। सचमुच, यह प्रभाती कितनी सजीव है—

बीत गयी रात, तात उठो
हो गया प्रभात
फूल गये फूल पात कुज किरण सारे।
उषा कपाट खोल री!
विहगिनी सबोल री!
समीर मद मद चल
खुलें खिले जुही कमल
धुल नखत पिघल पिघल।
नयी प्रभा प्रमील री।
उषा कपाट खोलरी।

अ ततोगत्वा कहना न होगा कि सक्सेना जी का लोरी साहित्य उनके काव्य का महत्व पूर्ण उपादान है।

इस पुस्तक के सबध मे —

इस पुस्तक को चार खण्डो मे विभाजित किया गया है लोरी प्रभाती पालना और गृह गु जन। वस्तुत ये चारो ही खण्ड लोरी विधा के अन्तगत आते हैं। शिशु को गीतो के माध्यम से अमृत पिलाने और उसे ससार के भावी कष्टमय जीवन सघष के लिए तयार करने मे इन गीतो का निश्चय ही बडा हाथ रहता है। इसीलिए युग युग की, जाति जाति की देश विदेश की भाषाओं और बोलियो मे इस प्रकार के गीतो की अनादि परपरा प्राप्त होती है, यह एक अनिवाय लोकविधा है। लोक गीतो की इस स्वाभाविक परम्परा को सब जगह, सब काल म समुचित महत्व प्रदान किया गया है। आज के युग मे जब असन्तोष तनाव सन्त्रास सघष से मानव जीवन दुखी एव रोगग्रस्त छटपटाहट से पूण है जब साहित्य म ऐसे ग्रन्थो की बाढ आ गई है जो लोमहषक भीतिकर कपा देन वाली घटनाओ से भरे रहते हैं तब तो इस प्रकार के शामक वाता वरण का निर्माण करने वाले आनन्ददायक साहित्य की विशेष आवश्यकता है। किसी ने इस प्रकार के साहित्य के लिए कहा भी है 'किसी जाति के लोक गीत उसके विधान से भी अधिक महत्वपूण होते हैं। जीवन के विषवृक्ष का मीठा फल चखने उसका समचित रसास्वादन करने में भारतीय लोक

जीवन विशेष रुचि रखता है यही कारण है कि अभाव विपन्नता और गरीबी मे भी वह जीवन के रस से रिक्त नहीं रहता। लोक गीतो की स्वरलहरी गांवो की झोंपड़ियो को ही अधिक गु जाती है। आज के युग में जब बहुत कुछ अस्तव्यस्त हो गया है तो भी हमारी यह परम्परागत सपदा सुरक्षित है। इसस दुख को हसते गाते सहने की शक्ति का स्रोत निरन्तर प्रवाहित होता रहता है। भावी पीढ़ियों को दुनिया की कटुता से कुछ काल के लिए प्रसन्नता के वातावरण मे सास लेने की सुविधा प्राप्त कराने में इसका विशेष हाथ रहता है।

'पत्र पुष्प खण्ड' नाम से 'फूलो के गीत की रचनाए भी इसम शामिल करने का विचार था परन्तु पुस्तक का कलेवर बढ जाने के भय से क्योकि कागज दुलभ हो गया है, उसे छोड दिया गया है और चार खण्ड देकर ही सन्तोष करना पडा है।

यद्यपि लोरियो प्रभातियो की परम्परा लोकगीतों के ही अनिकट है परन्तु इस प्रस्तावना मे साहित्यिक कवियो की रचनाओ के ही उदाहरण दिए गए हैं इसलिए कि पाठको को मालूम हो जाय, वे यह जान लें कि हमारे कवि भी उन क्षणो और परिस्थितियों से तादात्म्य रखते हैं जो सनातन मानव मन की सहज अनुभूति है और उस भावानुभूति की व्यजना में वे उतने ही सहज सरल मृदुल कोमल तन्मय एव भावविभोर हो उठते हैं। वे लोकगीतो की नसर्गिक मार्मिकता के अत्यत समीप पहुच जाते हैं जो अन्यत्र उनमें दुलभ है।

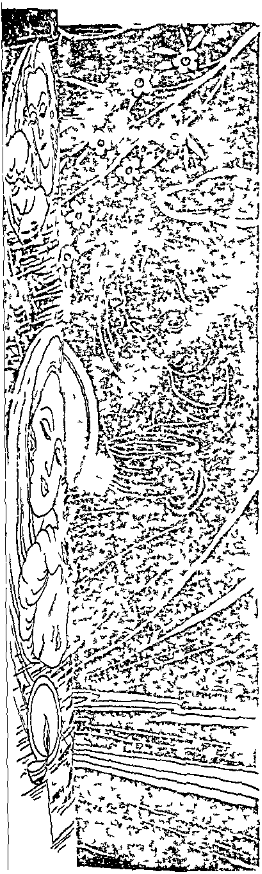
अन्त में उन कवियो और लेखको के प्रति आभार प्रकट करना आवश्यक हैं जिनकी रचनाओ के उद्धरण इस प्रस्तावना मे यत्रतत्र दिय गये है।

सास्कृतिक छबि के अजुरी भर गीत



लोरी प्रभाती





लोरी खण्ड





एक

सपना सी पलकों पर सोई
हँसी, रात अधराई।
सोई गगन कृत्तिकाएँ सब
छाया ओस नहाई।

हरसिंगार की डारें माइ
कमल कली अलसाई।
जादू सा कुछ पढ़ा रात
रानी ने लोरी गाई

जुही चमेली हिलमिल सोईं
लताकुंज अरुझाई।
बिगसी कुमुदनियों की पाँतें
अँखियन नींद भराई।

लीला दिन की ललक लाल के
रोम रोम प्रति छाई।
रैनि छुड़ाने आई उसको
नींद सुलाने आई।

* * *

दो

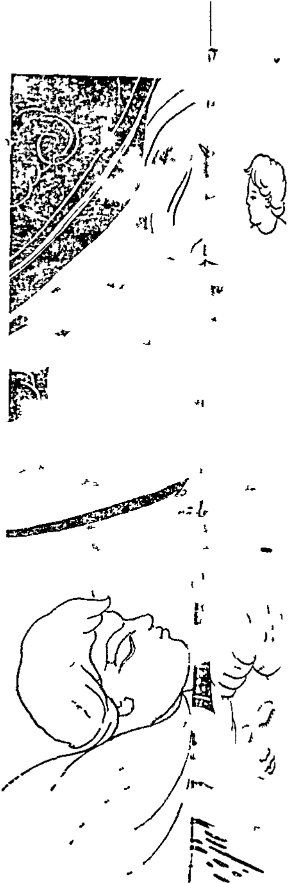
सो जा मेरी चन्द्रवदन तू
सो जा मेरी हृदय हरन तू
सो जा मेरी मंजु किरन तू
सो जा आँखों की ढरकन तू

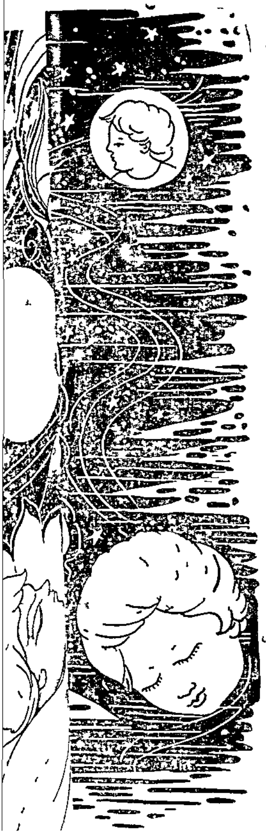
ममता की मृदु रेखा सो जा
कमल कली शशिलेखा सो जा
सो जा सपनों की ओ रानी
सो जा सो जा सुता सयानी

सोई हंसिनि मानस तीर
कुमुदनि सोई नीर गँभीर
सोई सृष्टि रैनि अँधियारी
सोने की कर ले तैयारी

बिछे सुनहर स्वप्न सजीले
मोती बिथुरे आँसू गीले
हार गूथती सो जा प्यारी
मैया की प्रिय राजदुलारी।

* * *





तीन

धीरे बहो गंगा धीरे बहो जमुना
सोता है लाल कन्हैया ।
धीरे चलो सूरज, धीरे धीरे चंदा
दूर दुरा घाम जुन्हैया ।

अम्मा न बोलो, बहना न टोलो
हिलो न पलक पल भैया ।
गैया के बछुआ कूदा न सयाने
बबुआ के आई निंदैया ।

सो रही रतिया, सो रही बतिया
सोई पवन पुरवैया ।
सोईं तरैया गगन बिच अनगिन
सो जाओ सब बनरैया ।

सो जाओ लोरी, सो जाओ भोरी
काकी न काटो कटैया ।
सपनो के बादल सो रहो अब तो
नाचो न ता ता थैया ।

चार

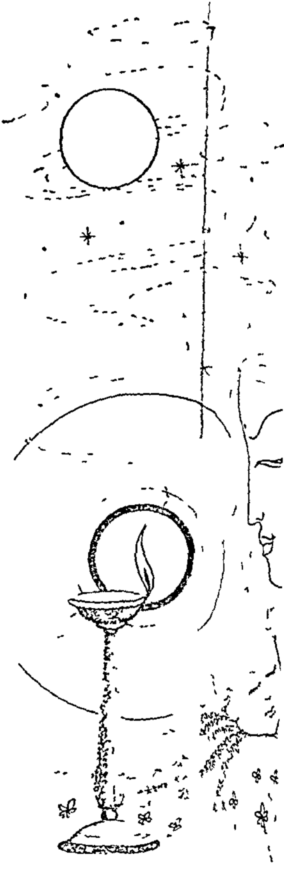
अलस उनींदी अखियाँ तुम्हारी
सो जाओ भैयन सो जाओ लालन।
चाद गगन मे फूल धग्न मे
साये हैं सुख से सो जाओ लालन।

आर करो न, धमार करो मत
मैया के मोहन, बहना के बीरन
रतिया न जागो अखियाँ उनींदी
आ जाओ रुनझुन सो जाओ लाल्लन।

ओस नहाई रात को नेने
आय अग्न के दूत मलाने
मोने मे प्रात मे दौडना खेलना
मधु भरे ढोलना फूल के दोने।

अलस उनींदी अखिया तुम्हारी
सो जाओ चुनमुन सो जाओ मुनमुन।
तर उपवन मे, फूल विजन म,
मोये है सुख से मो जाओ राजन।

* * *





पाच

छुनुन-मुनुन घर अँगना री ।
रुन झुन पायल कँगना री ।
मेरी रानी फिरें थिरकती
मुझे रात भर जगना री ।

क्या मुझको शाल-दुशाला
कुटिया है चौमहला री ।
सूनी घडियो म बिटिया से
मेरा है जी बहना री ।

मुझको नहीं चाहिए गहने,
मुझे न मानिक मोती री ।
रतन पलग है खाट पुरानी
जिस पर मैं पड सोती री ।

काठ कठौए स्वर्ण पात्र है
टाट-पटोरे रेशम री ।
उसके होठो के मधु चुम्बन
हर लेते है सौ श्रम री ।

✿ ✿ ✿

छः

पलका पर आ बसी निंदिया
स्वप्न सुमन भर झोली
जाग न जाय कुवर सांवरे
हौले हौले डोली

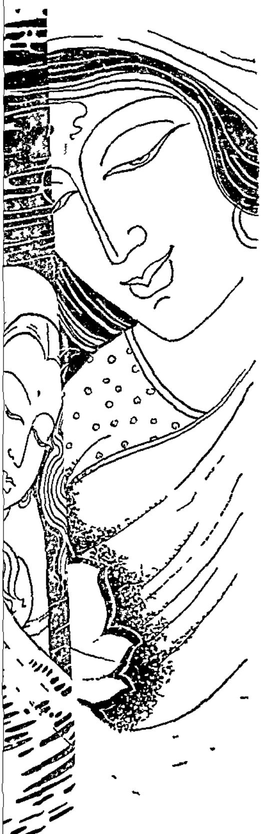
चम चम चम जुगनू चमकाये
झिलमिल झिलमिल तारे।
कुमुद सरोवर मे हलकोर
चदा चटक निहारे।

पीपल पात वात गति डोले
किरनपरी थिरकैया
ले ले नाच उठी लहरो सँग
बिहरो ताल तलैया।

सपनो की मधु रनि सुहानी
छोड न यह घर जाये
पोर पोर मे छवि अङ्कित हो
रोम रोम रच जाये !

* * *





सात

सपनों के पलने में निंदिया
सुला लाल को मेरे।
सुला रात भर जौ लौं, झलमल
डूबें नखत सवेरे।

मुंह मांगा दूंगी दधि ओदन
रत्न राशि जो मांगे।
प्राणों के धन को मेरे सखि,
रख प्राणों से आगे।

भूलूंगी एहसान न तेरा
इस जीवन में रानी।
सोने सा तू स्नेह लुटाकर
रच जा नई कहानी।

रच जा नई कहानी गा
तू लोरी युगों पुरानी।
सुन सुन मां का जी हुलसाये
भरें दृगों में पानी।

* * *

आठ

शशि किरणो का मुकुट शीश पर
नभ गगा मे माग भरी।
बनी रनि रानी अलबेली,
उर्मिल छबि छाया गहरी।

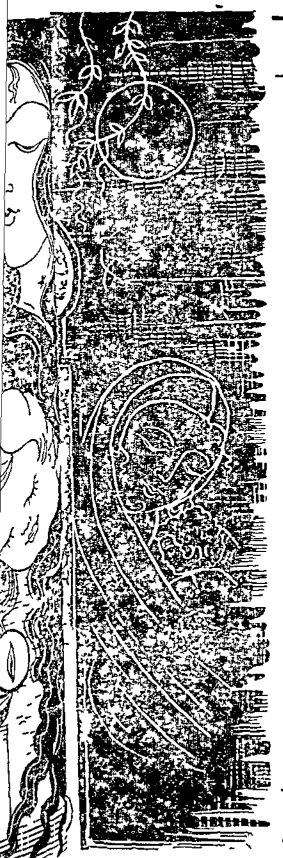
निदिया की सहचरी सुहावन
बिंदिया माथे पर साही।
तारो का अनमाल हार धर
तूने अखिल सृष्टि माही।

अँधियारी काजर कारी तू
अतुल रूप तन मे तेरे।
कुवर कान्त का प्यार लिये तू
बैठी जमुना तट हेरे।

तू एकान्त निवासिनि योगिनि,
तेरा नाम जपे लाला।
आ तू उसे सुना मधु लोरी
पहना सपनो की माला।

* * *





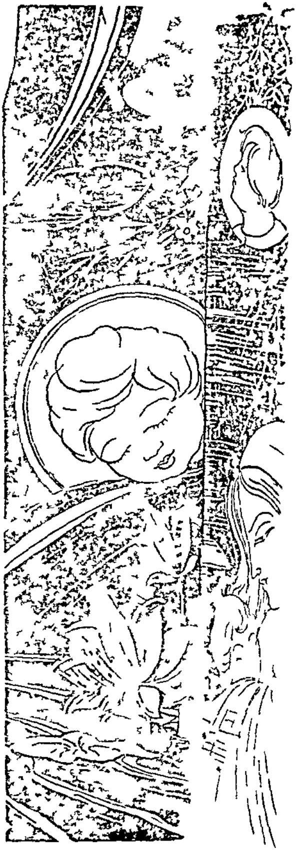
नौ

निंदिया, तू रत्नों से खेले
मेरे घर में रत्न प्रचुर हैं
कर कंचन में झेले।
आ आ उतर स्वर्ण रथ में तू
सुमुखि, लाज तज दे री।
स्मिति आनन से छूट न पाये
कुंकुम माँग भरे री।
मणि रत्नों से जड़ा पालना
किलक पुलक सुख ले री।
भाग सुहाग माँग विधि से किन
जीवन साथ करे री।
निंदिया तुझसे जुड़ें नयन दो
सुख छवि सिन्धु नहाये।
लोरी में मधु गीत फूटकर
श्रवण कुहर में आये।
नई सृष्टि रच दे तू लेकर
विविध स्वप्न रँग तूली।
अधर पूर में बह जाये माँ
भूली भूली भूली।

* * *

दस

तेरे घर मे चाद सितारे
तेरे घर म मोती।
तरे घर मे मिहर जुन्हैया
पलको पर पड सोती।
निदिया तू जग मे आवेगी
स्वप्नागार घर तेरा।
रत्नो की छाया से रजित
तेरा साझ सवेरा।
फूलो का सिगार सुहासिनि
रचता तुझे सलोना।
महमह होता नित सुवास से
घर आगन का कोना।
त्रिभुवन म छाई है तेरी
रूपराशि की माया।
तेरी छाया म मादक मधु
कितना अधिक समाया।
निदिया तेरे लिए रूठकर
बैठा सहचर तेरा।
तू आये तो चन्द्रग्रहण से
छूटे शिशु शशि मेरा।
तेरी करूँ चिरौरी रगिनि
आ सपनो की रानी।
श्वण पखेरू बन उड आ री
अब तक रैनि बिहानी।





ग्यारह

श्रो री निदिया भोरी निंदिया
रूप सुधा रस बोरी निंदिया,
सो जा सुत के साथ साथ री
साथ साथ उठ तो री निंदिया ।
कारी निंदिया, गोरी निंदिया,
कहा गई तू सो री निंदिया ?
शुक्र क्षितिज पर पख पसार
चन्द्रकला मधु धारी निंदिया ।
कोई के अयये सपनो में
नये रग भर ला री निंदिया
मानसरोवर तट पर रूठे
बैठे हस मना री निंदिया ।
नीले निमल आसमान में
नखत फूल विक्से री निंदिया
नभ गगा तट बठ कुज म
कलकल कौन हँसे री निंदिया ?
कौन देश मे मन खोया है
कौन पथ मे भटकी निंदिया ?
बिधी कौन सी बाधाश्रो मे
किन काटो म अटकी निंदिया ?

* * *

बारह

मीठ मीठ सपन सुगन
लाग लाग आंगृ र ।
गहरी गहरी निंदरा तब तो
आ रह रहा साम् र ।

बह निशानी कोर गार म
गाभा का भर पूना र ।
कोर लुभाती जगमाह्ट रा
हा हा गागर मूली र ।

भया पाठ गगन तर गा
कोर धरत पर गोत घर ।
सांझ सहेली गो पाघट पर
रनभुन तउग तोन सर ?

कोन पुकार हर सांस म
फांस निकारे कौन अहा ?
प्रम ततु में तुम को बांधे
निन्दिया के निम तोन कहो ?

◦ ◦ ◦





तेरह

चरखा गाये सोजा लाला
चक्की गाये सोजा लाला
दही मथानी समस्वर होकर
तुझे सुलायें सोजा लाला

तेरी मा को काम बहुत है
रो मत भैया, रो मत लाला
कर ले रोटी, मल ले बरतन,
घट ले सिल पर गरम मसाला

लीप पोत ले घर आगन को
बाहर भीतर करे उजाला
सिल ले तेरे लिये कोट वह
रो मत तब तक मुन्ना लाला

तुझे सराहे सूरज चंदा
तुझे सराहें गोकुल ग्वाला
चरखा गाये सोजा लाला
चक्की गाये सोजा लाला

* * *

चौदह

कहाँ नीद तू सोई री
कहा नीद तू सोई री
सेज बिछाती यहा जुन्हैया
पखा झलती है पुरवैया

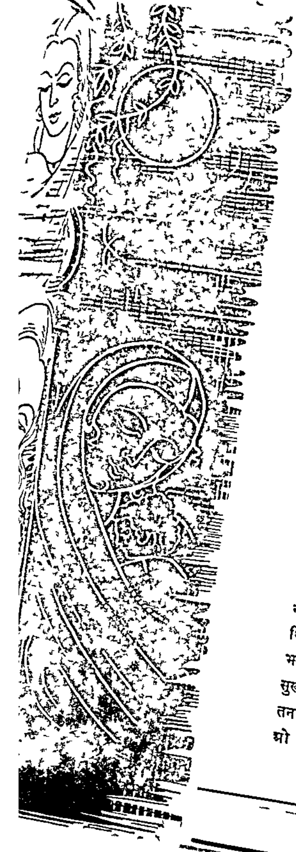
डगमग डगमग होती नैया
कैसे सोये कुँवर कन्हैया
कहाँ नीद पड सोई री
कहा नीद तू गोई री

फूल बिछे है डगर डगर मे
हार धरे हैं गूँथे घर मे
माखन मिसरी सब के कर मे
तू सोई री कौन नगर मे

कहाँ नीद तू खोई री
कहा नीद तू गोई री
कौन पलँग पड सोई री।
निंदिया कहाँ बिगोयी री।

***





पन्द्रह

रूठ गया मेरा लाला री
फूलो की वरमाला री
ला ला निदिया ला ला री
बरसे इन्दु उजाला री
रूठ गया मेरा लाला री
फूट गया उर छाला री
चन्द खिलौना ला ला री
ओ निदिया छवि शाला री
रूठ गया मेरा लाला री
किरणो की मधु माला री
ला ला ए शशिवाला री
करके हृदय उजाला री
रूठ गया मेरा ला ला री
कुंजकली करताला री
नचे नटिनि निशि बाला री
थिरक उठे मन माला री
भरें गीत उर ज्वाला री
सुख सपनो का जाला री
तन सोये, मम लाला री
ओ निदिया छवि शाला री

***

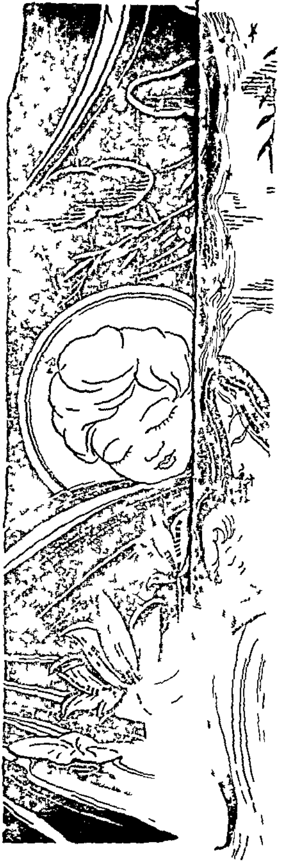
सोलह

सोजा लाला भैया मेरे
सोजा कुवर कन्हैया मेरे
चुनचुन कलिया सेज सजाई
चूम रही पग मैया तेरे
सोजा कुवर कन्हैया मेरे

सोजा प्यारे शत्रुदमन तू
सोजा मेरे शोक शमन तू
निदिया रानी बडे लाड से
डाल रही गलबहियाँ तेरे
सोजा कुवर कन्हैया मेरे

सोजा लाला भैया मेरे
सो जा चन्दा से उजियारे ।
सो कचनार-कुसुम रतनारे ।

सो मधुवन के फूल फुलारे ।
सोजा सोजा मा के प्यारे ।
नभ के तारे सोजा मेरे ।
जलज क्षीर निधि सोजा मेरे ।



अठारह

होने लगी लाल दोपहरी
आखो म है निदिया गहरी
ऊँ ऊँ-ऊँ ऊँघी फुलवारी
सिसक सिसक सोई सब क्यारी
तितली ने कब पाँख उघारी
होने लगी लाल दोपहरी
आखो मे है निदिया गहरी
गुनगुन गाती मधुबालाएँ
थपक सुलाने मे सुख पायें
होने लगी लाल दोपहरी
आखो मे है निदिया गहरी
घाम पात अलसाये सारे
अलसाये दो नदी किनारे
पनघट अलसाया मुरझाया
पलको पर सपनो की छाया
होने लगी लाल दोपहरी
नयनो मे है निदिया गहरी

• • •





उन्नीस

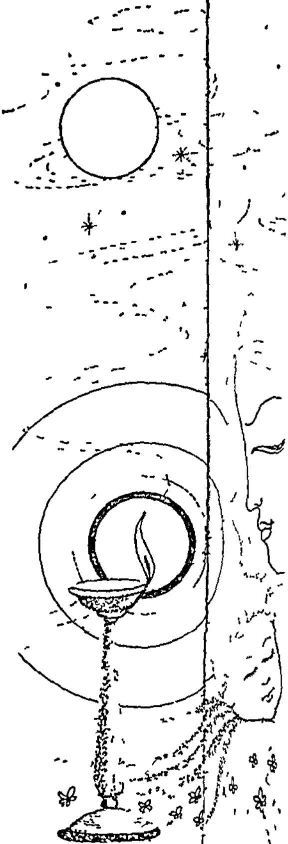
लल्ला तुझे बुलाये रो रो
आ जा निंदिया रानी।
नभ के सब मोती बटोर कर
देजा उसे सयानी
परीलोक तू जिसमे रहती
जहाँ अमृत है पानी
उसे छोड कर आजा ओरी।
कब की साझ सिरानी।
पलको पर ढरका जा मदिरा
हँसी होठ पर रानी
मृदुल उँगलियो से सपनो की
लिख जा रुचिर कहानी
अम्मा तुझे बुलाती सोनी
तुझे बुलाती नानी
तू तो बाबा के मन भाती
सब की मीत पुरानी
बबुआ तुझे बुलाये रो-रो
आ जा निंदिया रानी।

* * *

बीस

चदा मामा नभ मे आये
तारो ने मिल मगल गाये
पछी वृन्द ने पख समेटे
कुमुद सरोवर म मुसकाये
इन्द्रधनुष से खेल रही थी
बादल के मुह पर मुह लाये
किरणें मलिन हो गईं सारी
अस्ताचल दिननाथ सिधाये
यह प्रदोष वेला अलबेली
चन्दा आये सूरज जाये
थके जगत मे शान्ति बिखेरे
हृदय साझ का नयन जुडाये
निंदिया को सुत गले लगा लो
भाग न वह पलको से जाये
सपनो की झिलमिली पडी जो
उसे न कोई भूल उठाये
चदा मामा नभ मे आये

● ● ●





इक्कीस

निदियारानी, निदियारानी
दिये चाद की बिदिया रानी
इद्रधनुप रचकर सपनो का
कौन लोक से लाई रानी
मेरे श्याम सलोने को तू
मुझसे बढकर भाई रानी
शीतल तेरी गोद बडी है,
थपकी हैं सुखदायी रानी
फूल सेज पर सुला कि जिसको
मैं भी सुला न पाई रानी
तू ने ऐसी कौन मोहनी
पलको पर बरसाई रानी
हसी होठ पर जमी रह गई
ले न सको अगडाई रानी
बसती है इन गालो पर जो
झीनी मधुर ललाई रानी
सो भी डाल न पाई घू घट
तू जाने कब आई रानी
निदियारानी, निदियारानी
दिये चांद की बिंदिया रानी

* * *

बाईस

सध्या सखी सुलाने आई
सोजा कुवर कन्हाई
जगुनू लाई, तारे लाई
और चाद वह लाई
सपनो की वरमाला लाई
बबुआ को पहनाई
दीपक वह घर घर मे लाई
होठो पर जमुहाई
कितनी बहुत कहानी लाई
लाई नीद सुहाई
सध्या सखी सुलाने आई
सोजा कुवर कन्हाई
यह भी लाई वह भी लाई
लाई जो ला पाई।
ठनगन करो न लाल पढो तुम
नीद मत्र सुखदायी।

●●●





तेईस

सोजा मेरे कुवर-कन्हैया
आसमान मे उई जुन्हैया
किरणे उतर भूमि पर आईं
ओस बिन्दु फूलो पर छाईं
कलिया लेती हैं अगडाई
सोई बछुए को ले गया
सोजा मेरे कुंवर कन्हैया
इन रातो के भाग बडे हैं
अचल जिनके नखत जडे है
सपनें जिनके द्वार खड हैं
लिये हेम हीरो की नैया
सोजा मेरे कुँवर कन्हैया
सुला रही है प्यारी मैया
सूनी धरती सोया आलम,
चहचह महमह गई सभी थम
सोये यात्री सोया पथ-श्रम
सोई सागर तीर तलैया
सोजा प्यारे कुवर कन्हैया

* * *

बाई

सध्या सर
सोजा
जगुनू
श्रौर
सपनो
बवुश्र
दीप
हा
ि





पच्चीस

सोजा भैया, सोजा राजा
आसमान मे चाँद विराजा
परिया हैं पालना झुलाती
गीत फूल किरणो के गाती
सपनो की चादर फैलाती
सोजा भैया, सोजा राजा
आसमान मे चाँद विराजा
पलकें मूद फूल सब सोये
पछी कौन नीद मे खोये
पेड चादनी मे है धोये
किरण सूत मे नखत पिरोये
सोजा भैया सोजा राजा
आसमान मे चाद विराजा
सोई हरियाली सुख सानी
सोई धरा क्षीण मृदु बानी
सोई झील रात सर पानी
नानी सोई, मौन कहानी
सोजा भैया, सोजा राजा
आसमान मे चाँद विराजा

* * *

चौबीस

आ री निदिया आ री आ
सुला लाल को मेरे जा
सपना की माला रच ला
डाल गले म उमगा जा
आ री निदिया आ री आ
तारो की बिंदिया दे री
पूनो की डलिया ले री
आ री निदिया आ री आ
सुला लाल को मेरे जा
चन्द्रकिरन का बिछा बिछौना
भर ले मधु गीतो के दोना
सोजा मेरे सव-सलोना
आ री निदिया आ री आ
सुला लाल को मेरे जा
कुमुदो की मधु माया मे
तरु कुंजो की छाया मे,
तृण वीरुध की काया मे,
आ री निदिया आ री आ

* * *





पचीस

सोजा भैया, सोजा राजा
आसमान मे चाँद विराजा
परिया हैं पालना झुलाती
गीत फूल-किरणो के गाती
सपनो की चादर फैलाती
सोजा भैया, सोजा राजा
आसमान मे चाँद विराजा
पलकें मूद फूल सब सोये
पछी मौन नीद म खोये
पेड चादनी मे है धोये
किरण सूत मे नखत पिरोये
सोजा भैया सोजा राजा
आसमान मे चाद विराजा
सोई हरियाली सुख सानी
सोई धरा क्षीण मृदु बानी
सोई झील शात सर पानी
नानी सोई, मौन कहानी
सोजा भैया, सोजा राजा
आसमान मे चाद विराजा

* * *

छब्बीस

पलकें मूदो चिटियारानी
ओढी निशि ने चादर धानी
उड़ न जाय ये स्वप्न सुनहरे
नैन भाप लो नर सयानी
विजना हवा डुलाती है लो
पहरा देती निंदियारानी
गूथ गूथ हार धरे हैं
पात पात है ओस सुहानी
पछी दिन भर हार थके हैं
मौन कुंज कमलिनि कुम्हलानी
मोती मांग भराई नभ ने
सिसक सिसक के सांझ सिरानी
मायाविनि गोधूली भूली
देख तुम्हे पुरइनि अरघानी
पलकें मूदो चिटियारानी
ओढी निशि ने चादर धानी ।

* * *





सत्ताईस

होने लगी अहा गोधूली
सोजा मेरी लली छद्‌ली
मा होती सौ वार निछावर
मौसी निशि दिन फूली
खिलती कली बुआ के मन की
बहिन मगन मन भूली
मामी की पूरी अरमानें
घर सरोजनी फूली
दूध फेन सी सेज बिछाये
लिये नींद कर तूली
सपनों के है चित्र विरचती
दे दिनकर को शूली
होने लगी अहा गोधूली
गया गोठों मे गोहराईं
बछिया सुधबुध भूली।
सध्या ने सोना बरसाया
क्षितिज कुसुम रंग फूली।

* * *

अट्ठाईस

रतन-जडाया पालना
सो जा प्यारे लालना
प्यार की रेशम-डोरी रे
लाड की गाऊँ लोरी रे
आनंद की भव भोरी रे
सोजा प्यारे लालना
रतन जडाया पालना
चद्रकिरन की जाली रे
सेज फूल की डाली रे
प्राणो से प्रतिपाली रे
सो जा प्यारे लालना
रतन-जडाया पालना
सुख की निंदिया आई रे
स्वप्न सपदा लाई रे
रोम रोम छवि छाई रे
सो जा प्यारे लालना
रतन जडाया पालना

❁ ❁ ❁





उन्तीस

मीठी मीठी मधुर निंदरिया
उड पलको पर आ री !
झीनी झीनी रेशम जाली
सपनो की तू ला री !

छाई जैसे सेत चादनी
तैसे तू भी छा री।
मीठी मीठी मधुर निंदरिया
उड पलको पर आ री !

गाती जसे गीत लहरिया
तैसे तू भी गा री।
मीठी मीठी मधुर निंदरिया
उड पलको पर आ री !

उड पलको पर आ री ओ री
प्यार अधर पर छा री
भोरी भोरी छोरी श्यामा
भैया के मन भा री !



तीस

ले आऊँ मैं चंद खिलौना
सो जा मेरे छौना।
डीठ न लगे ललन को मेरे
दे दूँ एक डिठौना।

दे दूँ एक डिठाना ऐसा
दे दूँ एक डिठौना।
लोचन पछी उड ना पायें
दृढ हो पग मे दौना।

कामरूप का जादू तुझ पर
चले न टोटका टोना।
देने को विश्राम तात को
खाली उर का कोना।

निंदिया दुलहिन आजा
आजा कैसा गौना रौना।
ले आऊँ मैं चंद-खिलौना
सोजा मेरे छौना।

* * *



इकतीस

सो जा सुता सुनयना मेरी
रात बहुत चढ आई।
मलिन हो चली चारु चादनी,
फूलो के मन-भाई।

पलने मे लो पैर पसारो
नानी कहे कहानी।
झोको के संग ऊँ-ऊँ करती
सो जा बिटियारानी।

परछाई से डरो न बेटी,
तम से हँस हँस खेलो।
आजायें जो दुख जीवन में
उनका भी रस लेलो।

कटु है नही मधुर यह सारा
जीवन मरु जो फैला।
दो पल सुख मजनू संग हस लो
सुरंग प्यार की लैला।

* * *

बत्तीस

निंदियारानी निंदियारानी,
तुमने नाहक डाला झूला ।
बड़ा चिबिल्ला है यह बिल्ला
फिरता है जो ऊला ऊला ।

इससे रुठ न जाना सजना
देना इसको प्यार सलोना ।
इसके हेतु सुरक्षित रखना
सदय हृदय का सुरभित कोना

इसकी पलकों में तुम पहले
गूँथ स्वप्न की माला जाना ।
पीछे जब जी चाहे तब तुम
धीरे-धीरे हँसती आना ।

लोरी गाकर इसे पिलाये
मा मधु मादक रस का प्याला
निंदियारानी तब तुम आना
लेकर सपनो की वरमाला ।

***





तैंतीस

तारो भरी रात सोई है
भरी तलैया ।
तम की चादर तान, सो गई
धरती पर अमरैया ।

फूल सेज रच दी शेफाली ने
सो जाओ भैया ।
बिछा चादनी ने चादर दी
लोरी गाती मैया ।

सपनो ने रेशम की दुनियाँ
रच डाली पल भर मे ।
ले जाने को जहाँ खडी है
मधुर नीद की नैया ।

जलपरियो ने बीन उठा ली,
कैसा मीठा सुर है !
सुनते सुनते सो जाओ तो
मेरे कुँवर कन्हैया ।

* * *



चौतीस

राजा भया,   राजा भया,
घर मे आई उतर जुन्हैया।
तैर रही परिया सागर मे
नभ मे नैया बनी तरया।

सनसन सनसन ससन डोलती,
द्वार खोल कर गाती मैया
सपनो
गई किधर री निंदिया, दया।

पास पास ही तो कुमुदो के
दूधफेन हो रही तलैया।
जुही चमेली बेला से
अलबेली आज बनी बनरया।

यही कही सपनो की रानी
की होगी मृदु मजुल शैया।
वेशर -मन्दिर मे जा निंदिया
भूल गई है वहां कन्हैया।

राजा भया, राजा भया।
मा के प्यारे राजा भैया।
फैल गई सब ओर जुन्हैया
बुला रहा निंदिया को मैया।

•••



पैंतीस

सो, मैया के छौना सोजा,
घर के खेल खिलौना सोजा,

खेतो मे हरियाली सोई
मौन साझ की लाली सोई,
अम्बर बीच घनाली सोई,

रो मत मेरे छौना सोजा,
घर के खेल खिलौना सोजा,

कोयल सोई गाते गाते
सोई किरण ओस ढरकाते
फूल सोगये सुरभि लुटाते।

सो रे सहज सलोना सोजा,
मा के मजु खिलौना सोजा,

जलपरिया सागर में सोई
जैसे सर मे सोती कोई
कलियो से कलिया लग सोई

सबके जादू-टोना सोजा,
मा के मजु खिलौना सोजा।

* * *



छत्तीस

कहा गई तू अरी निदरिया
मुह से जो नहि बोले ।
कब से मेरा छगनमगन री
तुझे बुलाता डोले ।

बाबा लौट खेत से आये,
दादा दूर नगर से ।
तू तो भी रह गई कहाँ री,
आती कौन डगर से ?

नाना ने दो धावन भेजे,
तुझे बुलाने को री ।
बिलम कहा तू रही बावरी ।
गाती गाता लोरी ?

मुह मागा देने को नानी,
दादी तुझे बुलायें
भैया के पलको पर आजा,
सैनो से समझाये ।

०००



सैंतीस

दोनो हाथ रचाये मेहदी
आयी सध्यारानी ।
मीठी मीठी थपकी देने
कहने नई कहानी ।

सुनते सुनते सो जा लाला
अब क्या रोना धोना ?
होते ही प्रभात बरसेगा
कोने कोने सोना ।

सेज बिछी है फूलो की
तू आजा लाल सलोने ।
कही उतर कर नभ से उस पर
चदा लगे न सोने ?

फूल सेज किसको डसती है ?
जी चाहे सो सोये ।
बहिन लाल की सो जाने को
बैठी है मुह धोये ।

* * *



अड़तीस

चदा मामा आजा रे।
इत्ती बात बताजा रे।

जगमग जगमग तारे ये।
बठ सिधु किनारे ये।
क्या करते मिल सारे ये ?

चदा मामा आजा रे।
इत्ती बात बता जा रे।

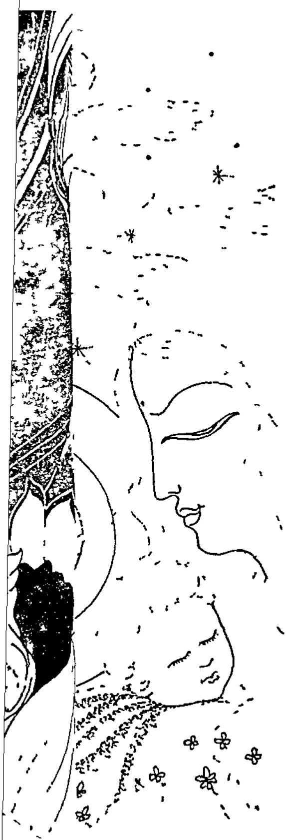
फूल जुही के फूले ये।
या जुगनू पथ भूले ये ?
किसके लाल छटूले ये ?

चदा मामा आजा रे।
इत्ती बात बता जा रे।

बिखरे अनगिन मोती ये।
दीपक कौन सजोती ये ?
निशा रत्न क्यो धोती ये ?

चदा मामा आजा रे।
इत्ती बात बता जा रे।

* * *



उन्तालीस

फूल सेज पर भैया लेटा,
अम्मा थपकी देती ।
बिछा चाँदनी की तह रजनी ,
उसे गोद मे लेती ।

परिया आसमान से आती ।
भर सपनो से झोली ।
हँसी छिड़क जाती होठो पर ।
मल गालो पर रोली ।

निंदिया तेरा चद्रलोक क्या
इससे भी सुदर है ?
मदारो से भी मृदु कोमल
क्या तारो का घर है ?

शबनम का ही तुझे बिछौना
क्यो भाता है रानी ?
भैया की पलको मे भी तो
हैं बूदें मनमानी ।

ओहो रानी सुनो कहानी
कहती है जो नानी ।
भैया को ब्याहेगे उससे
हो जो निंदिया कानी ।

* * *

चालीस

मैया, चदा कित्ती दूर ?

दादा गये साँझ से लाने होने चला प्रभात।
पलको के सपने अपने ही खिले सरस जलजात।

मैया चदा कित्ती दूर ?

थाली मे तू जल भर लाई, जल मे तू आकाश
पलक मारते आया दौडा चदा मेरे पास।

मैया चदा रत्ती दूर !

मैं भी जल मे बूद नहाऊँ होता है जी आज।
हम दोनो ही तो नगे हैं क्यो आयेगी लाज ?

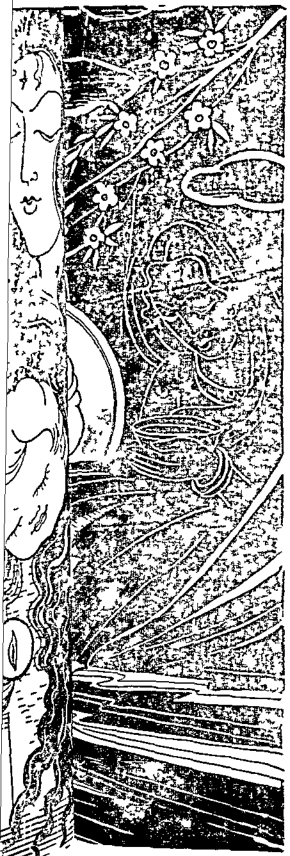
मैया चदा रत्ती दूर !

तू कहती है पा न सकूँगा, मेरा क्या अपराध ?
थाली भर यह तेरा पानी ऐसा कौन अगाध ?

मया, चदा कित्ती दूर ?
आहा ! चदा रत्ती दूर !

* * *





इकतालीस

आ री ओ गगनारी निंदिया
शिशु पलको पर छा री निंदिया।
धानी साडी ओढ जलद की
अनुपम छटा बढा री निंदिया।

ओरी भोरी चिर मतवारी
साझ-सखी की प्यारी निंदिया।
किरणो का धर मुकुट शीश पर
चदा की दे आ री बिंदिया।

घर घर तेरी याद हो रही
मोतियन माग भरा री निंदिया।
रचले कमल करो मे मेहदी
घुघरू पग लटकारी निंदिया।

रेशम झूला झूलें नाचें
डाल गले मे बाहें निंदिया।
तू भी साथ हमारे झूले
इतना ही हम चाहें निंदिया।

* * *

बयालीस

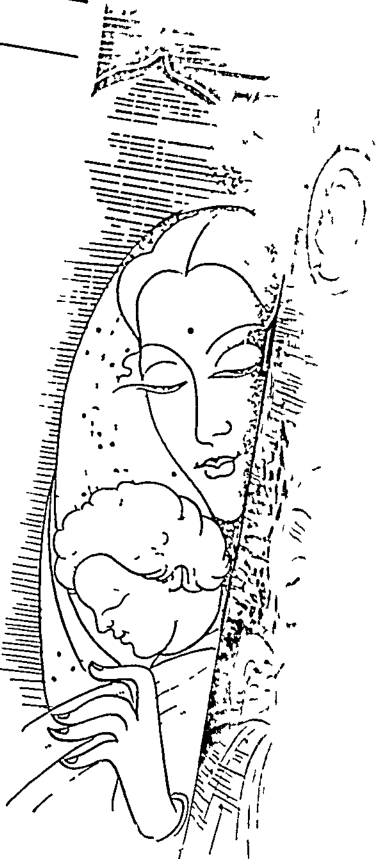
पलना पर आ बसी निंदिया
भर सपनो की झोली
जाग न जायें कुँवर सावरे
हौले हौले खोली।

चम चम चम जुगुनू चमकाये
झिलमिल झिलमिल तारे।
कुमुद सरोवर म हलकोरे
चदा चटक निहारे।

पीपल पात वात गति डोले
किरन परी थिरकैया
ले ले नाच उठी लहरा सँग
विहँसे ताल तलैया।

सपनो की मधु रात सुहानी
छोड न ये घर जाये
पोर पोर मे छवि अंकित हो
रोम रोम रच जाये।

* * *





तैंतालीस

मा ने आज राम फिर पाये
मा ने पाई सीता
मा ने कृष्ण पालिये घर मे
मा ने पाई गीता।

मैया को मिल गया चद्रमा
अपने ही आगन मे।
हुई धन्य वह पा दुलभ मणि
अपने कर कगन मे।

कौन देव को ध्यावै मैया
कौन शास्त्र को बाचे
नौ निधियो से भरी गोद म
उसको सब सुख साचे।

भाग सुहाग रचाये बैठी
पूजा अर्चा छोड।
लोरी गा मधु पुण्य बटोरे
जनम जनम जो जोडे।

* * *

चवालीस

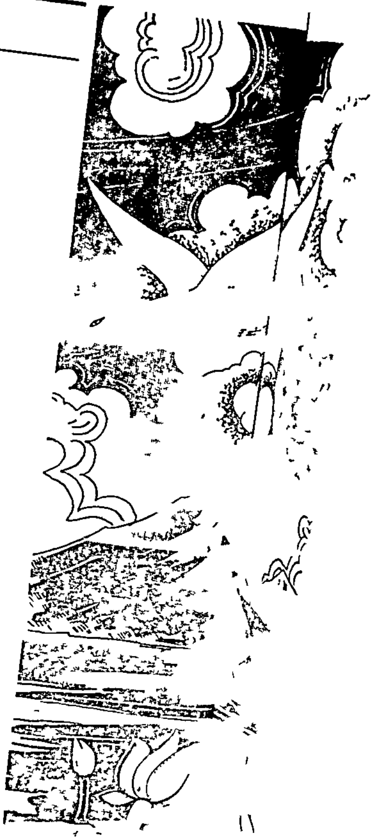
मा की बात न मानोगे तो
कौन कहेगा कुवर कन्हैया ?
सीख बहिन की नही सुनोगे
तुम हो कैसे राजा भैया ?

कौन तुम्हे बाटेगा सपने
अगर उगेगी नही जुन्हैया ?
रतन पलग पर नही पडोगे
आयेगी कब कहो निदया ?

कचन घट मे ज्ञान भरा है
तारो भरी आकाश - तलैया ।
कुसुम सुवास भरी मलयानिल
कमल कुमुद रस पूण रतैया ।

सुख निदिया मे सहज प्राप्त है
भूलो इसे न रास रचया ।
नही मानते, उठ उठ भाग
फिर फिर मधुर निहारै मया ।

* * *





पैंतालीस

जब जी होता आती निंदिया
जब जी होता जाती निंदिया
किसके कहने मे तू है री
अम्मा तुझे बुलाती निंदिया

मीठी निंदिया खारी निंदिया
काजर-सी कजरारी निंदिया
पहन सुनहरी सारी निंदिया
आ बबुआ की प्यारी निंदिया

पलको पर घिर आ री निंदिया
सघन घटा सी छा री निंदिया
जीजी को घर खा री निंदिया
लल्ला को बहला री निंदिया

ओ री निंदिया, आ री निंदिया
मोती मानिक ला री निंदिया
खारे काटो को मधु भीने
फूलो मे भरमा री निंदिया

छयालीस

सोजा ऐ सहज सलोने।
ले हरी दूब के दाने—
आई निदिया छविशाली
तारों संग रमनवाली।

फूलों से भरा कटोरा
किरणों सा आनन गोरा।
छू छू जादू कर जाती
पलकों पर स्वप्न लुटाती

वह धीरे धीरे आई
भैया को निदिया भाई
सोजा ऐ कुवर कन्हाई,
मैया ने लोरी गाई।

जननी के उर का छाला
ममता ने खूब उछाला
निदिया ने मधुरस ढाला
सो गया सुमन मतवाला।

***





सैंतालीस

विना साझ को सुने कहानी
उसको नीद न आती ।
बुढिया कैसे बैठ चाद मे
चरखा नित्य चलाती ।

कात कात कर रुई चादनी
के पहाड रच देती ।
कैसे बहती नदी सूत की
जगमग होती रेती ।

सुन सुन कर बातें अम्मा की
विस्मित सा विकसित सा
आँखें नभ की ओर गडाये
रह जाता पुलकित सा ।

थपकी और कहानी दोनो
मिलकर उसे सुलाती ।
निंदिया की मदिराली लोरी
पलको पर गहराती ।

* * *

अड़तालीस

लल्ला की निंदिया आ जा,
भैया की निंदिया आ जा,
फूलों की सेज बिछा जा।
किरणों का छत्र सजा जा।

माँ के दुलार की रेशम
पलकों के ऊपर छा जा।
बरसा जा मीठे सपने
मधुलोरी गुनगुन गा जा।

तारों की चादर ओढ़े
चंदा का तिलक लगाये
बासन्ती मंद पवन सी
मधु गंध लिए तू आ जा।

आँसू के मोती भर भर
थालों के थाल लुटा जा।
तू आ जा माया मोहनि!
मोहन को थपक सुला जा।

* * *





उन्चास

मा से होड लगाये
निंदिया मा से होड लगाये
मा फूलो की सेज बिछाये
नीद स्वप्न बरसाये ।

मा थपकी दे दे चुमकारे
निंदिया लाड लडाये ।
माँ ने आसू बडे बडे दो
गालो पर ढरकाये ।

सिहर उठे छू रोम रोम
तन मन की तपन जुडाये
निंदिया ने पलको पर अपने
प्यार रेशमी छाये ।

नैनो की पुतली मे उसकी
मादक छवि लहराये ।
निंदिया मा से होड लगाये ।
निंदिया भैया को दुलराये ।

* * *

पचास

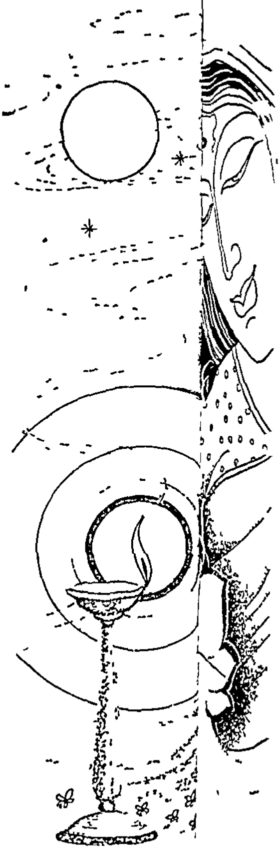
नींद-परी ! घर कहां तुम्हारा
देश कौन सा रानी ?
कौन मोतियों के सागर में
तिरती हो मनमानी ?

किस जादू से बँधी हुई हो
तुम माँ की लोरी से ?
आ जाती हो बिना बुलाये
बिन खींचे डोरी से ।

मां की थपकी में रहती हो
कहां छिपी तुम बोलो ?
घूंघट मत खोलो पर
अपना भेद हृदय का खोलो ।

साथ ले चलोगी क्या मुझको
उस नीलम के घर में
छमछम परियां तुम्हें नचाती
हँस हँस जहां डगर में ?

• • •





इक्यावन

चद्रलोक से ग्रा जा निंदिया
तारावन से ग्रा जा ।
मा की मधु लोरी मे गोरी
मीठा राग मिला जा ।

झाग उठ रहा है सागर मे
निर्भर मे रव होता ।
लहरो की रेशम शया पर
उनको थपक सुला जा ।

सिसक रहा लो भैया मेरा
सूज गई दो ग्राखें
प्यार भरी चितवन से उसके
शिशु उर को लहरा जा ।

मैया के मानस मे गीतो
का लहराता सागर ।
दर्शन के कपन से ऊचे
उसमे ज्वार उठा जा ।

चद्रलोक से ग्रा जा निंदिया
तारावन से ग्रा जा ।

* * *

बावन

मधु स्वप्नो का थाल सजाकर
ला री निंदिया, आ री निंदिया ।

भर ले आंखो मे, पांखो मे,
तन मे और त्वचा म
कर मे, पग मे, नख मे, मुख मे
रोम रोम रसना मे ।

सो जाये दो घडी सुखी हो
लाल न, रोये धोये
गुन मानूगी तेरा कहना
वर पाये तू जो ये ।

पलको पर छा दे जरतारी
तारो झिलमिल काया
उर्मिल उर का ले समेट वह
छायावन की माया ।

मधु स्वप्नो का थाल सजाकर
ला री निंदिया आ री निंदिया ।





तिरपन

पलकों के पलने मे निदिया
झुला लाल को मेरे ।
झुला रात भर गा-गा लोरी
पैयाँ परसू तेरे ।

नभ-सर मे जब तक तिरते हो
तारे - कुसुम सजीले ।
रख तू तब तक कठ सुरीले
ओठ गीत से गीले ।

भोर भये राजा भैया के
गालो पर मल लाली ।
सौंप उषा को जा अपने घर,
सपनो की रखवाली ।

निदिया तेरी दया मया को
मैया का जी जाने ।
जिसने कभी न जाया शैशव
वह क्योंकर अनुमाने ।

* * *

चौपन

सो जा चुनमुन भया मेरे
सो जा लाल क हैया मेरे
बहना की आखो के तारे
सोजा सोजा मा के प्यारे।

जीजी बैठी तुझे निहारे
सो वहना के चाद सितारे ।
घर के कितने काम पडे है
चक्की चूल्हा भी क्या क्या रे।

कौन करे कह कघी चोटी
आगन फिर-फिर कौन बुहारे।
जीजी के मीठे से भैया
सो जा लगकर हृदय किनारे।

सोई थी सपने बटोरती,
काली रातो पर छवि वारे।
उस निदिया की मधुर गोद मे
सोजा सोजा मोहन प्यारे!

• • •





पचपन

लाला की निंदिया आजा
भैया की निंदिया आजा
फूलो की सेज बिछा जा
किशलय का चौंर डुला जा ।

मा के दुलार की रेशम
पलको के ऊपर छा जा ।
बरसा जा मीठे सपने
मधुलोरी रह रह गा जा ।

तारो की चादर ओढे
चदा का तिलक लगाये
वासती मलय पवन सी
मधु गध लिए तू आजा ।

आसू के मोती भर भर
थालो के थाल लुटा जा ।
तू आजा माया मोहनि !
मोहन को थपक सुला जा ।

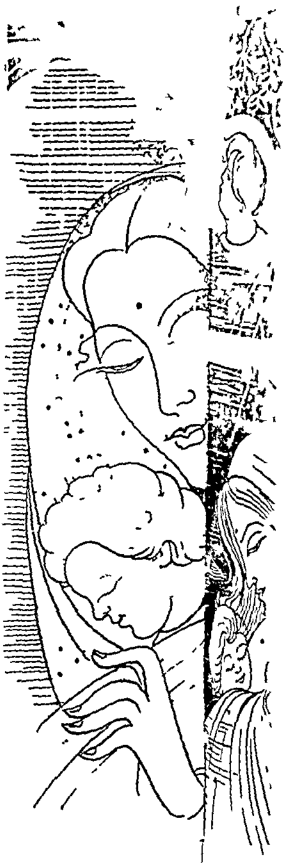
* * *

अट्ठावन

आज अँधेरी रात भया
आज अँधेरी रात ।
अम्मा से रूठा था चदा
खूब बखेरा भात नभ मे
खूब बखेरा भात भया ।
आज अँधेरी रात ।

तारे हैं ये नही न माना
जो तुम मेरी बात भैया ।
अम्मा से नानी से पूछो
होते आज प्रभात भैया ।
आज अँधेरी रात भैया ।
आज अँधेरी रात ।

अथये नखत, गल गया चदा
चलती झझावात भैया ।
बादल से बादल टकराये
कैसी तो बरसात भैया ।
आज अँधेरी रात भया ।
आज अँधेरी रात ।





उनसठ

ठुमुक ठुमुक कर चलो कन्हैया,
मैया का मन माने ।
ढुलका दो कानो मे उसके
मधुरी मधुरी तानें ।

लोरी का मधु पी-पी लाला,
सो जाओ पलभर मे ।
फूलों सी चादनी छिटक जाये,
जब जागो घर मे ।

चहक उठें दर-द्वार हँसी से
कक्ष रुदन से गूँजें ।
हृदय-सिंधु मे उठे लहरिया
सुन सुन कर कल कूजें ।

अंगना म बरसाओ सोना
बाहर रतन लुटाओ ।
दिन को जगमग करो रात को
सुख की नीद सुलाओ ।

* * *

साठ

मैया, चद खिलौना दे री !
नही चाहिए माखन मिसरी
दाख न भावै तेरी ।
मैया चन्द खिलौना दे री !

साझ प्रात के न कर बहाने
मेरी अर सुन ले री !
न्हाऊ खाऊ तभी आज मैं
जब चदा ला दे री !

देख, देख, ऊपर आया वह
देने नभ मे फेरी ।
तेरे मुख सा ही तो चन्दा
उसे आज ला दे री !

उसके साथ साथ खेलू मा
उससे मैत्री मेरी ।
वह मेरा युग युग का साथी
उससे प्रीति घनेरी ।
मैया, चद खिलौना दे री !

* * *





इकसठ

पगन घुघरुग्रन बाँघ क' निंदिया ग्राई रे,
छम छम छमक छमार क' निंदिया ग्राई रे।

काली कोंछी साझ पवन पुरवाई रे,
लिए गोद मा लाल लोरिया गाई रे।

पान सुपारी लौंग थाल भर लाई रे,
डगमग डगमग चाल चलन मन भाई रे।

पावो नूपुर बाघ क' निंदिया ग्राई रे
साझ सुरमई सखो सग वह लाई रे।

गोरे गोरे गात देख भरमायी रे।
स्वप्निल अजन ग्राज क' निंदिया ग्राई रे।

पलक पावडे बिछा क' निंदिया ग्राई रे।

• • •

बासठ

मारग फूल बिछाओ निंदरिया आई रे,
चंद्र किरन ढरकाओ निंदरिया आई रे।

दीपक रैनि बुझाओ निंदरिया आई रे।
साझ न बाती जगाओ निंदरिया आई रे।

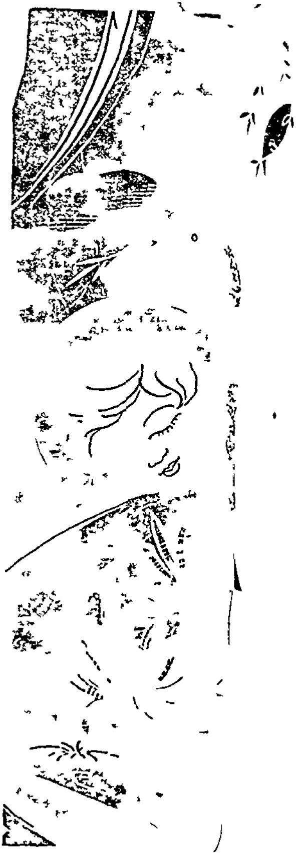
वह लाई कसूमल चीर लोरिया गाई रे।
छवि सोई गगन तरु छाह पौन अलसाई रे।

सरसिज मौन न सलिला लहर उठाई रे।
सारस तट पर बैठि लेति जमुहाई रे।

कलिया उनींदी न पाखिन रोर सुहाई रे।
द्वारन पलक बिछाओ निंदरिया आई रे।

अलस अपागन छाओ निंदरिया आई रे।
चंद्र किरन ढरकाओ निंदरिया आई रे।

* * *



तिरेसठ

अलग पलग सोई बनरैया
सोये ताल तलैया
फूल पात सोये रस छैंया
सोये रवि शशि भैया

तू भी सोजा कुवर कहैया
सोये हस पपैया

राधा सोई, रानी सोई
सोये भौंर ततैया

निंदिया सोई, लोरी सोई
सोई दूध मलैया

माखन मिसिरी सोजा मेरे
लेती मातु बलैया।

रतिया सोई बतिया सोई
सोये कथा कहैया
अमलतास तरु छाया सोई
सोये नाच नचैया।

स्नेह स्निग्ध मैया के छौना
सोजा कुंवर कन्हैया

•••

चौसठ

कौन लोक से आई निंदिया
कौन देश को जाना
किस किस को सग लाई निंदिया
किससे प्यार निभाना ?
तारो का है देश हमारा
चदा के घर जाना
सपनो की परिया सँग आईं
शिशु से स्नेह पुराना
आओ बैठो कदम की छैंयाँ
सुन लो मा की लोरी
देखो, सो मत जाना सुन तुम
लोरी मदिरा घोरी ।
हम तुम दोनो साथ चलेगे
लौट तुम्हारे घर को
खेलेंगे कूदेंगे घर घर
शशि उडु वृंद सुघर को ।

* * *





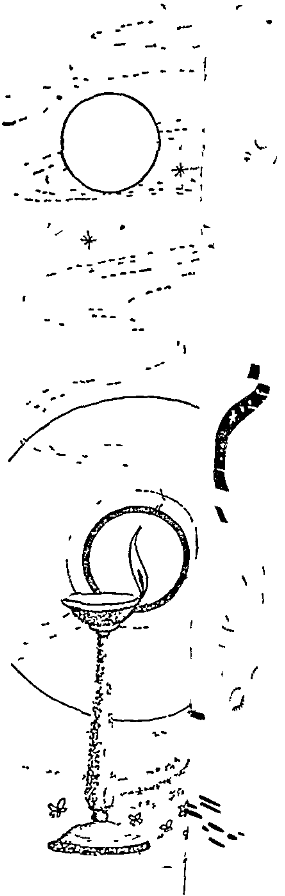
पैंसठ

फूलकुमारी की लोरी सुन
नीद भागती आई
खाना पीना भूल गई वह
सुध बुध सब बिसराई
स्वागत निदिया, स्वागत तेरा
लता कुज फुलवाई
भीनी भीनी गध जुही की
देती तुझे बधाई
प्यार दुलार बिछाये मग मे
पलक पावडे डारे
उत्सुक्ता से पथ हेरें सब
घर घर द्वार उघारे
नदन तेरे अभिनदन को
पल छिन गिन गिन टेरे
एक बार तू मिल पाये तो
कभी न वह बिसरे रे

०००

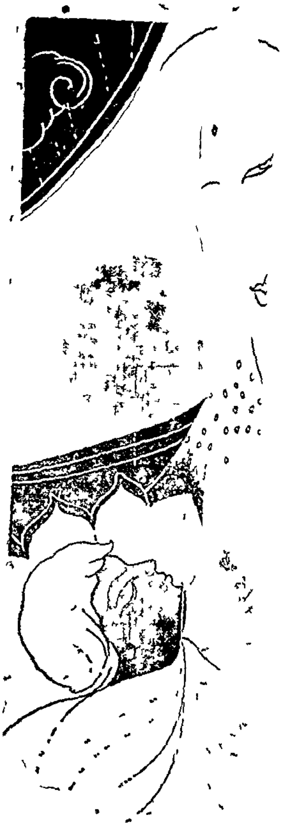
छासठ

सोजा फूल फुलारे सोजा
कर-कगना रतनारे सोजा
रनक झनक पायल की सोजा
ठुनक ठनक घुघरू की सोजा
सोये सारगी मजीरा
सोये कोहडा ककडी खीरा
झीगुर टिड्डी भौंर भमीरा
सोये मच्छर मेंढक कीरा
चुनिया सोई मुनिया सोई
लोरी सुनते दुनिया सोई
गेंदा सोया मेहँदी सोई
तू भी सोजा वह भी सोई
थपक थपक मां लोरी गाये
नीद बिचारी पलको छाये
सोजा चाद सितारे सोजा
कमल नयन कजरारे सोजा





प्रभाती खराड





एक

ताता थैया, ताता थैया
झरी जुन्हैया, गली तरैया
उषा किरन की ले नव नैया
अंबर सागर में लहरैया
चह चह चूं चूं सब बनरैया
धरनि प्रभाती राग रंगैया
ता ता थैया, ता ता थैया
नचैं कन्हैया, रास रचैया
दैया दैया, मैया मैया
उड़ै फुदनिया ता ता थैया
कूज कुरल चढ़ गगनैया
विकस कमलिनी जगे कन्हैया
राधा कुंज कुंज थिरकैया
गोपी ग्वाल नत्यरत गैया
ताता थैया, ताता थैया

* * *

दो

थेई थेई नचो श्याम कचन के आगना,
मोतियो के हार प्यार मैया से न मागना
किरनें बुहारती लो सखिया सहेलिया,
पोछती पगनिया न मानती बरोनिया
हरी हरी कोपलो पै तैरती प्रभातिया
लहरो के दोल पर नाचती कलापिया,
तालियो की थालियो मे कमलो की पातिया
थेई थेई नचो श्याम कचन के आगना

* * *





तीन

कलिया भई सब फूल सकारे
फूल भये रसभीने
दूव के लोचन मीच प्रकाश ने
ओस के बूंद विलोने
डोल उठी बनरैया सुहासिनि
प्यार अनिल से कीने
कचन की वरपा भई रंगिनि,
मोहन चुम्बन छीने
छाई गगन बग-पाति निहोरो न
नींद के बादल भीने
खोलो विलोचन, सोने के तारन
बुने पट किरन नवीने
हंस चले तिर मानसरोवर
भौंर कमल मधु पीने
चुनमुन, जागो निहारो नई छवि
पाई अमोल सभी ने

* * *

चार

जागो रे जागो फूल लता द्रुम
जागो कदम की छैयां
जागो नदी के सोय किनारो
छिप रही जगत तरयां
जागो पवन के झोंके सुहाने
जागो लहर लहरैया
जागो झील के कुमुद निकुंज
तमासा छाई तलयां
चू चू चिरैयां चहक उठीं सो
गैया चलीं डकराती
जागो मधुप मधु के अभिलाषी
जागो फसल की पाती
मोहन जागो रे सोहन जागो
जागो शकुंतला रानी
गाती प्रभाती जगा रही मैया
जागो रे रैनि सिरानी

○○○



पाच

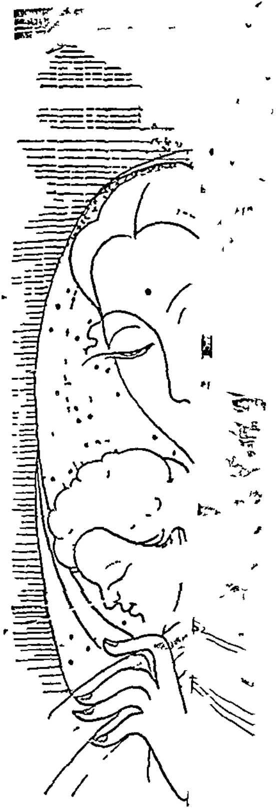
कदम की छैंया जमुना किनारे
गैंया बुलाती हैं लाल हमारे
जागो रे जागो हा भोर भुरारे
मैंया के मोहन नैन उघारे
मो तन हेर के तो तन हेरत
होठ हँसी मुसकात मना रे
कदम की छैंया जमुना किनारे
मीठा मीठा घाम, समीरन शीतल
मोद भरा सुख धाम महीतल
माखन सी छवि दूध से दतनि
जागो अरुन कल कान्त सखा रे
कदम की छैंया जमुना किनारे
ऊचे ऊचे श्याम तमालन के तर
पुलकित आनन नन नेह भर
कमल कुसुम मधु गात सुधा रे
जागो अमित छवि दृग रतनारे
कदम की छैंया जमुना किनारे
गैंया बुलाती हैं श्याम हमारे

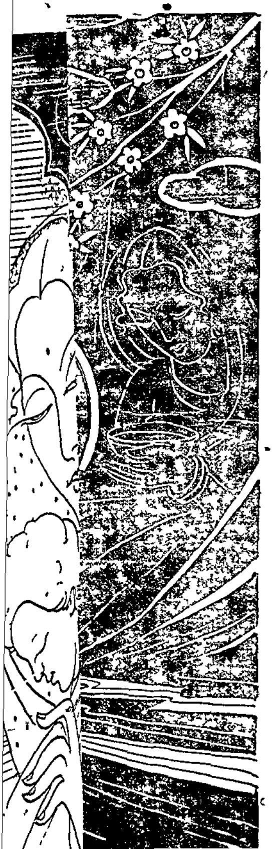
* * *

छः

हाड मास से बनी हमारे
रूप हमारा पाया
मेरी हो उनहार लाडली
मेरी हो तुम छाया
मेरी काया की परछाई
मेरी आकृति रेखा
अपने शैशव को नित तुममे
मैं करती हूँ देखा
गुण की राशि मिली थी मुझको
अपनी मा से रानी
तुम भी उठो सीख लो सद्गुण
सोओ मत मनमानी
बचपन बीते तुम्हे वधू बन
जाना होगा बेटी
कन्या की ललाट रेखा यह
नही किसी ने मेटी

• • •





सात

नाचो उठ कर ता-ता थैया
माँ जाती सौ बार बलैया
क्षितिज-कोर पर किरणें फूटी
थिरक चली लहरो पर नैया
अमराई मे कोयल कूकी
गूँज उठी सोई वनरैया
कुमुद मुदे ऊषा कर छूते
कमलो से भर गई तलैया
गगाजल मे केसर घोरी
चलो नहाओ छोडो शैया
बरसाये थे ढेरो मोती
उन्हें बीन ले गई जुन्हैया
बचे-खुचे उठकर बटोर लो
जागो जागो कुसुम कन्हैया
नाचो उठकर ता-ता थैया
मा जाती सौ बार बलैया

* * *

आठ

तुम हो राणा प्रताप मेरे
तुमको क्योकर आलस घेरे
तुम अमरसिंह की रजपूती
तुम वीरवरो की मजबूती
तुम चलो जहा है वीर खडे
तुम पडो जहा है वीर पडे
उर के जाये हो तुम मेरे
मेरी इच्छा के तुम प्रेरे
तुम उठो उठो आलस त्यागो
वरदान यही मा से मागो
'विजयी होऊँ समरागण मे
दू पीठ न सपने मे रण मे
विक्रम को वरण करूँ बढ बढ
साहस के चरण धरूँ चढ चढ
गिरि शृगो पर, तूफानो पर
वाडव के ज्वलित उफानो पर'
मा आज प्रभाती गाती है
अरि कँप धमकती छाती है
शिशु शौय जगो, निशि जाती है
लो प्रभा उतरती आती है

* * *





नौ

धूप छाह सी देह तुम्हारी
पानपान सी तुम सुकुमारी
खिल खिल उठ हँसी ओठो पर
पलको पर छाई अरुनारी
मधुर कल्पना सी छवि धारे
फिरती गिरती उषाकुमारी
रेशम चूडी पहिन सलोनी
दिपती हो ज्यो शशि उजियारी
मा के भाग जगाती छमछम
फिरती हो जब भर किलकारी
रानी बिटिया हो तुम मेरी
प्राणो की तुम हो कुटिया री
तुम्हे प्राप्त कर रही न कोई
इच्छा शेष मधुर या खारी
मा के रोख दोख हरने को
तुम उतरी नव चद्रकला री

* * *

दस

कचन बरसे आगना, दूध भात जब मागे री
मोती बरसे आगना ऊँ-ऊँ कर जब जागे री

किरणो से जगमग घर मेरा
फूलो से महमह मधु मेरा
पायल--गुजित दरदर मेरा

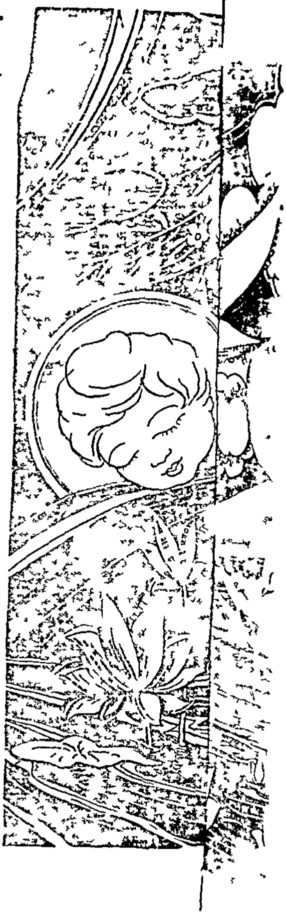
सखि, मेरा मन मोहना धर आचल जब भागे री
कचन बरसे आगना, दूध भात जब मागे री

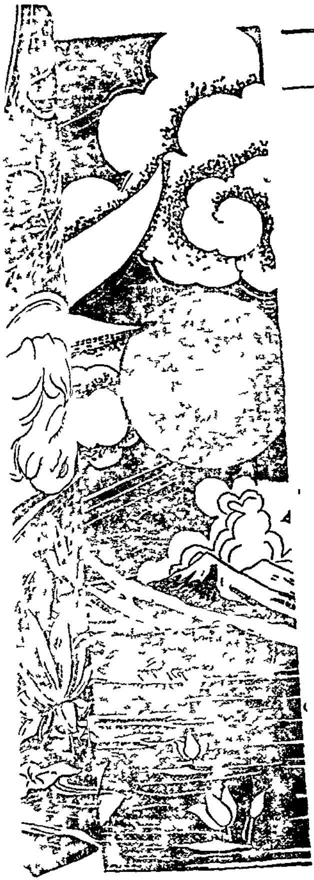
थिरक थिरक कर नचे कन्हैया
फीकी दरसे चद जुन्हैया
पगतल चूमे हर्षित मया

कचन बरसे आगना दूध भात जब मागे री
मोती बरसें आगना, विहस प्रेमरस पागे री

रूठ तूठ से स्वच्छ सदन है
किलक पुलक से रजित मन है
हास रास से बिंधा पवन है

मोती निपजें आगना बूद बूद जह नाचे री
घर मे स्वग उतर आये वडभागी मा को साचे री





ग्यारह

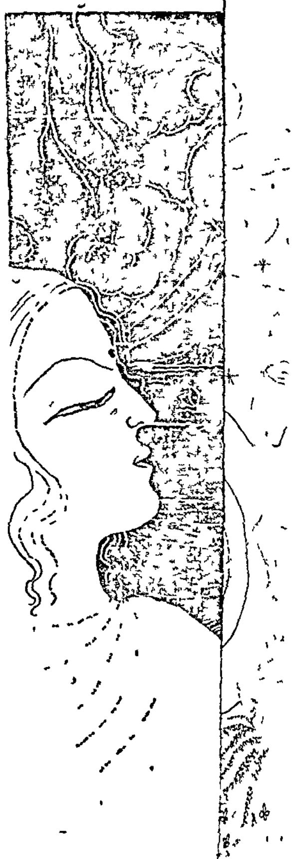
ऐ सिंह के छौने मेरे
ऐ रम्य खिलौने मेरे
तू भूल गया है क्यों रे ?
रणखेत के जौहर तेरे
उठ जाग भीम बलशाली
सिर शत्रु का तुझको टेरे
साका रच ऐ मतवाले
रख दूध की लज्जा मेरे ।
ऐ सिंह के छौने मेरे
ऐ सुघर सलौने मेरे
विक्रम का तू रखवाला
तू शौर्य छलकता प्याला
कर लिए पचहथा भाला
रिपु दमन नाग तू काला
तू भूल गया है क्यों रे
रणखेत के जौहर तेरे

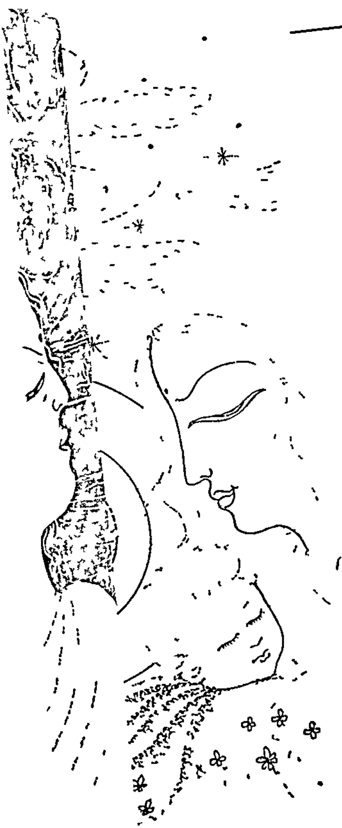
* * *

बारह

कौआ मामा आये हैं
दूध बतासा लाये हैं
लल्ला के मनभाये हैं
लल्ली को हरषाये हैं
भैया राजा उठ मुह धोलो
बोलो मे मीठा मधु घोलो
खा पीकर बहिनो संग डोलो
कौआ मामा आये हैं
दूध बतासा लाये हैं
साथ लिए मौसी गौरैया
पीछे आतीं सवल चिरैया
रोम रोम फूली बनरैया
कौआ मामा आये हैं
सोने चोंच मढाये हैं
साथ उषा को लाये हैं
का का करते आये हैं
स्वर्ण किरण बरसाये हैं
कौआ मामा आये हैं
लल्ला को हुलसाये हैं
लल्ली को घर खाये हैं
सोने चोंच मढाये हैं

* * *





तेरह

पलकें खोलो लली छबीली
हुई ओस से धरती गीली
नभ की कोरो से ऊषा ने
अंधकार की कर्दम छीली
प्राची ने सोना बरसाया
जगमग हुई डगर पथरीली
रँगती वहिन चीर केसरिया
मा ने ओढी चादर पीली
लोट रही है पडी सेज पर
लली तुम्हारी कबरी ढीली
उठकर उसे बांध लो लाडो
है नागिन मन्त्रो से कीली
आखो मे तुम मा की अपनी
डालो रानी आखें नीली
पलकें खोलो लली छबीली
हुई ओस से धरती गीली

* * *

चौदह

जागो मेरे वीर व्रती
माथा ऊँचा करो कृती
अस्त्र शस्त्र सज प्रस्तुत सेना
उसे शत्रु से है रण लेना
निभयता का सेवा खेना
जागो जागो वीर व्रती
माथा ऊचा करो कृती
रावण को तुम राम हमारे
दुष्ट कस को न ददुलारे
अँधकार को रवि अरुणारे
जागो मेरे वीर व्रती
माथा ऊचा करो कृती
कहा गये योद्धा यूनानी
कहा गया मुगलो का पानी
कहा पठानो की मनमानी
बढो, चलो ह वीर व्रती
माथा ऊचा करो कृती
चूर चूर हो पवत जायें
माग तुम्हारे मे जो आयें
रार न तुमको सागर पायें
जागो जागा वीर व्रती
माथा ऊचा करो कृती

• • •





पन्द्रह

भोर हो रहा जागो प्यारे
छीज चले लो नभ के तारे
बिखर गई सपनो की माला
लगा चाद के घर मे ताला
डालो डालो चिडिया बोली
कलियो ने पखुडिया खोली
तितलीरानी पख पसारे
अलख जगाती उनके द्वारे
मधुमाखी मधु लेने जाती
जाते जाते गीत सुनाती
परियों ने था झूला डाला
उसे उठा ले गया उजाला
ओस बूद मोती बन छाई
देखो, आखें खोलो भाई
भोर हो रहा जागो प्यारे

* * *

सोलह

जागो गोलो लाल हमारे
हंसों ने सिर पंख पसारे
सोने के रथ पर चढ़ आये
सूरज राजा द्वार तुम्हारे
किरणों का ये मुकुट लिये हैं
पहनो उठ कर तात हमारे
प्रात-समीर बहा सुखदायी
कलकल करते नदी किनारे
हरियाली पर मोती बरसे
फूलों ने हँस नैन उघारे
कमल सरोवर मे विगसाये
शोभित हैं ये मा के द्वारे
घूम रही बछुए को गैया
मैया के तुम जगो दुलारे!
हंसों ने लो पंख पसारे

* * *





सतरह

मैं निहाल हो जाऊं लाला
घर आँगन भर उठे उजाला
बन जाने को राम खडे हैं
माँ गुहती आसू की माला
सीता लछमन साथ चलेंगे
बुना भाग ने है यह जाला
आम कुञ्ज मे कोयल बोली—
कैसा है यह देश निराला
जहाँ सुकोमल फूल बिछे हैं
वहीं बिछे हैं कंटक-माला
आँखें, खोलो सजग बनो सुत
भरो प्यार से जग का थाला
फूंक फूंक कर धरो तात पग
फूट न जाय हृदय का छाला
मैं निहाल हो जाऊं लाला
घर आगन भर उठे उजाला

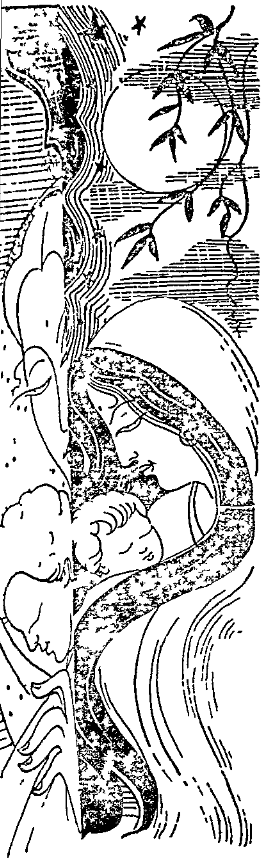
○○○

अठारह

बिटियारानी, नैन उघारो
माँ के उर मे प्यार पसारो
गल जायेंगे गाल गुलाबी
मत उन पर तुम आँसू ढारो
प्यार करेंगी उषा सहेली
चुम्बन उनका मुख पर धारो
चुम्बन से खिल पडे फूल सब
हसते है वे उन्हे निहारो
तारो की झिलमिल छाया में
पाया जो सुख उसे बिसारो
माया तज काया में आओ
गाओ उर का ज्वार उतारो
भैया तात समीप खडे हैं
हँस बोलो, कुछ भार सँभारो
बिटियारानी, नैन उघारो

* * *





उन्नीस

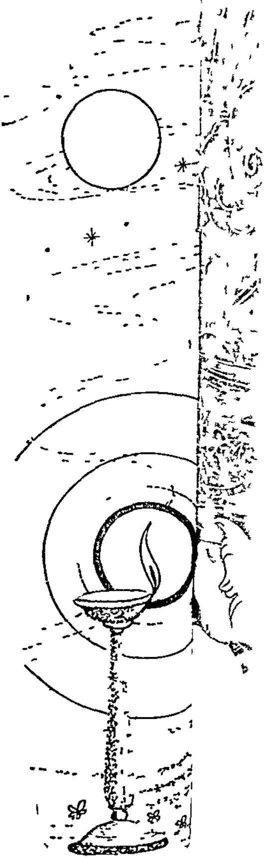
पलकें खोलो रैनि सिरानी
बाबा चले खेत को हल ले
सखिया भरतीं पानी
बहुए घर घर छाछ बिलोती
गाती गीत मथानी
चरखे के सँग गुनगुन करती
सूत कातती नानी
मंगल गाती चील चिरैया
आसमान फहरानी
कली कली रँग उठी निहारो
अपनी और बिरानी
रोम रोम में रमी लाडली
जीवन जोति सुहानी
आलस छोडो, उठो न सुखदे
मैं तव मोल बिकानी
पलक खोलो ओ कल्याणी
काका तो परदेस चल दिये
काकी ढरती पानी
पलकें खोलो बिटियारानी

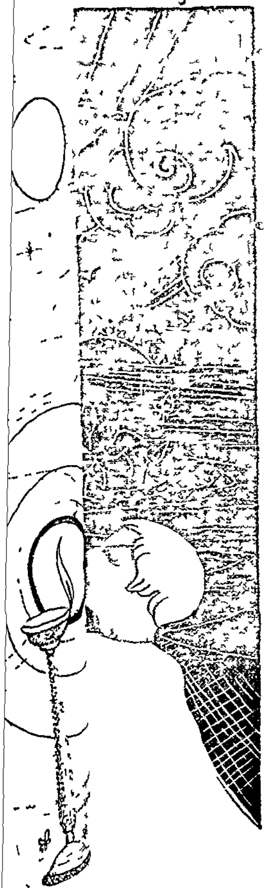
* * *

बीस

वेणी बैठ गुथा लो बेटी
मा के हाथ फूल हैं ६रतो
मत तुम फिरो ससेटी
दोनों हाथ रचा लो मेहदी
रहो घडी भर लेटी
धानी सारी पहन गले में
किंकिणि कमर लपेटी
कर मे कगना पग मे पायल,
मन से क्यो अलसेटी ?
चपा सी तो ही चटकीली
शपा सी दुख मेटी
इस अँगना मे करो चादना
शशि ने किरण समेटी
उषा तुम्हारे पगतल बसती
साझ तुम्हारो चेटी
वेणी बैठ गुथा लो बेटी

* * *





इक्कीस

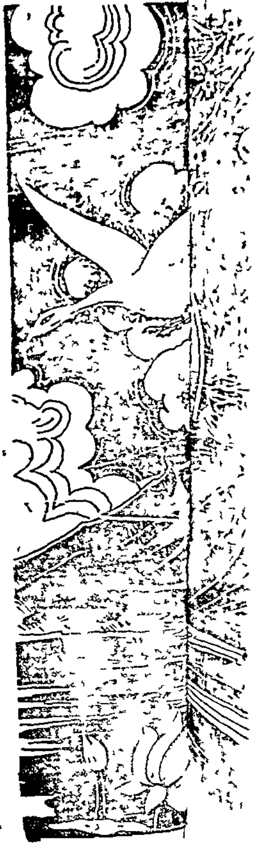
बिटियारानी मधु सी खारी
रीस तुम्हारी केसर-क्यारी
माखन सी तुम चुभती उर मे
चाँद सराखी हो चुँधियारी
मधुर गीत की एक कडी सी
भूल तुम्हे जाती महतारी
लेती है सुधि वहिन न भोली
चातक ने ज्यो स्वाति बिसारी
घर आगन मे रुनझुन करती
थिरको प्यारी हस दुलारी
दूध भरी यह धरी कटोरी
पी लो उठ कर ऐ सुकुमारी
सखी सहेली खडी द्वार पर
पनघट की कर लो तैयारी
गगाजल भर लाना रानो
स्वण कलश ले लो, कर झारी
बिटियारानी मधु सी खारी
रीस तुम्हारी केसर-क्यारी

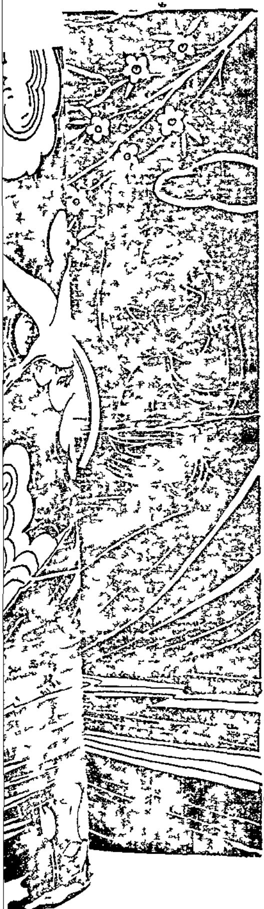
* * *

बाईस

तुम जागो मोहन प्यार
रंगरंगीली चिड़ियां बोली
कौआ बोले कारे
फूल पंखुरियां हँस हँस डोली
रवि ने नैन उघारे
भीनी भीनी गन्ध बही मृदु
मौन हो रहे तारे
उठो लाल जी हँस हँस लेलो
फूलों से रतनारे
पहिन पनहियां अँगना डोलो
नाचो घर के द्वारे
रोम रोम में जादू कर दो
रमो मोहनी डारे
तुम जागो मोहन प्यारे
रंगरंगीली चया बोली
कौआ बोले कार

* * *





तेईस

कौआ मामा आओ
दूध भात रक्खा लल्ला ने
उसको लो खा जाओ

चंदा मामा आओ
दधि माखन घोला लल्ला ने
उसको तुम खा जाओ

चूहे मामा आओ
खीर पुरी सती बबुआ ने
उनको तुम चख जाओ

चिड़िया मौसी आओ
खेल खिलौने लल्ला के जो
उनको तुम ले जाओ

बिल्ली मौसी आओ
दूध मलाई भैया की जो
उसको तुम खा जाओ

* * *

चौबीस

मैं आंख मीचे आ चुपचुप
माखन खाले कोई
मैं आखें मीचे जब तक
चोटी गुंथवाले कोई

मैं आंखें मीचे जब तक
काजल लगवाले कोई
मैं आंखें मीचे जब तक
मेंहदी रचवा ले कोई

मैं आखें मीचे हूं जब तक
बैठ नहा ले कोई
मैं आंख मीचे हू जब तक
पढ ले पोथी कोई

मैं आंखे मीचे हूँ जब तक
पड सो जाए कोई
मैं आख मीचे हू जबतक
वस्त्र पहनले कोई

राजा बेटा रानी बेटी
कहलायेंगे सोई
मैया के अनदेखे ही
सब कुछ कर लगे जोई

* * *





पचीस

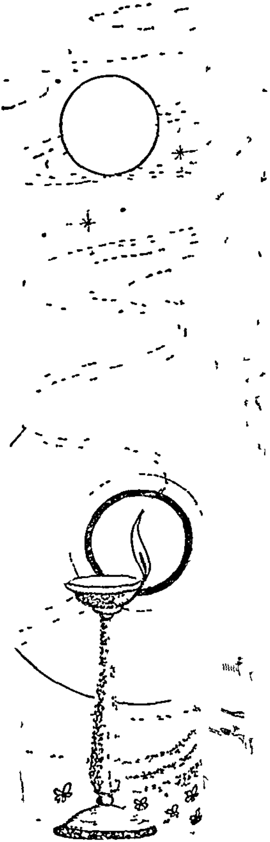
ओ लाल सलोने जाग जाग
आंखो से निंदिया भाग भाग
पछी, डाली पर बोल-बोल
ऊषा पूरब पट खोल खोल

तू भरी कमलिनी फूल फूल
पापी भौंरे को भूल भूल
हो सजग अचानक भूल भूल
गूंजे कल कल से कूल कूल

लहराए तरु की डाल डाल
कोपल छाई हों लाल लाल
तितली मधुमाखी घूम घूम
लें फूलो का रस चूम चूम

ओ मेरे सुत ! मुह खोल खोल
तू घर आंगन में डोल डोल
मीठे मीठे पद बोल बोल
कानो मे मिसरी घोल घोल

* * * *



छब्बीस

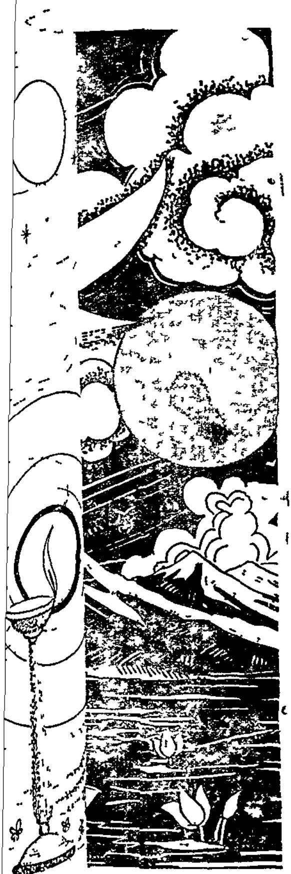
उड गए रेशमी सपने
खुल गए नयन रतनारे
आये जब भोर भुरारे
सूरज कर किरण पसारे

चदा उडु ओट भए सब
रजनी के जो रखवारे
पछी उड चले चहकते
फूलो ने रग सवारे

मैया के मोहन जागे
पलना तू झोका खा रे
आते बयार के झोके
गाते हैं, तू भी गा रे

बादल रग गए निहारो
पत्तो से हिम बरसा रे
उड गए रेशमी सपने
खुल गए नयन रतनारे

•••



सत्ताईस

माखन मिसरी मधुर कलेवा
खालो राजा भैया
पीछे जी चाहे सो करना
बलि बलि जाती मैया

हाथ नही आते हो मा के
लुक छिप कर भग जाते
तुम्हे कलेवा से भी कैसे
बढकर खेल सुहाते ?

लो ताता थैया' नाचो तुम
मधुबालाए गायें
खेलकूद में भी तुमको ये
माखन मिसरी भाय

सुनो, प्यार से मा के मीठे
कर लो दोनो लोचन
न्हाओ खाओ नाचो गाओ,
मा के सोच विमोचन

* * *

अट्ठाईस

उषा कपाट खोल री
विहंगिनी सुबोल री
समीर मंद मंद चल
पुनें खिलें जुही कमल
धुलें नखत विपल विपल
नई प्रभा अमोल री
उषा कपाट खोल री
बहे सरित सरल सरल
उठें लहर तरल विरल
रहे न अंधकार पल
लता, सनृत्य डोल री
उषा कपाट खोल री
कुमार नयन खोल दें
जननि, सहास बोल दें
अमंद सुख अतोल दें
उठे हृदय किलोल री
उषा कपाट खोल री

• • •





छत्तीस

बीत गई रात तात
उठो होगया प्रभात
फूल गये फूल पात
कुज किरण सारे

कल चल छल छल पभात
गुंजत मिल मधुप वात
हरी दूब ओस स्नात
मौन कौन भारे ?

मैया ले दूध भात
बैठी तन मन सिहात
जागो जागो सुमात !
काम में पुकारे

बीत गई रात तात
उठो होगया प्रभात
फूल उठे फूल पात
कुज किरण सारे

* * *

तीस

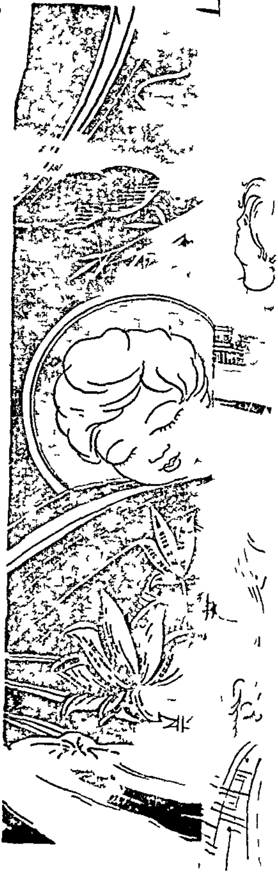
फूलो का न्यारा पलना
ऊषा ने स्वयं सजाया
किरणो की डोरी थामे
वह झूल रहा मनभाया

तितली झोके देती है
मधुमाखी लोरी गाती
कलिया हँस हँस कर उस पर
केशर पराग ढरकाती

मा नयन सफल करती है
शिशु का वैभव अलबेला
माया की सुछबि अमोली
ओठो पर करती खेला

मोहित दुनिया होती है
मा खडी खडी नित हेरे
पलने में भैया झूले
फूलों के साथ सबेरे

● ● ●





इकतीस

उठो सुनयना, जागो रानी
हरी दूब पर मोती बरसे
नभ से निशा सिरानी
उषा झाकती खोल झरोखा
पूर्व दिशा की रानी
फूलो ने सपदा प्राप्त की
किरणो से मनमानी
पलको से सपने धो डालो
अब न रहो अलसानी
इन्द्रधनुष के रगो वाली
आयी तितली रानी
फूलों से कर रही खेल वे
रोम रोम हर्षानी
अब सोने की नही बात है
जगो सुनयना रानी

बत्तीस

उषा चित्रलेखा बन आई
जागो कुँवर कन्हाई
किरणो की तूलों से उसने
ली सोने की स्याही

कही छिटक दी, कही पोत दी
कही कही ढरकाई
आखें खोलो देखो लालन
छटा सुनहरी छाई

नानी ने जो कही कहानी
परियो की सुखदायी
वही उषा ने चित्रित कर दी
उठ देखो चतुराई

फूलो पत्तो पेड़ लताओं
सब पर परियां नाचें
सोने की दुनियां रच डाली
मन को मेरे भाई

उषा चित्रलेखा बन आई
जागो कुँवर कन्हाई

• • •





तेंतीस

मैं गंगाजल लाई
लाला, मैं गंगाजल लाई
चंदन की चौकी पर भरभर
स्वर्ण कलश धर आई
लाला, मैं गंगाजल लाई

नहा चुके पशु पक्षी सारे
नहा चुकी हरियाली
नहा चुकी सोने की काया
वाली उषा निराली

नहा चुकी कुमुदों की माला
क्षीरोदधि में प्यारी
नहा चुकी हंसों की टोली
कमल कुंज प्रतिपाली

तुम भी उठो प्राण सुत मेरे
उबटन कर दे मैया
हँस हँसकर चल करो स्नान लो
आओ कुंवर कन्हैया

* * *

चौतीस

अरुण किरण की डोरी है मो
हर्रसिगार का पलना री
प्रात वायु झोके देती है
झूले मेरा ललना री

तितली के पखो की छाया
मधुमखियो का गुनगुन री
पड गुलाब की पखुडियो पर
झूले मेरा चुनमुन री

कोयल कूक कूक दुलराये
चूकऊक मे ठनगन री
मधुर प्रभाती गौरैयो की
हो उनसे क्यो अनबन री

कमल हाथ मे, कमल पाव में
नील कमल से लोचन री
चद्रबिब छबि लिए हसी में
बाबा के दुख मोचन री

* * *





पैंतीस

मैंया को पलना प्यारा
मैंया को ललना प्यारा
मैंया सुधबुध खो गाती—
'मैंया को ललना प्यारा'

पलने में चढकर सोया
छाती से लगकर रोया
हिचकिया गले मे अटकी
आखो में उमडी तोया

ओठो मे हसी सजोये
मैंया का हृदय बिलोये
पलकें गिर रही उनीदी,
सपने अपार में सोये

जागो मैंया के प्यारे,
जागो ओ नन्ददुलारे।
पछी तरु सरि सर जागे
जागो आखो के तारे

* * *

छत्तीस

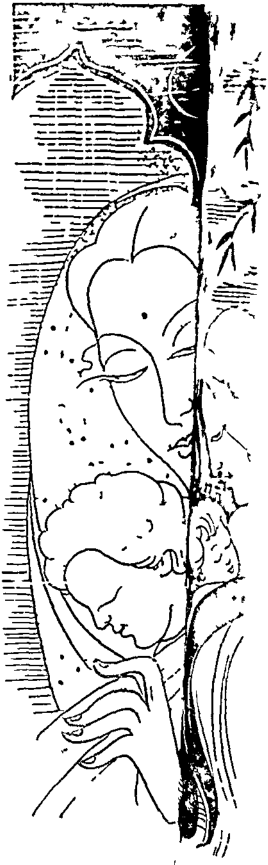
लाल उषा आई लाल
लाल फूल लाई लाल
लाल छटा छाई लाल
लालिमा सुहाई लाल

आँखें मल उठो लाल
सेज छोड़ उठो लाल
निंदिया तज उठो लाल
कर दो मा को निहाल

टेसू के फूल लाल
जिजी के दुकूल लाल
सरिता के कूल लाल
जागो जागो गुपाल

छाया नभ में गुलाल
धरा लाल, फूल लाल
उड़ते वातुल लाल
खोलो पलकें रसाल
लाल उषा आई लाल

* * *





सैंतीस

मैया के मोहन जागो
बहना के बीरन जागो
मनभाये सो वर मागो
कृपा से नेह न त्यागो
किरनों से हिलमिल खेलो
दुख कष्ट विहसते झेलो
विघ्नों को पग से ठेलो
सिर पर पहाड़ को ले लो
तुम बालक हो मतवाले
तुमने सागर मथ डाले
तुमने आकाश उछाले
है कौन तुम्हें जो पा ले ?
मैया के उर के छाले
मौसी के भय के भाले
बहनों के काल कराले
तुमने घर शांत सभाले
तुम जागो रक्षक जग के
तुम जागो साथी मग के
नवनीत जगो पग पग के
तुम पक्ष जगो युग-खग के

•••

अडतीस

मैया ने समय पुकारा
बाबा ने ले पुचकारा
निंदिया से लो छुटकारा
जागा जब नदी किनारा
सोनेवाले सब जागे
निशिचर पताल को भागे
जागे सो जग में आगे
बुन रहे गम के धागे
जागे सब सखा सहेली
जागीं बेलें अलबेली
सोती अब कहीं चमेली
रवि वचन-नदी उँडेली
जागरण जगा कण कण में
कुलबुल जागी तन मन में
बुलबुलें जगी वन वन में
जगमगी ज्योति गगन में
जागो तुम लाल सुहाये
जागो मंजुल मनभाये
प्रत्यूष किरण दुलराये
माँ झूम प्रभाती गाये
नदिया लहरों से छाये
पतवारें पवन फिराये
तुम जगो हृदय हुलसायें
मैया के भाग सवाये

* * *





उन्तालीस

उठा चन्द्रकिरणों का मेला
तारों की बरात बीती
निशा वधू की विदा हो चली
उषा ओस आसू पीती

दूब हरी सुस्मृतियों से है
फूल प्यार से रँगे भले
उठ कर देखो लाल सलोने
लँगड़ाती क्यो पवन चले ?

क्यों इतना कचन बरसा है
नदियो नालों ढालों में ?
क्यो खगकुल मे कुलकुल जागी
क्यो भय व्यापा ग्वालों में ?

प्रभा बुलाती तुम्हें द्वार पर
कुजें वन में टेर रही
मोती मणिमाणिक की दुनियां
इठलाती है यही कहीं

वेणु बजाते नये बांस हैं
रेणु उड़ाती मरु माया
धरा प्रभाती गाती है मृदु
नाच रही तरु तर छाया

●●●

चालीस

दृग धोती है उषा फूल के
सपने धोती अरुण किरण
रजनी की माया को हरते
द्रुत बयार के शीत चरण

तम का जादू दूर कर दिया
प्राची के पतवारो ने
मुकुट प्रभा का धरा शीश पर
उज्ज्वल क्षितिज कगारों ने

वन की वल्लरियो ने बाँधी
सतरगी व दनवारें
झुकी जा रही प्यार भार से
लचकीली नव द्रुम-डारें

कचन कलश लिये कधे पर
देखो कौन बुलाती है
खोलो अलसाये नयनो को
छनछनकर ध्वनि आती है

वारे प्यारे दृग रतनारे
मैया को मीठे खारे
कानो मे स्वर पडे प्रभाती
नाचो ताता थैया रे

• • •



इकतालीस

माखन की मधुराई
अमित छवि छाई
न नेह दुराई

कचन किरण नहाई
अमित सुघराई
असित मनभाई
न दूर पराई

अनजानी गगन से आई
धरा पर छाई
पवन पुरवाई
हृदय मे समाई
न दूर दुराई

मैया प्रभाती गाई
सुता को सुनाई
नयन अलसाई
विहँस मुसकाई
थिरक उठ धाई
न भूले भुलाई

माखन की मधुराई
अमित छवि छाई
न नेह दुराई
सुता सुखदाई
अपूव लुनाई

• • •

बयालीस

जगो लाल मुनिया मेरे तुम
जगो अगूठी कँगना
जगो प्यार मनुहार हठीले
मुझे काम मे लगना

जगे तुम्हारे भगे अँधेरा
किरण नाचती आयें
घर के दो मरीचिमाली तुम
तुमसे प्राण जुडायें

कचन बरसाओ रो रो कर
हँस हँस फूल खिलाओ
द्रुम वल्लरियो को हर्षाओ
उर की दाह मिटाओ

युग युग की मनौतिया मा की
पल पल सफल बनाओ
वरदानो की वर्षा से घर
आँगन रतन लुटाओ

* * *





तितालीस

किस मैया की तान सुरीली
धरा गगन मे छाई
किसने मीठी मजु प्रभाती
कुज भवन में गाई

किसके बोलों ने मधु घोला
किसने वीन बजाई
किसने थिरकथिरक कर माखन
चाखा, मिट्टी खाई

मनुहारो से भरा कौन है
गीतो से सरसाया
कौन प्यार की दुनिया मे
खोया रहता मनभाया

अमर कौन मैया की गाथा
अमर पूत की गीता
अमर सदा हैं राम हमारे
अमर हमारी सीता

अमर कुसुम कलिया अधविकसी
अमर चादनी रातें
अमर पूत की हँसी फूटती
अलबेली सी बातें

* * *

चवालीस

रत्नदीप बुझ गये गगन के
उषा खोल पट झाकी
प्रभा क्षितिज से उतर खड़ी
धर हँसी अधर पर बाँकी
द्रुमदल जगे कमल मुसकाये
नदी सिहर लहराई
सलज कोपलो ने समीर से
स्फूर्ति अनोखी पाई
प्राची स्वर्ण मुकुट ले आई
उपहारो की रानी
पीताम्बरी हुई जग काया
खोलो नयन शिवानी
गगाजल भर लाने को तुम
कचन कलश उठाओ
सखियो को ले साथ प्रभाती
गाती पनघट जाओ
कर्म कुशलता की प्रतिमा तुम
घर में स्वर्ग उतारो
आलस को बुहार फेंको छवि
किरणों को विस्तारो

• • •





पालना खण्ड





एक

किसका है पालना तुम्हारा
किसकी है यह डोरी
झुला रही ये किसकी बाहें
कोमल गोरी गोरी

सोने का पालना हमारा
रेशम की है डोरी
झुला रही ये माँ की बाहें
कोमल गोरी गोरी

किसकी मीठी मीठी मादक
हैं ये सुन्दर लोरी
स्वप्नलोक मे ले जाती हैं
खींच खींच बरजोरी

माँ की मीठी मीठी मादक
हैं ये सुन्दर लोरी
स्वप्नलोक में ले जाती जो
खींच खींच बरजोरी

• • •

दो

कंचन कलश द्वार पर सोहैं
रत्न जडाऊ पलना घर
अमित भाग जननी जसुमति के
चर्चा फैली डगर डगर
कुंवर कन्हैया आगन घिरके
किलकारी से गूंजे घर
सुख सपदा पांव तर लोटें
रिद्धि सिद्धि सब करतल पर
उसे कौन लो भुक्ति मुक्ति की
गंगा जिसके पैरो तर
मुह भर भर कर भाग्य सराहें
उस मैया के सिद्ध अमर
उसकी लोरी मे मधु बरसे
उसकी आंखा में जलधर
उसकी चरण धूलि अजन कर
पायें हम भवसागर तर

* * *





तीन

हमने तो जाया वीरों को
इन पलनों ने पाला
हमने सौंप दिया धरती को
इनने उन्हें सभाला
ठोक-पीटकर डाल दिया तब
इनने उन्हें झुलाया
वीरो के बनने मे पलनों
का है भाग सवाया
हमने दूध पिलाया, इनने
उनमे जीवन डाला
हमने नीचे फेंका, इनने
ऊपर सदा उछाला
इन पलनो का ऋण तलवारों
से न चुकाया जाता
इन पलनों से नही मौत का
जीवन का है नाता

•••

चार

द्वार हमारे पेड़ कदम का
उस पर पलना डाला
झूले मेरी मुन्नी रानी
झूले मेरा लाला
पवन झुलाए, भौंरे गायें
तितली चौंर डुलायें
मधुमाखी गुनगुन कर आती
जाती रस बरसायें
कचन किरणें चूमे पग तल
सध्या उन्हें सुलाये
सेत चाँदनी वस्त्र रेशमी
लाकर नित्य उढाये
प्रकृति बनी है धाय सलोनी
तारे मोती माला
द्वारे घर के पडा पालना
भीतर हुआ उजाला

• • •





पाँच

झोंके लेता है जब पलना
माँ का मन लहराता
अंतर का मृदु भाव तभी
लोरी बन कर वह आता

गीत इसी पलने से बरसे
नाच इसी से आया
ममता का सोता जीवन में
इसने ही लहराया

युग युग से लालों का पलना
माताओं का धन है
पलने में पड़ झूल-झूलकर
हुआ सुकोमल मन है

प्राणो के मोल खरीदें
जननी पलने की रातें
उनकी चर्चा में बीतें
सरदी गरमी बरसातें

• • •

छह

इस पलने में लछमन झूले
इस पलने मे राम
इस पलने मे दाऊ झूले
इस पलने मे श्याम

इस पलने मे वीर शिवाजी
झूले शूर प्रताप
इस पलने मे स्वय त्रिलोकी
झूले आकर आप

इस पलने को कौशल्या ने
सहित उछाह झुलाया
इस पलने पर माँ जसुदा ने
माखन खूब लुटाया

इस पलने पर वीर जननिया
वार चुकी जग माया
इस पलने के गीत करेंगी
माताएँ नित गाया

इस पलने से धन्य हमारे
घर आँगन हैं सजनी,
इस पलने से दिन सोने के
औ' चाँदी की रजनी

• • •



सात

तुम झूलो लाल सलोने
पालना आज मनमाना
बाबा के हाथों फिर यह
अब नहीं पालना आना

तुम झूलो तात सुहाने
पालना आज मनमाना
नाना के हाथों फिर यह
अब नही पालना आना

हैं नदी किनारे के ये
दो जजर रूख पुराने
बाबा नाना के रहते तुम
झूलो सुत मनमाने

तुम झूलो लाल सुहाने
पालना आज मनमाना
मैया के हाथों शायद
बन सके न तुम्हें झुलाना

* * *

आठ

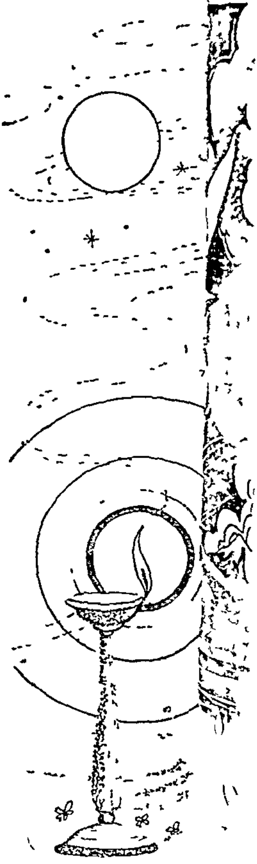
सोने का पलना है री
हैं जड़े रत्न बहुतेरे
ले रही आज रुपे की
डोर छोरों तक फेरे

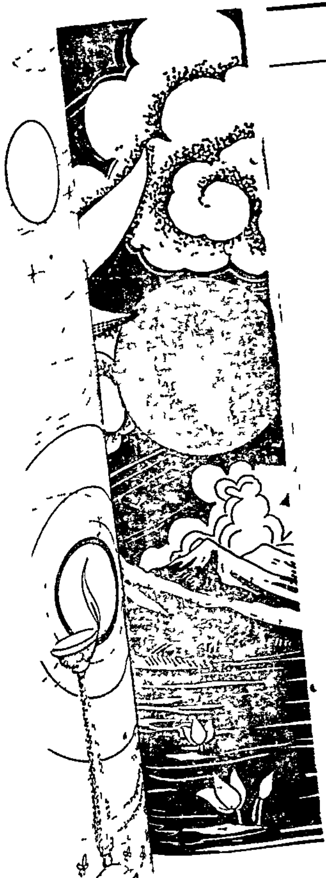
हो जाय अमर ये झोंके
हो जाय अमर यह झूला
चाहे मैं रहूं कि जाऊं
तरु रहे हमारा फूला

पलने की ममता माया
तन मन मे आज समाई
यह रोम रोम कनकन मे
विद्युत धारा बन छाई

ऐसा है जी मे आता
वह जग है मुझे बुलाता
फिर नही जहां से कोई
है लौट यहा पर आता

●●●





नौ

मेरा लल्ला कगन है
मेरी मुन्नी है चूडो
इनके रहने पर मुझको
चढते न ताप औ जूडी
इनकी बोली मधुघोली
मैं उसके रस की प्यासी
छवि इनकी भूख मिटाती
मैं इनके बिना उपासी
सखिया पगली बतलातीं
मैं सचमुच ही पगलाती
क्षण एक न इस जोडी को
जब देख सामने पाती
मेरी पूजा का मन्दिर
आबाद इन्हीं दोनों से
मेरी महिमा का मधुवन
सरशाद इन्हीं दोनों से
पालना सदा ये झूलें,
मैं बलि-बलि इन्हें झुलाऊ
ये रूठ रूठ कर भागें
मैं लाड-लडाती जाऊ

• • •

दस

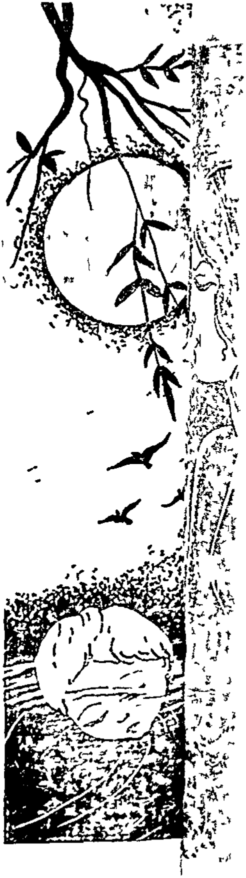
आज तरैया उगी गगन में
चाद गोद मे मेरी
मुझ सी भाग्यशालिनी हो
इस वसुधा मे बहुतेरी

सागर में सिवार तो मेरी
गोद कमल विकसाये
मेरे ऐसे भाग जगत में
हो घर घर मनभाये

सबके घर मे पडे पालने
झूलें राधारानी
आगन मे हो दूध भात की
दधिकादो मनमानी

उससे अधिक और क्या चाहूँ
हाड मास से तन को
रत्नों स हो भरी गोद सुख
सिन्धु डुबाता मन को

• • •





ग्यारह

मैया ने झूला डाला
भैया ने झूला डाला
झूले फूलो सा लाला
घर घर मे मधु बरसे री
उर उर मे रस सरसे री
सन्ध्या उदास हरसे री
गुह गुह किरणों की माला
लाई नभ से शशिबाला
बीती दुख रजनी काली
फली ऊषा की लाली
स्वप्नों की झिलमिल जाली
सुख निंदिया में वह पाला
घर भर का मजु उजाला
पुण्यो का दीप जगाया
पापो की धो दी काया
मन पख खोल मडराया
रच रच नूतन छविशाला
फूला गुलाब गुललाला
मैया ने झूला डाला
बहना ने झूला डाला
झूले फूलो सा लाला

* * *

बारह

हिंडोला झूल [लाल] हमारे
हँस हँस मौसी, उसे झुलावे
मामी मां पुचकारे

झोका एक बुआ का झूलो
भैया कुँवर सलोने
झूल दूसरा लो नानी का
फिर झूले सब होने

दादी का भी झोका ले लो
चूम रही जो मुख है
यह जीवन कांटों का थाला
जिसमे दुख ही दुख है

बचपन भर ही मां के मोहन
तुम्हे सुलाए लोरी
फिर पग पग पर आने को हैं
घड़ियां माहुर घोरी

* * *





तेरह

ऊंचा डाला पालना
भूले मेरा लालना
उसके भूले मे दुख भूले
उसके भूले अंतर फूले
रतन जड़ाया पालना
भूले मेरा लालना
उसके भूले स्वर्ग मिले री
उसके भूले पुण्य खिले री
फूल सजाया पालना
भूले मेरा लालना
उसके भूले से मधु बरसे
उसके भूले सै जी हरसे
स्वर्ण मढाया पालना
भूले प्यारा लालना
उसके भूले उगे जुन्हैया
उसके भूले फूले मैंया
किरण रंगाया पालना
भूले छोटा लालना
उसके लिए मनौती मानी
सेज यज्ञ की वेदी जानी
तब यह पाया पालना
भूले जिस पर लालना

* * *

चौदह

भूलो मेरे किशन कन्हैया
भूलो मेरे लाला
ऐसे भूलो, लजा जाय शशि
करें न नखत उजाला
फूलों की माला पहनाये
गाये सध्या-बाला
भूलो मेरे किशन कन्हैया
भूलो मेरे लाला
ऐसे भूलो ललक उठे यह
मा के उर का थाला
जलपरिया मिल तुम्हें झुलायें
भूलो मेरे लाला
सौदामिनि की छटा तुम्हारे
आनन पर लहराये
झोंके देने नील गगन से
उतर जुन्हैया आये
भूलो मेरे रतन कन्हैया
भूलो बांके लाला

* * *





पन्द्रह

रेशम झूला पड़ा हमारे
झूल झूल ऐ राजदुलारे
झूल झूल सुख नींद बुला ले
फूल फूल कर फूल खिला ले
ऊल फूल दुख मूल हिला ले
झूल झूल मम राजदुलारे
रेशम झूला पड़ा हमारे
बारी बारी झूलें भैया
झूले बहिना उए जुन्हैया
दिन भर तुझे झुलावे मैया
झूल झूल ऐ राजदुलारे
रेशम झूला पड़ा हमारे
झूलें बादल झूलें सावन
झूलें मोर कूक मनभावन
पुरवाई के झोंके झूलें
बेलें झूल झूल कर फूलें
झूल झूल तू राजदुलारे
रेशम झूला पड़ा हमारे

•••

सोलह

कुमुद सरो मे फूले री
लल्ला पलना झूले री
गाम्रो गाम्रो लोरी रे
मधुबोरी म्रो भोरी रे
मधु बरसे फूलों से री
मधु बरसे झूलो से री
गाम्रो ऐसी लोरी रे
म्रो शशिवदन किशोरी रे
मधु किरणो से बरसे री
मधु कनकन में दरसे री
गाम्रो रच रच लोरी रे
गोरी चद्रकिशोरी रे
रोम रोम मधु छाये री
मधु से विश्व नहाये री
गाम्रो सब मधु लोरी रे
भर भर कुसुम कटोरी रे

* * *





सत्तह

आँखो से निंदिया प्यारी
निशि बीत चली है सारी
मैया थक गई तुम्हारी
तुम सोते नही मुरारी
पलने मे नीद न आती
गोदी मे नीद न आती
लोरी सुन नीद न आती
सुन कथा न निंदिया आती
पलके सपनो से खाली
किसने अँखिया धो डाली
छाती पूरब मे लाली
सो ले कर लाल उताली
सूरज के सँग हँस देना
फूलो सँग खिलखिल जाना
चिड़ियो के साथ चहकना
भौरो से हिल मिल गाना

•••

अठारह

मेरे घर राम दुलारे
मेरे घर कृष्ण मुरारे
मेरे घर राधा झूले
फूलों का पलना डारे
मेरे घर परियाँ नाचें
मेरे घर जगमग तारे
मेरे घर फूल खिले रे
मेरे घर चाद उगा रे
मेरे घर तुतली बातें
मेरे दर रुनझुन सारे
घर घर में किलकारी है
घर भर मे रुदन भरा रे
तुलसी ठाकुर पूजा सब
मैं फिरती उस पर वारे
मुझको कुछ नही सुहाता
मैं जग के बसू किनारे

•••





उन्नीस

सोने के तार जडाये पालना
चादी के पत्र मढाये
रत्नो के छत्र धराये पालना
जगमग ज्योति जगाये
कमल कली विगसाये पालना
जूही के फूल खिलाये
धरा मोद से छाये पालना
प्यार के हार गुथाये
किरण कुंज हरषाये पालना
माखन मधुर लुटाये
चरण चरण पर गाये पालना
गीतो के ढेर लगाये
रास लास सरसाये पालना
हास विकच वरसाये
सोच विमोचन भाये पालना
भाग बडे जिन पाये
वरदानो से छाये पालना
शाप की ताप छुडाये
घर आगन हुलसाये पालना
मातु तात मन भाये

* * *

बीस

आसमान मे पड़ा पालना
झूलें चाद सितारे
झिलमिल झूलें हिलमिल झूलें
मिल मिल झूलें प्यारे
रजनी मे है भाग सुनहरे
पलना जिसके द्वारे
युग युग से झोंके ले लेकर
सुख बरसाये न्यारे
रूप किरण मे रँगा पालना
कंचन कलियों छाया
रानी निशा विमुग्ध हेरती
वह मधु मोहक माया
झूलें भ्रमर झुलायें देविया
भर भर मोद उछालें
गीत पालने के मधु भीने
अवसर रहते गा ले

• • •





इक्कीस

दुर्लभ है पालना जगत मे
दुलभ रेशम डोरी
जिसमें झूलें कृष्ण कन्हैया
झूलें राधा गोरी
झूलें भाग अभागों के औ
अधर रंगे रसघोलें
मैया के मन के बधन वे
धीरे धीरे खोलें
सभी कनौडे इन पलनो के
जिनमें शैशव झूले
जिनमें जुही केतकी चम्पा
बेला गुडहल फूले
भाति भाति के रग रग मे
महके इनमे मोती
इनसे लूट लूट कर माला
वसुधा नित्य पिरोती

•••

बाईस

पलनो मे निंदिया आये
पलनो मे रीस रिसाये
पलनो ने फूल खिलाये
पग पग मोती बरसाये
पलनो ने चाद चुराये
पलनो ने नखत दुराये
पलनो ने रत्न लुटाये
पलनो ने प्यार जुटाये
पलनो ने हास हँसाये
पलनो ने शोक रुलाये
आशा पलनो को भाये
अभिलाषा जो हुलसाये
पलनो ने गीत गवाये
पलनो ने नाच नचाये
पलनो ने पाव रगाये
पलनो ने ओठ रचाये
पलनो ने अमर भुलाये
पलनो ने अचल चलाये
पलनो के भाग सवाये
वे धन्य भूल जो पाये

●●●





तेईस

नंद बबा घर पडा पालना
झूलें कृष्ण कन्हैया
झोंके दे दे हँसें गोपिका
विकसे जसुदा मैया

ऊँचे ऊँचे पेंग झुलायें
मधुर मधुर कुछ गायें
पलने की महिमा का उत्सव
ब्रज म सभी मनायें

साथ साथ पलने के झोके
लते कुंज लताए
मुग्ध सभी पलने की श्री में
क्या सर क्या सरिताए

धन्य धन्य कह पथिक सराहें
भूल भटक जो आयें
गोकुल गाव भाग को पूरो
जिसमें सब सुख छायें

* * *

चोबीस

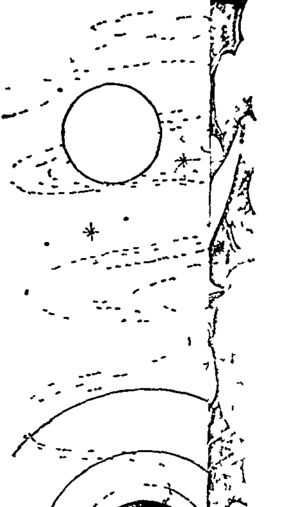
पलना झूले फूल खिलें री
पलना झूले भाग भरें री
पलना झूले चाद उगे री
पलना झूले धुंध भगे री

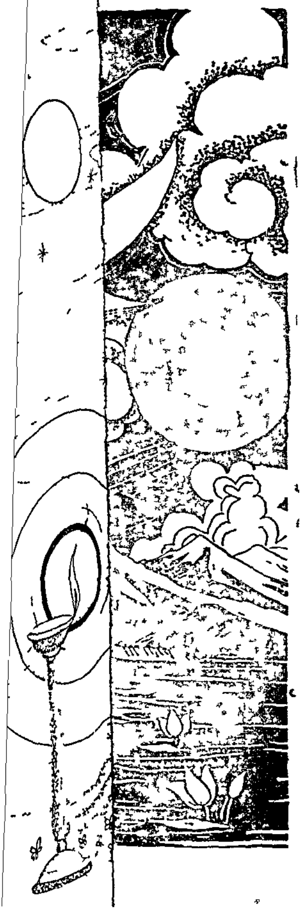
पलना झूले सब दुख भूलें
पलना झूले हरती धूलें
पलना झूले रैनि न आये
पलना झूले ज्योति जगाये

पलना झूले तनमन फूले
पलना झूले कष्ट निमूले
पलना झूले धरती गाये
पलना झूले प्यार पगाये

पलना झूले कोयल कूके
पलना झूले पुण्य न चूके
पलना झूले कचन बरसे
पलना झूले कनकन हरसे

* * *





पच्चीस

सुख दुख की गाठें जीवन की
इन पलनो ने खोली
तुतली सी बतिया पर कैसी
सरल सुरुचि रस घोली

मणि रत्नो से बडी धरोहर
मिली जिन्हें बिन मागे
धन्य धन्य पलनो को जिनके
भाग अचानक जागे

उन्हें अंक में भर लेने को
आतुर सुरबालाए
किन मनौतियो से पाये शिशु
पलना जिन्हें झुलायें

पूजा अर्चा करें न उनकी
जगनिवास जगतारे
सहज भाव से उन्हें परोटें
पलना तो भी प्यारे

●●●

छब्बीस

पलनों की आरती उतारें
माताए गरबीली
पलनो पर नित पुष्प चढ़ायें
बहुए छैल छबीली

पलनो पर शुचि प्यार बरसता
धरा अधर अम्बर से
पलनो पर सब रत्न उछालें
मुक्त मनो से कर से

कवियो की वाणी मे पलनो
ने इन्द्रासन पाये
उनकी महिमाशालिनि गाथा
ऋषि मुनियो को भाये

कर्म धर्म पलनो की छाया
मे लगते सुखदायी
उनके प्रक्षालन को सुरसरि
उतर धरा पर आयी

* * *





सत्ताईस

शिवशंकर की जटा पालना
झूलें मोद मनायें
हिमकन्या लहराती गाती
उससे उतर न पायें
झूलें बरस बरस युग युग वे
प्रलय कल्प तक झूलें
अचरज मानें देख देव नर
अपर संग सब भूलें
शैल स्तब्ध सागर चिन्तातुर
अम्बर समझ न पाये
जटाजूट का तज निवास कब
गंगा भू पर आये
पलने का जादू कुछ ऐसा
जन्हुसुता पर छाया
जगततारिणी का गुरु गौरव
बिसर गया मन भाया

* * *

अट्ठाईस

राधा झूलें गोपी झूलें
झूलें रास रचैया
कुजों कुजो पडे हिंडोला
झूलें चद जुन्हैया

वशीवट जमुनातट झूलें
कदम करील झुलायें
वृदावन गोकुल बरसाना
झूले, पेंग बढायें

जमुना की लहरे मतवाली
उभर तटो से आयें
झूलो के सँग सँग वे झूलें
अपनापन बिसरायें

नदिया झूले नया झूलें
झूलें ब्रज के वासी
कणकण अणुअणु झूल उठे सुर
झूलें कोटि अठासी

* * *





उन्तीस

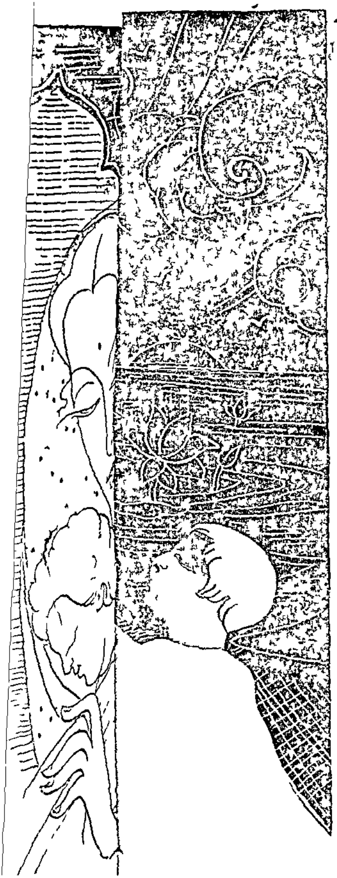
माता कौशल्या ने झूला
डाला राम झुलाये
सरयू तट उपवन मे जग के
भाग उतर कर आये

छाया मोद गोद हरषायी
नभ ने रत्न लुटाये
तरु वल्लरियो ने हँस हंस कर
किरण कुसुम बरसाये

सृष्टि हो गई रग रगीली
दृष्टि हो गई गीली
सोना बरसी उषा हो गई
सध्या कटकटीली

अमर हुआ वह दिन, वह झूला
त्रेता युग कब बीता
हुआ न माओ का झूले से
उर वन उपवन रीता

* * *



इकतीस

लोरी के मिस अमृत पिलाया
पलने मे ले पाला
फौलादी सुभाष को माँ ने
देश प्रेम में ढाला

पलने मे पी लिया प्यार जो
बूंद बूद रंग लाया
सेनानी आजाद हिन्द का
चमका, देश जगाया

मा के मोह भरे पलने की
गाई जग ने गीता
हुआ पराजित शत्रु अन्त में
पलने का धन जीता

बजने को भारत सपूत
ललचाये देव गगन के
शिशुओं को पालना झुलाते
जहाँ कर वलय खनके

•••

बत्तीस

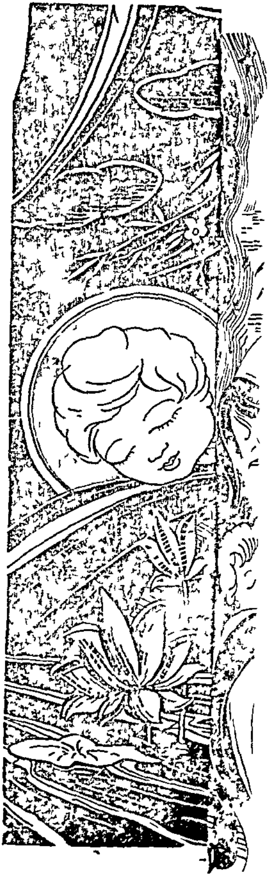
धन्य प्रयागराज की धरती
जहाँ जवाहर झूले
धन्य धन्य आनंदभवन वह
सुमन सुरभि मन भूले

मा सरूपरानी ने डाला
अरमानों का झूला
झूला उस पर रत्न जवाहर
भाग जगत का फूला

उस झूले पर गर्व सभी को
जिस पर इन्द्र लुभाये
भारत मा के भाग बड़े थे
जिसने रत्न झुलाये

युग युग उस पर किया करेंगे
सतत निछावर सपने
झूले जिस पर लाल जवाहर
किलक पुलक कर अपने

●●●





तेंतीस

देशबन्धु को झुला पालना
हुआ कृतार्थ हमारा
उसने दीप सजोया, जननी
भू को पार उतारा

उसकी प्रतिभा-कली खिली
पलने मे भूल निराली
पलने में मा के सरक्षण
की मर्यादा पाली

त्याग तपस्या की नव दीक्षा
पलने में ही पाई
पलने मे ही देशभक्ति की
जग ने ज्योति जगाई

याद करेंगी उसे सदा हम
भारत की ललनाए
पलने को देगया सुगौरव
उस सा शिशु सब पाय

* * *

चौंतीस

तिलक झुलाये पलने ने
पलने मे झूले गाधी
पलने मे तूफान पले
पलने मे जन्मी आधी

घूमे क्रातिचक्र पलने मे
बदली दुनिया पल में
धरा गगन छू सकी नये तट
उभरे गहरे जल मे

पलनो का सौभाग्य सदा ही
रहा अनन्य अनूठा
जीवन के दुख दर्द निवारे
रूठा जन मन तूठा

पलनो को खा सकी न ईर्षा
नही द्वेष की छाया
पलनो की पावन काया को
पाप न डसने पाया

• • •





पैंतीस

पलने पर सुख स्वप्न हमारे
झूले थे बचपन में
उसकी प्यारी प्यारी यादें
लहरें लेती मन में

जी होता है डाल पालना
कोई हमें झुलाये
मधुर कण्ठ से कोई लोरी
गा गा नित्य सुलाये

माँ कह कह हम किलक उठें, वह
उर से पुलक लगाये
नाच उठे मन हो मतवाला
रोम रोम हर्षाये

संध्या चूनर लाल ओढ
पश्चिम गवाक्ष से आये
पलने पर वरदान छिड़कती
निशा सहज सकुचाये

• • •

छत्तीस

वह दिन धन्य हुआ धरती पर
जिस दिन लाल झुलाये
वह दिन धन्य हुआ जब घर में
उतर चन्द्र रवि आये

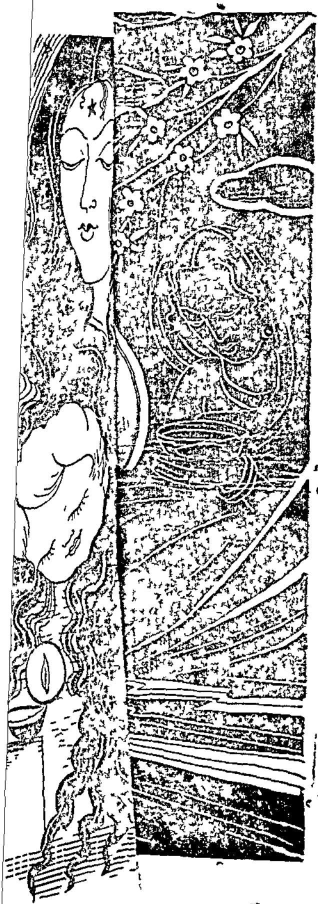
सोना चांदी मढ़ा पालना
झूल और झुलाये
रत्नों की बौछार पवन ने
बरसी, पुष्प गिराये

धन्य धन्य कह उठे वृद्ध-जन
नयन हर्ष जल छाये
धन लक्ष्मी की उसे चाह क्या
जिसने ये सुख पाये

गाय गगन, मगन हो झूमे
भ्रमरवृंद अनुकूले
सागर में दो खिले कमल मन
फूले, कनवन फूले

• • •





सैंतीस

यह झूला है धन्य कि जिस पर
भगतसिंह था झूला
भारत का मतवाला यौवन
इस झूले पर झूला

इस पर पौरुष झूल अपना
इस पर विक्रम झूला
इस पर साहस झूला, झूला
इस पर शौर्य समूला

बांके वीरों का यह झूला
बल विक्रम का झूला
महारथी इस पर झूले, इस
पर सेनानी झूला

जब तक है यह धरा, व्योम में
जब तक रवि शिशु फूला
तब तक है अक्षुण्ण-कीर्ति यह
बलिदानी का झूला

•••

अड़तीस

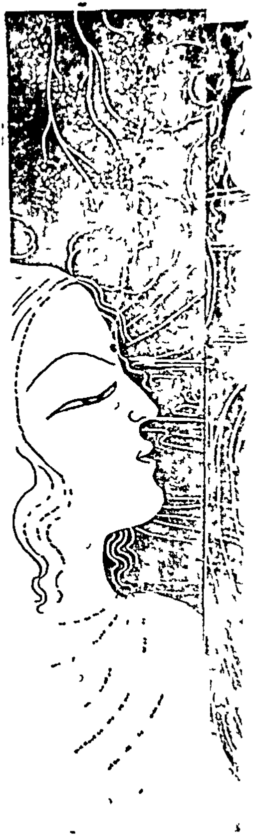
मणि कांचन संयोग आज है
झूलो, मातु झुलाये
झूलो राम लखन मेरे तुम
यह दिन बहुरि न आये

पवन वसन्ती, प्यार वसन्ती
धरा वसन्त सुहाये
कण कण पर बरसी वसन्त श्री
वृन्त मंजरी छाये

झूलो दोनों भैया हिलमिल
लता वितान तनाये
फूलों का है बना पालना
झूलो सुत मनभाये

वासन्ती छाया मे झूलो
माया जहा लुभाये
जहा रमण करने परियो का
दलबल नभ से आये

* * *





उन्तालीस

लाड प्यार का पलना है यह
झूलो इस पर सीता
झूलो रानी बेटी हँस हँस
झूलो मा की गीता

चन्द्रकिरन, तुम झूलो मेरी
झूलो सुता सुनीता
इस झूले से हराभरा घर
इसके बिन सब रीता

चौंक चौंक मा झुला रही री
रो गा गा भयभीता
यह सौभाग्य क्षणिक है रन्नो
समय जा रहा बीता

कहा मिलेगा यह गुरु गौरव
यह सुहाग मनचीता
अरमानो से भरा पालना
झूलो प्रभा पुनीता

* * *

चालीस

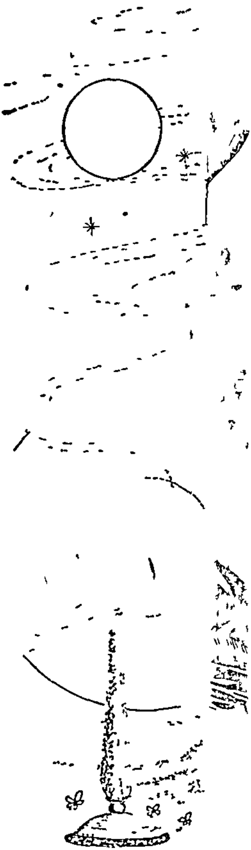
इस झूले पर ही झूली थी
झाँसी की वह रानी
जिसकी बाँकी तेग वही
लासानी कीर्ति कहानी

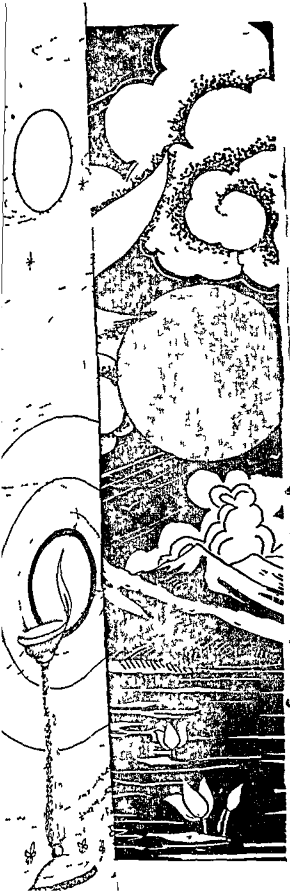
दूध छठी का याद कराया
जनरल जो अभिमानी
छक्के छूट गये वीरों के
उतर गया सब पानी

लन्दन तक हिल गया उठी
भारत की रुद्ध जवानी
लक्ष्मी दुर्गा बनी, बेतवा
बनकर वह अरगनी

झाँसी के खँडहरों बीच है
उसकी चिता सुहानी
रानी है अब नहीं किंतु
झूले की अमर कहानी

• • •





इकतालीस

अचल धन मा का पाकर
यह पलना धन्य बना है
रेशम के भाग जगे हैं
धागों में प्रेम सना है
झोकी मे हृदय बिलोये
खोये जो इधर निहारे
अनमोल धजा पर इसके
दुनिया तन मन धन वारे
काया से जन्मी मा की
पलने की रोचक माया
अंकों में वह न समायी
धरती ने जी हुलसाया
युग युग पलनो के गौरव
से नित्य सहज गर्वीला
घर घर में रसी बसी है
पलनो की अनुपम लीला

•••

बयालीस

अन्तरिक्ष में पड़ा पालना
झूलें चाँद सितारे
ऋभु विभु झूलें शनि गुरु झूलें
झूलें सुरगण सारे

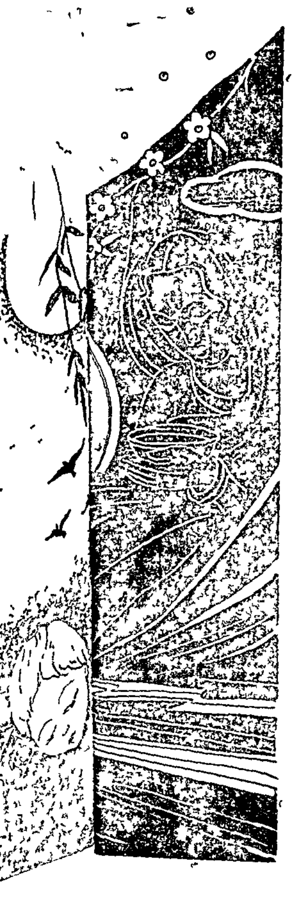
झूलें बारह राशि, सप्त ऋषि
झूलें झिलमिल करते
नक्षत अठाइस स्वाति मृगशिरा
झूलें निशि तम हरते

मघा विशाखा श्रवण धनिष्ठा
हस्त कृत्तिका झूलें
मूल रोहिणी पूर्वाषाढ़ा
सुरगण सब झूलें

किरणें झूलें, ऋतुएं झूलें
शत संवत्सर झूलें
इन्हें झुलाती सृष्टि मातु के
कुसुम कलेवर फूलें

• • •





गृह-गुञ्जन खण्ड





एक

माँ, सनबिछुआ लाऊं री
सखियाँ रचरच मेंहदी आई
मैं नेउर लटकाऊँ री
कर में कंगना पग में छमछम
पायलिया छमकाऊँ री
मा सनबिछुआ लाऊँ री

फूल कटैया के चुन लाऊँ
गजरा गूथ बनाऊँ री
काली बबरी, ओढ सुरंगी
चूनर मैं सज पाऊँ री
मा सनबिछुआ लाऊँ री

श्याम सखा सँग माँ आगन में
भावर सात फिराऊँ री
चिहुँक उठे तू सजल नयन में
नंद बबा घर जाऊँ री
माँ सनबिछुआ लाऊँ री
सखिया रचरच मेंहदी आई
मैं नेउर झमकाऊँ री

* * *

दो

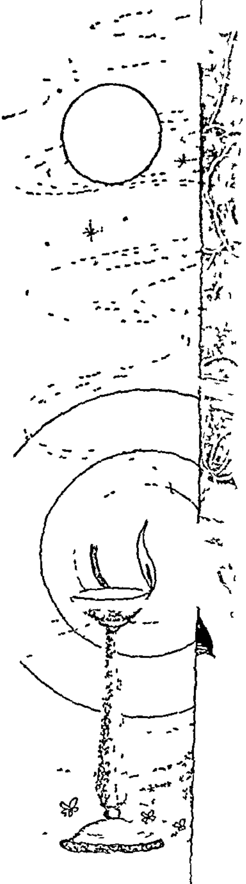
सोने में सुख, रोने में रस
हँसते बरसें मोती
मैं अपनी रनों से
पिछले कर्मों का मुह धोती

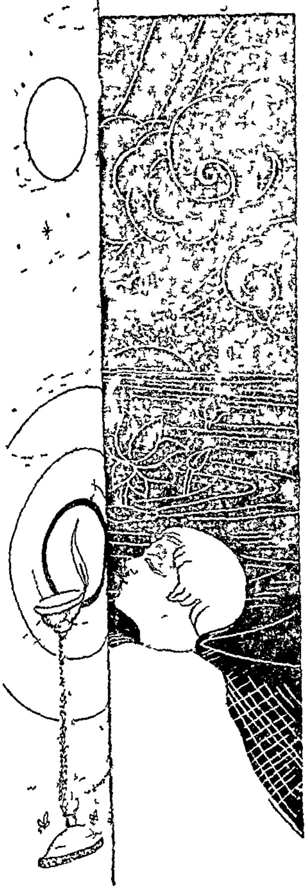
उसने दीप सजोया मेरे
चिर अँधियारे मन में
उसने मधुरस सींचा मेरे
झुलसे रीते तन में

उसकी छाती की धड़कन में
गिनते गिनते सोती
पुण्य कौन से फले अजाने
सोच सोच मैं खोती

जनम जनम के कलुष खो गये
युग युग के दुख भूले
धन्य भाग घर के, शकुन्तला
सी दुहिता जहँ झूले

* * *





तीन

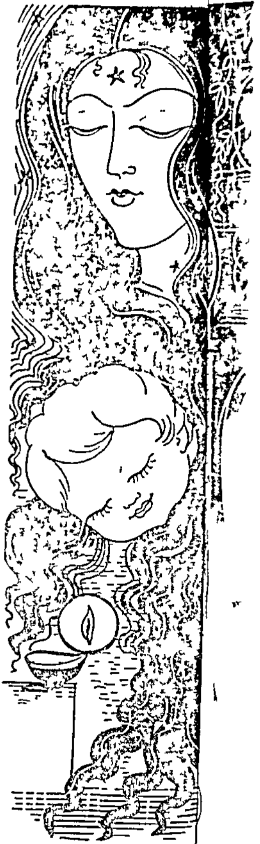
डाट डपट को पी जाती है
उत्तर कभी न देती
आँख उठाकर नही ताकती
जो दो सो ले लेती
चतुराई का मम न जाने
सरला भोली भाली
भाई बहनो पर जी देती
घर भर की उजियाली
कब सोती जगती कब लगती
सबको एक कहानी
शुचिता सी पावन है दुहिता
लाड प्यार मधु सानी
हसते फूल बिखेरा करती
रो बरसाती मोती
कैसा घर वर लिखा सोच मैं
रोती नैन भिगोती

•••

चार

मुझको सेज न भाती तेरी
धरती मुझे सुहाती
फिर तू क्यों कर रार खीचती
मैया पकड सुलाती
ऊपर देख चांद-तारे सब
सोये हैं धरती पर
कहां खीझती उनकी अम्मा
जगमग हैं सब सुदर
मुझे सिखाती है तू इतना
स्वय सीखती थोडा
मा यह बता कौन विद्या धन
तू ने पढ पढ जोडा
मेरे गुन सब औगुन कहती
है तू कितनी भोली
अपनी भूलें भूल गई सब
नानी ने जो खोली

* * *





पाच

मेरी मुनियां कली जुही की
घर आगन मे फूली
महक उठी उर की सब क्यारी
मैं तो सुधबुध भूली
पीछे पीछे फिरे डोलती
थामे आचल मेरा
'मा तू जहा वही मैं' कहती
देती घर का फेरा
रो रोकर वह मधु ढरकाये
हँस हँस विष पी जाये
मेरी रन्नो चद्रकला सी
उर मे ज्वार उठाये
ममता के बधन मे बाधा
उसने सारे घर को
अभिशापो की लिपि को मेटा
लाई पुण्य प्रवर को

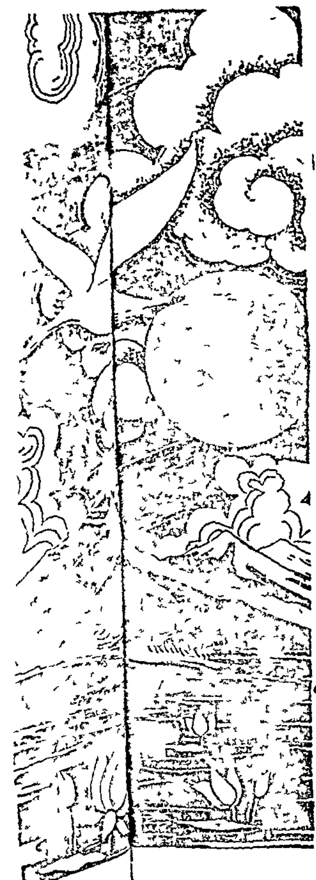
* * *

छह

बुला दिया थाली में चंदा
आकर देखो बेटा
किन्तु न छूना उसे हाथ से
है वह जल में लेटा
यहीं पास कर आया है वह
धूल भरी धरती पर
पानी से बाहर न बढ़ेगा
लेटेगा पानी पर
चाहो तो बातें कर लो तुम
चाहे कहो कहानी
किन्तु न कहना—'चंदामामा
आओ तजकर पानी'
तुम सा ही मानी है वह भी
रूठ जायगा पल में
कितनी बहुत बलैयाँ लीं जब
लेटा आकर जल में

•••





सात

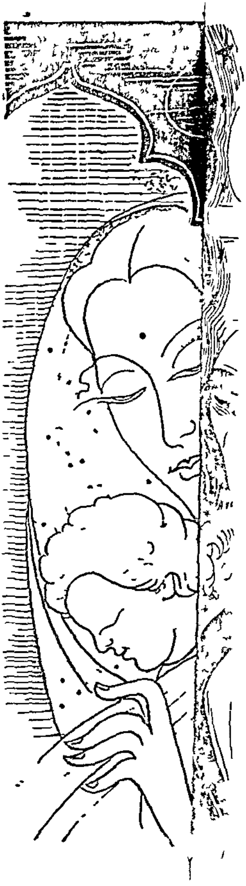
मीठे को खारा बतलाती
खारा कहती मीठा
मैया तेरी कौन मूढ़ मति
मधु को कहती सीठा
मैं रोऊँ तो तू हँसती है
हँसता हूँ तो रोती
कोप करूँ तो खिलखिल उठती
नाचूँ तो दृग धोती
जननी, कह किससे जा पूछूँ
यह अनबूझ पहेली
रास रीस में हास त्रास में
किस औघड़ की चेली
तेरा मन कैसा वैसा है
कौन ज्ञान तू सीखी
मधुरी मधुरी लोरी गाती
रहती तो भी तीखी
तेरा प्यार मुझे डसता है
तेरी मार सुहाती
तेरे गीतों भरी वेदना
तो भी सबको भाती

●●●

आठ

खारी नींद न मुझे सुहाये
चिकुटी काटे खटिया
थप थप करने को जी हुलसे
गीली गीली पटिया
रहने दे तू दूध बतासा
लट्टुश्रा डोरी ला दे
मैया मुझे छोड दे जीजी
को तू थपक सुला दे
कौश्रा मुझे बुलाता है माँ
खरहा जी को भाता
कछुए से मन मेरा मिलता
तेरा घर न सुहाता
बन-बीहड में जा रमने को
होता है जी मेरा
फल फूलों से ईश्वर जाने
बैर पडा क्यों तेरा

* * *

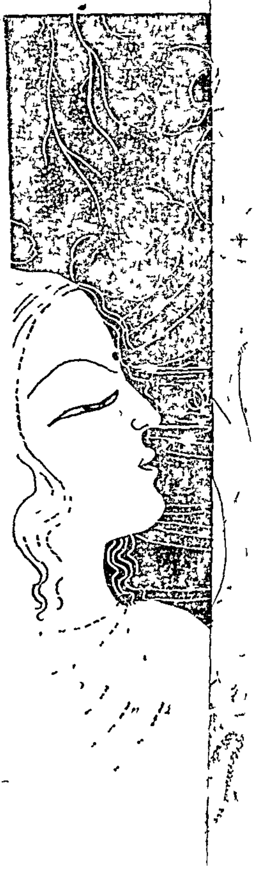




नौ

चद खिलौना पाया
मैंने चद खिलौना पाया
बचपन में रोई थी कितना
पास न तब वह आया
माँ बापू ने पीता दे दे
कितनी वार बुलाया
आज अचानक मेरे घर में
आया वह मनभाया
आगन मे छवि बरस पडी
उर मे आनन्द समाया
क्यो न हँसू नाचू गाऊ मैं
हसता जब वह आया
मेरा चदा मधुर सलोना
टोना बनकर आया
चद खिलौना पाया
मैंने चद खिलौना पाया

• • •



दस

नित उठ प्रभु के दर्शन पाती
मैं अपने आंगन में
कभी किलक मे कभी पुलक में
कभी रुदन क्रीडन मे
राम लखन की जोड़ी मेरे
वसुधा का धन मेरे
कौन पुण्य जो नही फले हैं
जीवन-तरु में मेरे
जोगी, व्रती, तपी, संन्यासी
सभी भाग्य यह चाहे
यह तो कैसे कहूं किन्तु
सब मेरे पुण्य सराहे
इतना सब देकर क्या लेंगी
मुझसे सती भवानी
आह यही, दुर्बल आशंका
ले सशंक मन मानी

•••



ग्यारह

घर फूली फुलवारी
मेरे घर फूली फुलवारी
सीता जुही कमलिनी कृष्णा
रज्जो विकच निहारी
कहते हैं सब हस हस अब तो
मौलसिरी की बारी
घर फूली फुलवारी
मेरे घर फूली फुलवारी
अरुण गुलाब, प्रभात मोगरा
किंशुक नवलविहारी
देख देख कर नित्य सिराती
ये अँखियाँ रतनारी
घर फूली फुलवारी
मेरे घर फूली फुलवारी
नीरू नीरज, रेणु रसभरी
हरसिंगार हरप्यारी
कमल कुमुद शोभा छवि भारी
छाया केशर क्यारी
घर फूली फुलवारी
मेरे घर फूली फुलवारी

• • •

बारह

आज कौन तिथि आली
वैसे तो ये दिन बीते कर
पल पल की रखवाली
पूनो की थी रात सुहानी
छायी थी उजियाली
घर मे चन्द्रकला सी मैंने
पाई थी निधि—लाली
एक तुम्ही जानती सखी हो
किन दुखडो मे पाली
छोटी सी वह कली प्रेम की
प्रिय की आकृति वाली
पूरा एक साल होता है
उनकी सुन्दर थाती
लेकर बैठी किस आशा में
पथ पर पलक बिछाती
इसे अभागी कहने को
जी होता कभी न मेरा
इसकी ममता ने प्राणो को
सभी ओर से घेरा

• • •





तेरह

मैया ला तू तत्ता पानी
हिम शीतल जल छूने से तो
मरतो मेरी नानी
मैया ला तू तत्ता पानी

साबुन ले आ, सोडा ले आ,
ले आ क्रीम पुरानी
टलकम पाउडर ले आ अपना
जिससे देह सुखानी
मैया ला तू तत्ता पानी

केसर के उबटन से पीली
हुई देह यह सारी
ठंडे पानी से नहलाकर
करती उसकी ख्वारी
मैया ला तू तत्ता पानी

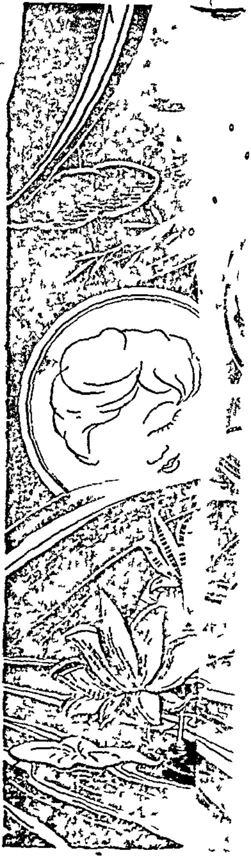
सुन पायेंगे दादा ऐसे
तू मुझको नहलाती
तो कितना कुछ तुझे कहेंगे
क्या यह सोच न पाती
मैया ला तू तत्ता पानी

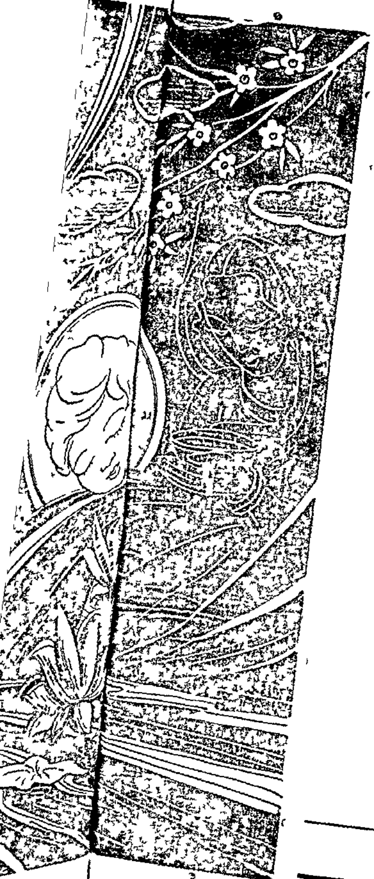
●●●

चौदह

मुझे साझ से नीद न आती
मा, तू क्यो दुख माने
कितने प्यारे नभ के तारे
यह तू कैसे जाने
चदा घुल घुल बातें करता
कहते फूल कहानी
आखमिचौनी खेला करती
मा परियो की रानी
बहता जाता जो गगाजल
कल-कल स्वर से गाता
कहता—देखो, उतर गगन से
मुझ मे चांद नहाता
सचमुच मा चदा ही चदा
लहरो मे उतराते
जा पाते हम दोनो भाई
तो बटोर ले आते
घर आगन जगमग हो उठता
हँसता कोना कोना
बहिन भूल जाती कुछ दिन को
सारा रोना धोना

●●●





पन्द्रह

मैं आज बनी सीता रानी
लव कुश से गोद भरी मेरी
गगा के भाग मिले मुझको
भीषम से गोद हरी मेरी

मैंने अशोक को जन्माया
अब शोक न मेरे पास कही
मैंने प्रताप को प्राप्त किया
सताप नही, अभिशाप नही

मैं वीर शिवा की जननी हूँ
मैं कृती जवाहर की माता
अपने शिशुओं के विक्रम से
उर मे मतवालापन छाता

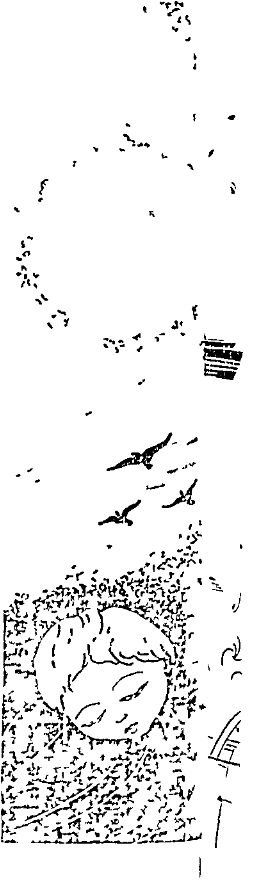
उलटें पुलटें उन बातो ,को
जिनसे वे निज को पहचाने
व शूरवीर हो धीर व्रती
फैलें घर घर उनके गाने

* * *

सोलह

रेशम की बनवाई री
आज झगुलिया आई री
आसपास दो चांद टंके हैं
बीच बीच मे तारे री
उडने को तैयार मोर दो
बैठे पख पसारे री
रेशम की बनवाई री
आज झगुलिया आई री
चिलक चिलक करते हैं सलमें
थिरक थिरक जब नाचे री
उन लटपट चरणों की गति में
मैया को सुख साचे री
आज झगुलिया आई री
सुत को सहज सुहाई री
चदा पहने सूरज पहने
पहने नभ के तारे री
चम चम चमके काम जरी का
माँ आरती उतारे री
आज झगुलिया आई री
मैया बलि बलि जाई री

● ● ●





सत्रह

आ मेरी आखो के अजन
आ प्यारे प्राणा के रजन
आ आ ओ ! मेरे दुख भजन
दौड दौड मा के गृह गुन्जन
तेरे बिन काया सूनी है
धधक रही भीतर धूनी है
मैं अपनापन सहज समेटे
राह देखती लेटे लेटे
आते जाते दिन अलसेटे
किन्तु न आता क्यो तू बेटे
तेरे बिन काया सूनी है
धधक रही भीतर धूनी है
घर घर लौट दिवाली आई
नई छटा वसुधा पर छाई
निखरा नीर गई फट काई
लौटा मेरा नही कन्हाई
तेरे बिन काया सूनी है
धधक रही भीतर धूनी है
नीचे धरती ऊपर अबर
बन कर फैल सके मा का उर
खोज तुझे पाऊ जो नटवर
तो लू जुडा प्राण ये जो भर
तेरे बिन काया सूनी है
धधक रही भीतर धूनी है

* * *

अठारह

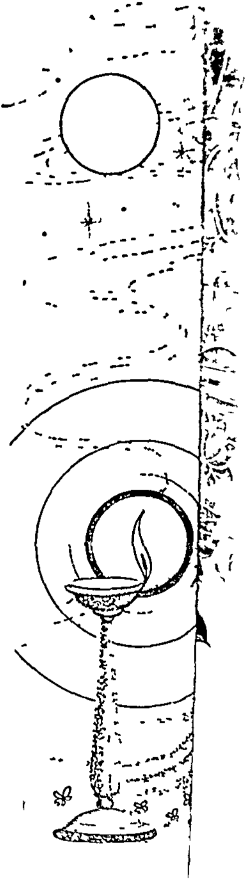
मुझे न चंदा भाये, मैया
मुझे न चंदा भाये
सदा रहे वह आसमान में
कभी न भू पर आये

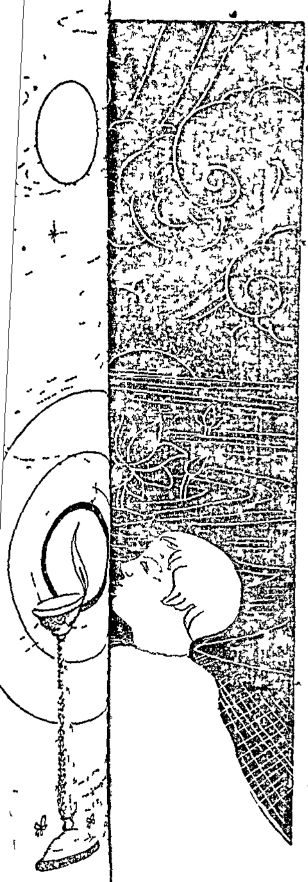
वह तारों के साथ खेलता
मेरे साथ न खेले
मैं कहती हूं आये तो वह
जो चाहे सो ले ले

क्या जाने कब किसने कैसे
नीचे उसे बुलाया
दर्पण में आ बैठा चुपचुप
कैसा तो मनभाया

प्यार भरी थपकी को मां की
उसका जी ललचाया
आसमान को छोड़ इसीसे
उतर गोद में आया

• • •





उन्नीस

एक देश है जहा चन्द्रमा
की किरणो का पानी
फूलो के प्यालो मे भर भर
पीती तितलीरानी

गाती दिन भर गीत रसीले
मा, जो तू सुन पाये
भूल जाय सब ये मधु लोरी
जो तू जब तब गाये

मा, चल चल तू साथ हमारे
उस हीरो के घर मे
मूगे, मोती, माणिक फैले
जहा सुरम्य डगर में

जहा उषा के रग से रगती
साडी बहनें न्यारी
वह सपनो की दुनिया कह तो
मा कितनी है प्यारी

* * *

बीस

अनहोनी होकर रह जाये
जब वे नाचें घर में
बाहर नाचें, भीतर नाचें
नाचें डगर डगर में

छमछम नाचें, थमथम नाचें
नाचें सांझ सवेरे
आंगन में वे फिरें नाचते
ठुमक ठुमक लें फेरे

रोयें गायें भर पिचकारी
जी की जलन मिटायें
सने धूलि में घर आयें तो
अँसुआ नन गिरायें

नाच कूद पर बलि जाये मा
बाबा रतन लुटायें
हाथ जोड कर देव मनायें
ये दिन फिर फिर आयें

***





इक्कीस

राज्यश्री की शोभा न्यारी
होती साझ सवरे
रोने के मिस गाया करती
देती मा के फेरे

ऊँ ऊँ करती भ्रां भ्रां करती
ई ई कर विष बोती
हाथ हिलाती, पाव डुलाती
मचल मचल दृग धोती

बलि बलि जाती मा जब रूठी
रानी वह बन जाती
खाती कौर न पीती पानी
दूध दही ढरकाती

मा बाबा दोनो की प्यारी
लाड लडैती बेटी
घर मे रह उत्पात मचाती
बाहर धूल लसेटी

* * *

वाईस

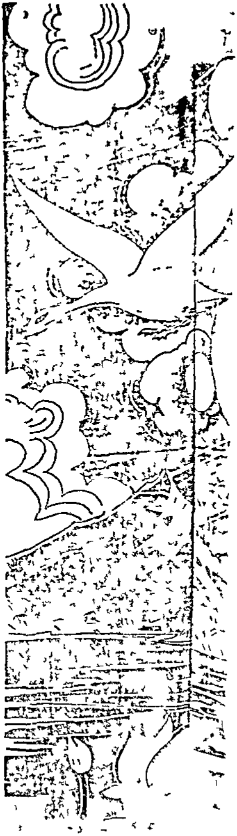
वह दूध भात सी सुन्दर
वह ओस बूंद सुकुमारी
वह दुहिता रुचिर गुलाबी
वह कंचन किरण हमारी

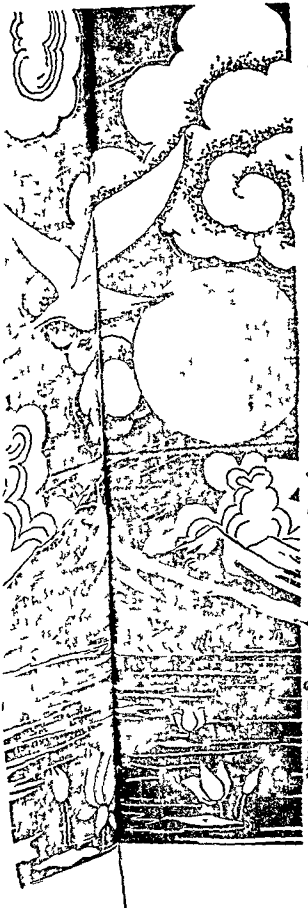
वह धन्य धरा को करती
जब चलती पलक झुकाये
दुखिया के आंगन में भी
वह वर परमेश्वर लाये

वह रो रो मोती झरती
वह हँस हँस फूल बिछाये
वह थिरक थिरक जब नाचे
तब जानो शुभ दिन आये

दुहिता बिन वरदानों की
घर में बरसात न भाती
मैया के मनमंदिर में
वह अक्षय ज्योति जगाती

* * *





तेईस

है फूल हमारी सीता
है चाद हमारी सीता
उसके बिन लगता मुझको
दुनिया का वैभव रीता

मेरी वह मथुरा काशी
मेरी रामायण गीता
केसर-कपूर मे बोरी
मेरी वह लली पुनीता

वह मधु ही मधु ढरकाती
खाती वह खट्टा-तीता
आखों से मोती झरती
मेरी वह सुता सुनीता

उसके आनन पर जमकर
रह जाती हँसी सभीता
है फूल हमारी सीता
है चाद हमारी सीता

•••

चौबीस

मेरे घर सीतारानी
मेरे घर शेखर राजा
मेरे घर हेम सलोना
मेरे घर चंदा आ जा

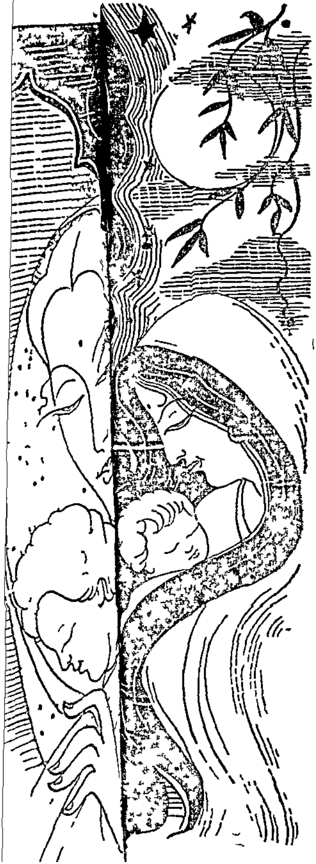
मेरे घर कृष्णा गाती
मेरे घर बजते बाजा
मेरे घर कुंवर कन्हैया
मेरे घर चंदा आ जा

मेरे घर लल्ला रोये
तू नभ में व्यथ विराजा
मेरे युग युग के वीरन
मेरे घर चंदा आ जा

मैं फूल थाल भर लाई
मैं लाई भर कर लाजा
चुनमुन के प्यारे मामा
मेरे घर चंदा आ जा

* * *





पचीस

मा तेरे हाथो में मधु है
मेहदी व्यथ रचाती
तेरे हाथो की थपकी से
मीठी निंदिया आती

मा, तू हलके हाथो से जब
निंदिया को दुलराती
मीठे मीठे सपनो की बिछ
सेज सुहानी जाती

मा तेरी लोरी मे मादक
नशा कौन सा जाने
जिसकी तानो में खो जाते
हो तन मन दीवाने

मा, उस मीठी दुनिया मे मैं
क्या कुछ भूल न जाता
तो भी तेरा प्यारा मुखडा
उर से दूर न जाता

* * *

छब्बीस

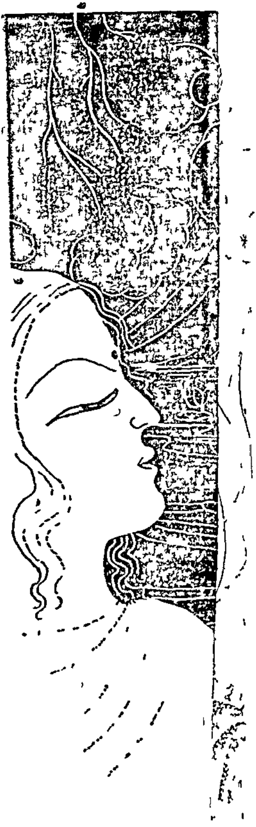
दाल भात का दधिकाँदो है
दूध दही की कीच
घर आगन मे स्वर्ग हमारे
दो लालो के बीच

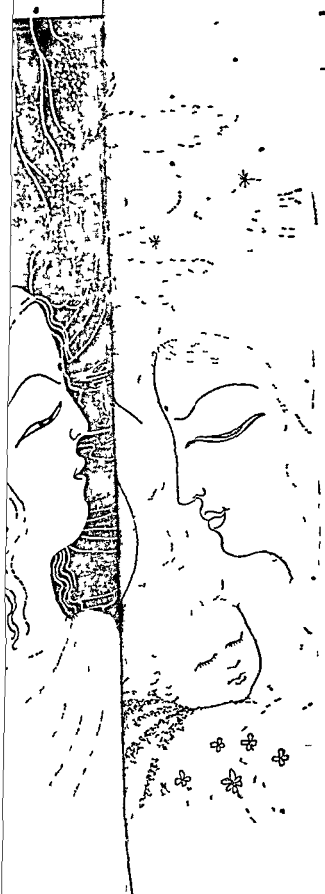
रूठकर मचल पडे जब एक
छेडता अपर मन्द मुस्कान
न जाने दुख का सुख का कौन
हृदय मे उठता एक उफान

टीस या रोस भरा तूफान
हृदय को मथ जाता अभिराम
सलोनी सी कुछ कहती आह
धडकता लेती हूँ उर थाम

रहे यह अमर हमारा स्वर्ग
रहे यह अचल हमारा भाग
रहे माता का मन्दिर बना
हृदय मे रह सुलगती आग

• • •





सत्ताईस

किलकारी तुतली बातें
हँस उठीं चाँदनी रातें
रोना, धोना, गिर पड़ना
आँखों की नित बरसातें
हीरा मोती, पन्नों का कुछ
मोल न इनके आगे
बंधन इनका दृढ बहनों
ये कोमल कच्चे धागे
अरमान न रक्खें बाकी
संग थिरक-थिरक कर नाचें
बचपन की मेंहदी से फिर
बूढे हाथो को राचें
चूमें वह धूलि जहाँ पर
बचकाने पैर पड़े हैं
सब तीर्थ वहा बसते हैं
मुक्ता मणि वहाँ जड़े हैं
मैया के स्वर्ग सलोने
बाबा को काबा काशी
इन बच्चों के हाथो से
कटती है यम की फांसी

●●●

अट्ठाईस

मैया, तू पत्थर से काढी
हाड मास से बनी नही है
तू पत्थर से काढो
पी-पी क्रोध बढी है जो जो
दूध न तू न पाया
इसीलिए तो रोम रोम मे
रोप अनोखा छाया
दाल भात कुछ नही जुडा था
दुख ही तू ने खाया
वही मुझे कुढ कुढ देती है
कर कर आज सवाया
तो भी मेरा मन कहता है
चरण चूम लू तेरे
तेरे अचल की छाया में
मेरे शाप कटे रे
पत्थर ही रहना, तू आसू
बनकर मत बह जाना
तेरे कठिन कोप मे ममता
का है मृदुल खजाना

• • •





उन्तीस

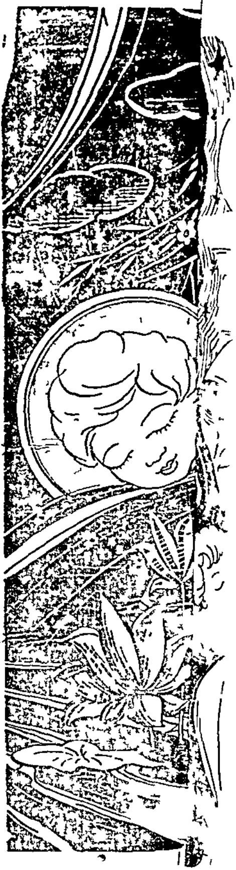
बिटिया की कोमल बाहें
बेले का हार बनाऊँ
लेकर गोदी में बैठू
मैं उसको थपक सुलाऊ
कितना मीठा रोना है
सिसकी कैसी अलबेली
धरती पग कैसे रच रच
मेरी वह चारु पहेली
निशि दिन वह रास रचाती
गीतों से कोयल लाजे
पैरों में पायल उसके
रुनझुन रुनझुन कर बाजे
मेरी राधारानी संग
अनगिन गोपी छबिशीला
नित निशदिन साझ सवेरे
रचती वे नव नव लीला
मैं देख देख हर्षाऊ
गाऊ मैं उसकी गीता
वह मेरी विभा सलोनी
वह मेरी सुता सुनीता

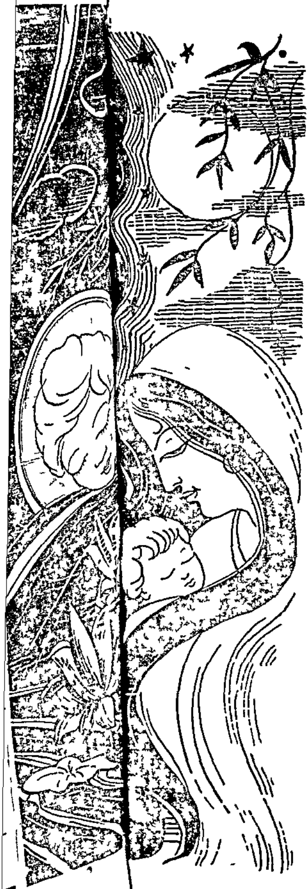
• • •

तीस

याद मुझे आती हैं अपने
बचपन की वे बातें
याद मुझे आते हैं वे दिन
वे सांझें वे रातें
जब पलना था, मैं थी औ थे
मा के चुम्बन प्यारे
दूध-भात माखन मिसरी
बिखराती सांझ सकारे
जब थी मेरी सखी सहेली
चदा सी मुस्काती
जब मा के ओठों पर हम सब
बिजली थी चमकाती
हिलमिल कर, गलबाही देकर
तातायेई नचती
दिन में हम दस बार रास रच
थी फिर भारत रचती
आज हमारे घर में करती
राज हमारी बेटी
कभी बैठ कर मोती गुहती
कभी भभूत लपेटी
दोहराती गिन गिन मामो वह
मेरी सारी बातें
मेरे बचपन की दर्पण वह
वही दिवस वे रातें

● ● ●





इकतीस

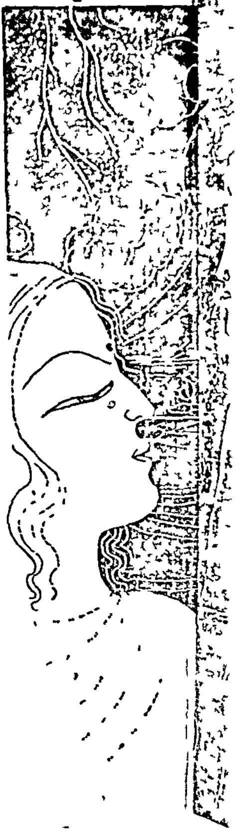
लाखो मनौतिया मानी
व्रत नेम अनेको साधे
मदिर मस्जिद गिरजो मे
जा देव सभी आराधे
अचल धन तब यह पाया
चचलपन खोकर तन का
अरमान न कोई बाकी
अब रहा हमारे मन का
इसके हँसने में होती
तन की सब दूर बलाए
इसके रोने में गगा
जमुना की लहरें आए
प्राणो मे इसे छिपाकर
रख लेने को जी होता
बहता रहता है तो भी
आशकाओं का सोता

• • •

बत्तीस

सखी री मैंने बंदर पाला
इसे देख लेता, सो कहता
घर का दूत उजाला
जो मैं करती सो यह करता
मैं गाती यह गाना
मेरे आंचल को यह खींचे
मुझको नहीं सुहाता
मैं चंदा सी जग उजियारी
यह कोयला सा काला
तो भी दुनियां मुझे सिहाती
कह कर मेरा लाला
जब तक वे घर लौट न आते
तब तक यह घर मेरा
उलट पुलट कर कर देता है
भूतों का सा डेरा
हँस देते हैं आकर, पर वे
मैं अपने पर रिसती
आठों पहर अकेली इसके
उत्पातों मे पिसती
आओगी तब तुम देखोगी
मेरा यह नंदलाला
इतना नटखट है पर मुखडा
कैसा भोला भाला
सखी री मैंने बंदर पाला

• • •





तेंतीस

इस नटखट की बातें देखो
मूंछ पिता की खींचे
मैया की यह चोटी नोचे
बाबा के दृग मींचे
तो भी सबके चुंबन पाये
पाये अमित असीसें
इससे कोई कहे न कुछ भी
मुझ पर सबकी रीसें
भैया मेरा होता है पर
मुझे जलाता डोले
मैं तो मीठे मीठे बोलूं
यह विष ही विष घोले
इसे बड़ा बल अम्मा का है
जो कुछ इसे न कहती
जैसे धरती सब सह लेती
तैसे वह भी सहती
कहता मुझे न लायेगा यह
बुला ससुर के घर से
इसका मनचाहा कर दूंगी
जैसे मैं इस डर से

• • •



चौतीस

खेले आंख मिचौनी लाला
खेले आंख मिचौनी
कजरारी अखिया हैं उसकी
सुन्दर श्याम बरौनी
मैया की वह आखें मूदे
दौड बुआ की मूदे
मन की सारी चिंताओ को
चपल पगो से खूदे
उसके साथ खेलती
नानी-दादी बच्ची बनकर
उसके साथ खेलती मौसी
लाड प्यार मे सनकर
उसके साथ खेलती मामी
मामा तन मन भूले
छनछन पर खिल खिलकर उठते
उनके मन अनुकूले
खेले आख मिचौनी लाला
खेले आंख मिचौनी
कजरारी अखियां हैं उसकी
सुन्दर श्याम बरौनी

•••



पैंतीस

भैया चला ब्याहने
बहना राई नोन उतारे
देवी देव मनाये गिन गिन
पथ के संकट वारे
चंदा सो तू लाना दुलहिन
भैया के दुख टारे
स्वयं दिया बत्ती सब कर ले
घर के काज सँवारे
लक्ष्मी सी हो भाग्यवती वह
सरस्वती सी पावन
सीता सी हो जग की गीता
रति सी हो मन-भावन
उसके आते नंदन कानन
फूल उठे पल भर में
पारिजात की माला सी वह
महके सारे घर में

* * *

छत्तीस

कानो मे कँगना डाले
पायल लटकाये कर मे
किंकिणि पैरो से बाधे
वह नाचे सारे घर मे

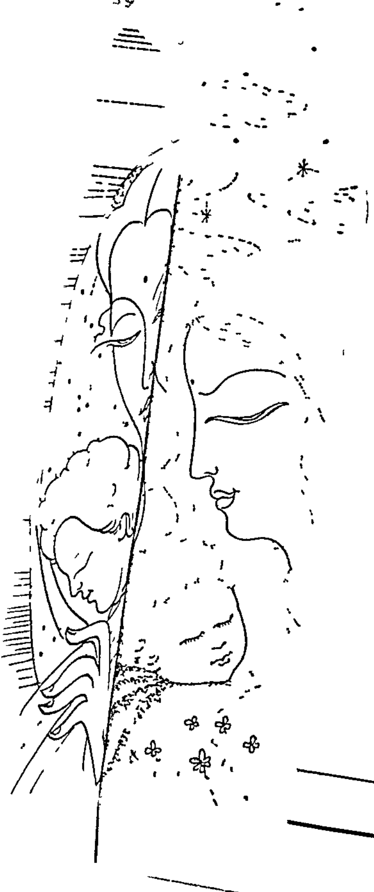
मेरी वह राजदुलारी
भोली भाली सुकुमारी
मैं उसके मुख पर वारी
तन पर उसके बलिहारी

वह कुसुम कली सी कोमल
तुतला तुतला कर बोले
मैया के मृदु मानस मे
मिसरी की डलिया घोले

वह कहती 'थथुले दाती'
मैं सुन सुन प्राण लुटाती
लखती जो वही सिहाती
वह छुनुन मुनुन जब आती

* * *





सैंतीस

हरिद्वार है घर में मेरे
घर में मेरे काशी
घर में मेरे पुरी द्वारका
मथुरा हैं सुखराशी

वृन्दावन गोकुल प्रयाग, सब
द्वार द्वार पर मेरे
गगा, जमुना सिंधु नर्मदा
मुझको रहती घेरे

होली और दिवाली रहती
सदा हमारे घर मे
सुन्दर सुन्दर ऋतुएं आती
है प्रत्येक पहर मे

देवी और देवता आते
दर्शन को घर मेरे
जहां हमारे शिशु हिलमिल
कर लेते हैं चकफेरे

• • •

अडतीस

चाद उगा है छत पर मेरी
तारे घर मे चमके
बिजली तो कोने कोने मे
निशि वासर ही दमके
फूल खिले हैं द्वारे-द्वारे
महक बस गई मन मे
इसीलिए तो नही समाती
हूँ फूली इस तन में
मेरी कथा मे विधना ने
जो मोती बरसाये
उनसे मा का महिमामय पद
मुझसी रकिनि पाये
मैं कौशल्या और यशोदा
से भी हूँ बडभागी
ममता की चारों दिशि मेरे
कैसी यह दव लागी

• • •





उन्तालीस

ध्यान किया सूरज का मैंने
घर में चदा आया
मैंने मागा था शकर को
घर गणेश को पाया
घर में एक उजाला करता
मगल करता दूजा
मैं करती हूँ दोनों हाथों
से दोनो की पूजा
माताओं मे अग्रगण्य मैं
ललनाओं मैं आगे
बाध रहे हैं सभी ओर से
मुझे स्नेह के धागे
लख सौभाग्य सिहातीं मेरा
सती, रमा, इन्द्राणी
किन शब्दों में भाग सराहूँ
मूक हो रही वाणी

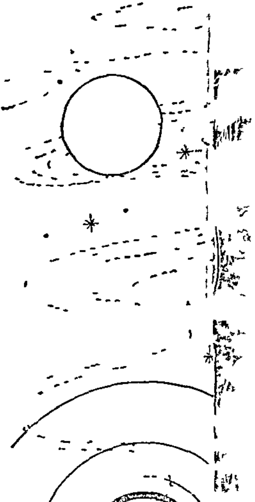
• • •

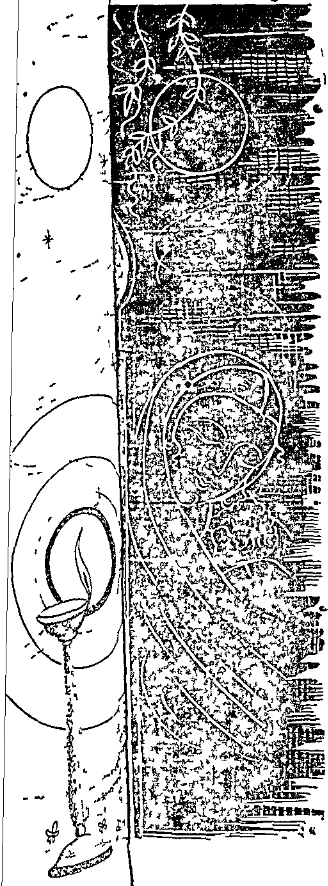
चालीस

तुम हो मेरी सीता रानी
तुम हो मेरी गई जवानी
तुम में प्यार जडे है मेरे
तुम में मेरी लिखी कहानी
तुम्हें देख सुधि होती है यह
बचपन की तुम हो सहिदानी
पास तुम्हारे बैठ घडी भर
होती है गल आखें पानी
आती है अब याद कि मैं भी
तुम सी ही थी बिटियारानी
सोती थी कब बिना सुलाये
पीती थी कब कोरा पानी
थिरक थिरक कर नाचो गाओ
हर लो माँ के मन की ग्लानी
खोया था जो बढकर मैंने
पाया तुमको पाकर रानी
रही न तारों की अब छाया
किस माया में हो बहरानी

तुम हो मेरी सीता रानी
तुम हो मेरी गई जवानी
तुम में प्यार जडे है मेरे
तुम में मेरी लिखी कहानी

●●●





इकतालीस

तुम हो प्यारे राम दुलारे
तुम हो प्यारे कृष्ण मुरारे
हँसी तुम्हारी चन्द्रकला है
नैन तुम्हारे नभ के तारे
बोल अमोल रिसभरे लोचन
मिसरी मीठे आँसू खारे
हृदय तुम्हारा माखन सा मृदु
काम तुम्हारे जग उजियारे
बहनो के हो हार गले के
भैया को प्राणाधिक प्यारे
मैया, की इच्छा से सोते
जगते हो तुम लाल हमारे
तन धन रत्नाभूषण सारे
वार रही मा तुम पर न्यारे
तुम हो प्यारे राम दुलारे
तुम हो प्यारे कृष्ण मुरारे

* * *

बयालीस

साझ सकारे घर के द्वारे
खेला करते नित्य हमारे
मात पिता के लाड-लड़ते
बहिनो के बल बीरन प्यारे
चाद उतर आता है घर मे
सूरज उगता है दर द्वारे
ऊल फूल के हास रास के
गृह दपण ने बिब उतारे
आखो में बस रहे सलोने
उनके रूप अनूप हमारे
खिले अनोखे पुहुप डगर में
पीले हरे नील रतनारे
आठ पहर की लीला लोनी
लाई घर में स्वग तुम्हारे
मात पिता के लाड लड़ते
बहिनों के बल बीरन प्यारे

●●●





तितालीस

तुतले बैन मनोहर बतिया
हिलक उठें सुन मा की छतियाँ
ऐसी बानी बोल लाडले
सुख से बीत जाय दिन रतिया

साझ पड़े हँस हँस कर सो जा
प्रात समय यह हृदय बिलो जा
मथ मथ माखन काढ सलोने
रख जा मन में मधुर सुरतिया
हिलक उठें जननी की छतिया

छनक उठे मधु गात सुरभि से
अन्तर वासक रँजे सुछवि से
मैया मे सब समा जाय सुख
बूद बूद रस बही किरतिया
किलक उठें जननी की छतिया

* * *

चवालीस

मेरी मुनियां पठी माला
न्यारी करू न उर से
जो कोयल सी फिरे कूकती
गाती पचम सुर से
मेरे उर का चन्द्रहार वह
उससे शोभा मेरी
उसके रहते पास न आती
मेरे रैनि अंधेरी
कचन कोया, दीप संजोया
मणि रत्नो की ढेरी
मेरा क्षितिज दीप्त रखने को
उषा किरण वह मेरी
मेरे मन की धूप छाह मे
छम छम रास रचाये
जीवन प्रागण मे वह मेरे
प्रात प्रभाती गाये

●●●





पैंतालीस

माखन का उबटन ले आई
क्षीरसिंधु का पानी
कर लो स्नान सांझ से पहले
मां की रूपारानी
गगन सरोवर तिर तिर आयें
चन्दा औ ताराएं
कहीं तुम्हारे शशि मुख को वे
लजा न बेटी पायें
होड़ तुम्हारी कुमुदनियों से
रहती हैं जो जल में
जलपरियां जिनको नहलाने
आती चल पल पल में
रूठो मत रानी बेटी ओ
गीली करो न आंखें
अम्मा की तो यही साध है
तुम्हें फूल सी राखें

●●●

छयालीस

प्रात प्रभाती सध्या लोरी
गा री मधु ढरका री
फूलो को मृदु थपक सुला री
कलियो को विगसा री
कह दे हसों से उड जायें
कागा रोर मचायें
शयन करें मुंद भौंर कमल में
चकवा मिलन मनायें
सैनो से तारो को बरजे
चदा को समझा रीं
बासी खेल न खेलें, कुमुदों
की झालर लटका री
मैया री ले मान निहोरा
नये दिवस नव रातें
नई वसन्ती दुनिया मे सब
नई नई हो बातें

•••





सैंतालीस

सोने की बदली छाई है
हीरे मोती बरसें
मेरे मन मे लुए चलें
आखें आसू को तरसें
मेरा कुवर कन्हैया मेरा
नन्हा-सा नदलाला
किस मथुरा मे जा बैठा है
कौन कस ने पाला
माखन मिसरी किसे खिलाऊँ
सैनन किसे निहोरू
बाधा-व्यथा दूर करने को
किस पर हा तृण तोरू
मैया का क्यो हृदय दिया जो
भाग बाझ के मेरे
ओ विधना, इस भाल लेख मे
विपम अक क्यों तेरे
काल तीन मुख चार सृष्टि फिर
भी सदोष, बलिहारी
बता और क्या कहे वेदना
डूबी मां दुखियारी

●●●

अड़तालीस

एक घूंट दूध लाल
दादी का निहोरा
एक घूंट दूध लाल
मैया की चिरौरी

एक घूंट दूध बस
एक घूंट दूध और
पी लो अब लाली करो
सोने की कटोरी

खेलने को खड़ी द्वार
बाल सखी राधिका
ओढ़े लाल ओढ़नी
सुछबि तन गोरी

पी लो दूध आर मत
करो मनमोहना
मीठी मिसरी की डली
और एक घोरी

•••





उन्चास

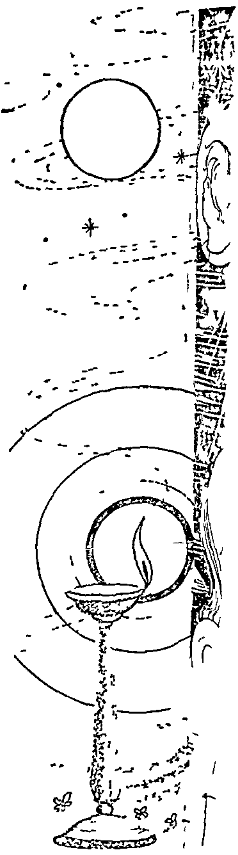
ठुनक ठुनक कर माखन चाखे
रुनुक भुनुक कर नाचे
सैंना बैंना मे प्रवीन दे
मैया को सुख साचे
लोटपोट आँगन मे जब तब
घर भर को विहँसाये
कोप भरे आनन से मोहन
मधु के घट ढरकाये
छिन ऊपर छिन नीचे मैया
को नित नाच नचाये
बाबा से हठ करे गगन के
तारे तोड मगाबे
अटपट बानी बाल बोल वह
सब पर जादू डाले
सॅंवती इष्टदेव को ध्यावे
मा को यह सुख साले
निंदिया लाड लडाये उसको
लोरी थपक सुलाये
पूरब की लाली प्रभात मे
आकर उसे जगाये

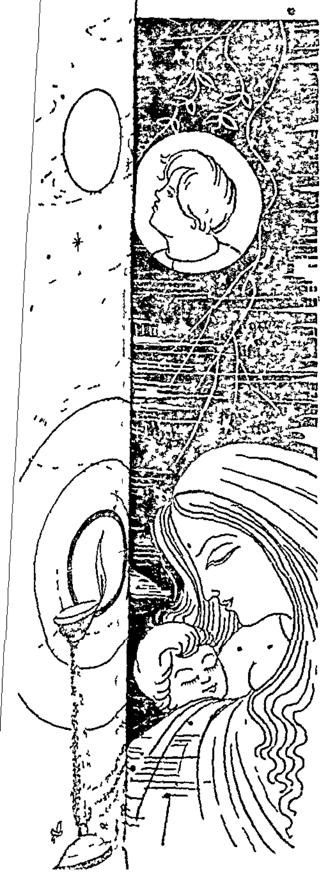
• • •

पचास

मीठी मीठी नींद, सुलाती
मीठी मीठी लोरी
मीठी मीठी थपकी मा की
मधु की भरी कटोरी
मीठी सन्ध्या, मीठी रातें
मीठी मीठी बातें
मीठी मीठी सुख की घड़ियां
मधुरस भरी परातें
मीठा बचपन, मीठा जीवन
मीठा रैनबसेरा
मीठे मीठे सपने लेकर
आया मधुर सवेरा
मीठी मीठी मंजु सुबकियों
से मधु मीठा रोना
बरसाता है नित्य निरन्तर
घर आंगन मे सोना

• • •





इक्यावन

धन्य धन्य माखन मिसरी जो
बिखर गये आगन मे
दूध भात वे धन्य कि जिनको
फिरें लपेटे तन मे
खील बतासे धन्य आज जो
लुटते बगर बगर मे
धन्य भाग मेरा जो मैंने
पाये सब सुख घर में
खेल खिलौनों में जीवन का
मिला सार बिन मागे
लालो की दुनिया में बसकर
मेरे शुभ दिन जागे
कोई रोता, कोई गाता
कोई बीन बजाता
मैं विभोर होती, बचपन क्या
लौट किसी का आता

• • •

बावन

मेरी राजहंसिनी रानी
घर मे फिरती वह मनमानी
कभी गाती कभी थिरकती
कभी दूर मुस्कानी

कभी सलोनी सी आंखों में
भरे घूमती पानी
इतना भोला सा शरीर पर
रोम रोम मे मानी

पूछ किसी ने लिया हुआ क्या
तो फिर नदी बहानी
मेरी सुता सुषमना, छोटी
भी है बडी सयानी

गढ गढ सीख मुझे देती ज्यो
हो वह मेरी नानी
मेरी राजहंसिनी रानी
घर में फिरती है मनमानी

• • •





तिरेपन

तू है बडी सयानी बिटिया
तू है बडी सयानी
दादी की मनमानी कर ले
नानी की मनमानी

साझ पडे तू सो जा रानी
सुन सुन कथा कहानी
सग उषा के उठकर ले तू
ओढ ओढनी धानी

ले तू सद्गुण सीख बडों से
ओ भोली कल्याणी
शीलमूर्ति हो नम्र लता सी
ओ प्रियवदा रानी

कांटों मे हसना तू दुख में
धीरज धरना बेटी
त्याग तपस्या करुणा आसू
से नित रहे लसेटी

• • •

चौपन

दो दिन घर में और खेल ले
ओ शकुंतला मेरी
पीछे किसी भूप की तुमको
होना ही है चेरी

दूब चुगा ले मृगछौनों को
जल दे ले तू क्यारी को
फूलों से तू चोटी गुह ले
मार कछौटा सारी को

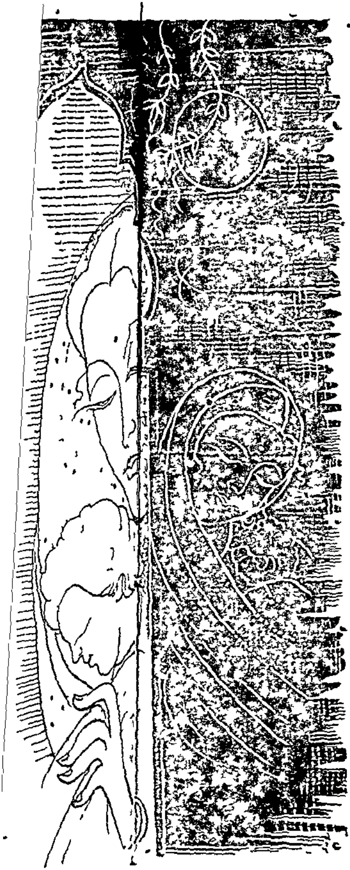
ले ये वल्कल चीर पहन ले
फिर इनको कब पायेगी
पीछे तो रेशम से तेरी
देह लता मुरझायेगी

कहाँ तपोवन होगा बेटी
कहां मालिनी तट होगा
कहां हमारी राधा का वह
सूना वंशीवट होगा

सावित्री सीता के पीछे
पीछे तेरा मग है
तेरे कामों पर न्योछावर
होने को यह जग है

• • •





पचपन

नींद कहे सो जाओ पडकर
चाद न सोने देता
किरणों की पतवारो से वह
नभ में नैया खेता

तारे उसके साथ तैरते
लुकते छिपते खोते
क्या ही अच्छा होता हम भी
साथी उनके होते

स्वप्न सुनहरे आगे आगे
हस रेशमी पीछे
नभगगा के पार दौडते
पुष्प शरों को खींचे

मृगया का आनन्द अनोखा
आता कैसा मग मे
ना वह कोई सोये क्योंकर
अलसाये इस जग में

* * *

छप्पन

चंदा रूठा चन्द्रलोक में
तारे रूठे नभ में
लल्ला रूठा घर में मेरे
जा बैठा वह 'टब' में

कौन निकाले उसको बाहर
देव निहोरे मैया
मौसी हँस हँस सैननि वारे
दादी लेति बलैया

रूठे रूठे उठ आओ सब
चंदा तारे प्यारे
उमंग भरी बहिना कर जोड़े
हा हा करे पुकारे

ताराग्रहण न पड़े दिखाई
चन्द्रग्रहण भय भारे
मान लला का दूर कर रहे
गिर गिर आँसू खारे

●●●





सत्तावन

एक चाद मा नभ में खेले
एक चाद घर तेरे
बता कौन सा सुदर दो में
क्यों तू नैन तरेरे
सच सच कह दे मा तू मन की
तुझे ध्यान है मेरी
या फिर मुझे बतानी होगी
छिपी बात वह तेरी
मुझे देख आसू ढरकाती
उसे देख तू खोती
जाने मन ही मन क्या गुनती
क्यों तू पलक भिगोती
मैं घर का वह नभ का दोनों
चदा हैं अलबेले
यह कहने में कौन बुराई
हार जीत जो झेले

• • •

अट्ठावन

घर परिवार सहज सुन्दर हैं
देश ग्राम अति सुन्दर
सबसे सुन्दर विश्व विमोहन
कहते है मा गुरुवर

इसी लिए प्यारे लगते सब
नारी नर गिरि तरु वन
सागर की लहरो मे भूला
करता मा मेरा मन

सुख दुख की चादर ओढे सब
बाट बाँट कर खायें
कष्ट सहे जो जीवन पथ मे
बिना बुलाये आयें

कितनी शोभा बढ जाये तो
इस विराट आगन की
स्वर्ग मुक्ति की इच्छा हो क्यों
जलन भगे तन मन की

• • •





उनसठ

घास फूस तू नही लाडली
मेरे मन की रानी
मेरी रम्भो चन्द्रकला मैं
तेरे प्रेम दिवानी
साझ प्रात नित यही मनाऊं
सदा फूल सी फूले
सिर आखो पर रखें तुझे तू
रेशम झूलन झूले
तेरे भाग बडे हों बेटी
बडे बोल तू बोले
जो भी दुनिया तुझे सिहाये
तू दुख बधन खोले
व्यथा कथा बन जाय लाडली
से उपकृत जन जन की
सकल अभावो को तू भर दे
बिसरे पीडा मन की

•••



साठ

यह दुनिया सुत तुझे बदलनी
जिसमें सब कुछ झूठा
सारी परिभाषाए झूठी
झूठा तक अनूठा
एक झूठ के लिए जहा सौ
झूठ बोलने होते
विमल सत्य के लिए तरसते
भूखे मानस रोते
गढनी तुझे नई प्रतिमाए
चिननी नई दिवारें
नये समाज भवन की रचना
तेरी बाट निहारें
तेरे ऊपर तात सलोने
भार बड़ा जग जन का
बदल डाल सारा चरित्र तू
दृढता से कन कन का

•••



इकसठ

मा ने एक सदेशा भेजा
घर ग्रायें दोउ भाई
पलटि कहायो थोडी बिरिया
ग्रौर खेल लें माई
उबटन स्नान नित्य की बातें
भाती हमें न मैया
ग्रोंमन जूठन किसे सुहावे
जब हो उगी जुन्हैया
हरसिंगार हो खिला, जुही हो
सौरभ छटा लुटाती
लहर स्वरों मे धीमे धीमे
जमुना हो कुछ गाती
खान पान का किसे ध्यान हो
ग्रम्मा तुम्ही बताग्रो
ग्राकर स्वय देख लो ग्राखों
से पीछे ग्रनखाग्रो

• • •



वामठ

पहुँचे आँगन फूटे प्रभात की स्वर्ण किरण
सौभाग्य अतिथि आ गा
घर में अनायास सुरभि ए उतरा
अविरत नहूँ पग भ्रमित चरण
डगमग डग
खटपट बोल, हँसनि मधुपाल
मधुर विनोद भरा

अरविन्द, पगुरिया खोल
सुछवि अनमोल
लता द्रुम डोल किलोल करा
महके जीवन बचपन मधुवन
किसलय कुसुम बहे मंद पवन
अभिराम ध्वनि थिरकनि विहरनि
चलदल सा का मन हेरि सुमन
पहुँचे आँगन, फूटे प्रभात की मंजु किरण

• • •